http://www.jainkosh.org

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

समस्थानसूत्रसार्थम्

तृतीय स्कंध

लेखक :—
अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक
मनोहरजी वर्णी 'सहजानन्द' महाराज

प्रकाशक:—
खेमचन्द जैन सर्राफ
मन्त्री : श्री सहजानन्द शास्त्रमाला,
१८५ ए, रणजीतपुरी,
सदर मेरठ

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सहजानंद शास्त्रमाला

समस्थान-सूत्र सार्थम

भाग-3

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

अथ अष्टमोऽध्यायः

सूत्र—ज्ञानदर्शनसम्यक्त्वशक्त्यव्याबाधावगाहनासूक्ष्मत्वागुरुलघवः सिद्धगुणाः ॥१॥

अर्थ—कर्ममल से रहित, सर्वज्ञ, परमपद में स्थित सिद्ध भगवान् आठ गुणों से युक्त हुआ करते हैं। वे आठ गुण ये हैं-- (१) ज्ञानगुण (२) दर्शनगुण (३) सम्यक्त्व गुण (४) शक्तिगुण (५) अव्याबाधगुण (६) अवगाहना गुण (७) सूक्ष्मत्वगुण (८) अगरुलगुघुण।

(१) ज्ञानगुण—सर्व पदार्थ और उनकी त्रिकालवर्ती पर्यायोंके जाननेवाले ज्ञानका पाया जाना।

(२) दर्शनगुण— सत्ता सामान्यके अवभासन कराने वाले गुणका होना।

(३) शक्तिगुण—अंतरायकर्मके क्षयसे उत्पन्न होने वाला यह गुण हुआ करता है।

(४) सम्यक्त्वगुण—मोहनीयकर्मके पूरे क्षयसे उत्पन्न होनेवाला यह आत्मीकगुण अरहन्तों और सिद्धों में पाया जाता है।

(५) अव्याबाधगुण—वेदनीयकर्म के पूर्ण अभाव से प्रकट होनेवाला यह गुणहुआ करता है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) अवगाहनागुण—आयुकर्म के पूर्णक्षय से प्रगट होने वाला आत्मीकगुण यह है।

(७) सूक्ष्मत्वगुण— नामकर्मके क्षय या अभावसे प्रगट होनेवाला गुण यह हुआ करता है।

(८) अगुरुलघु—गोत्रकर्मके अभावसे इस गुण की अभिव्यक्ति हुआ करती है।

सूत्र—ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः कर्माणि।

अर्थ—आत्मा के गुणोंके घातकरने वाले आठ कर्म हुआकरते हैं। वे आठ इस प्रकार हैं—

(१) ज्ञानावरणीकर्म—आत्मा के ज्ञानगुणका जिससे आवरण हो। वह ढकजावे।

(२) दर्शनावरणीकर्म—आत्माके दर्शनगुणका जिससे आवरण हो। वह प्रतिबंधितहोजाय।

(३) वेदनीयकर्म—जिससे साता (सुख) असाता (दुःख) का अनुभव न हो।

(४) मोहनीयकर्म—जो आत्मामें विद्यमान सम्यक्त्व गुण को विघात करने वाले हो।

(५) आयुकर्म—जैसे काठकीडोढ़ी में कैदी बंधा रहताहै। औरनिश्चित समयसे पहिले नही छूटता उसी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

प्रकार आत्मा जिससे निश्चित सीमा लियेहुये कालतक देहविशेषमें रुकारहे।

(६) नामकर्म--जिससे आत्मा कीड़े, मकोड़े, हाथी, घोड़े, राजा रंक आदि आकृति विशेषोपयोगी शरीर परमाणुओंको प्राप्तकरें।

(७) गोत्रकर्म— लोकमें जिससे ऊँचनीच का व्यवहार हो।

(८) अन्तरायकर्म--इन्द्रिय विषयभोगोंकी प्राप्तिमें जिससे बाधा हो ऐसे विघ्न या अन्तराय पांच तरह के होते हैं।

सूत्र--तद्बंधा कर्मबंधाः ॥३॥

अर्थ--जब इन उपरिलिखित आठतरह के कर्मपरिमाणुओंका पुँज आत्मप्रदेशोंसे मिलकर बिलकुल एकमेक हो जाताहै तब वह बंधदशा को प्राप्तकरलेता है। ऐसा कर्मबंध आठकर्मोंके सम्बन्धसे आठतरह का होजाता है। उन्हें इस तरह पुकारा जा सकताहै।

(१) ज्ञानावरणीकर्मबंध (२) दर्शनावरणीकर्मबंध (३) वेदनीयकर्मबंध। (४) मोहनीय कर्मबंध, (५) आयुकर्मबंध, (६) नामकर्मबंध, (७) गोत्रकर्मबंध, (८) अन्तरायकर्मबंध।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सूत्र—मद्यमांसमधूम्बरवटपिप्पलकाष्ठोम्बरपाकीरजाति त्यागाः श्रावकस्यमूलगुणाः ॥४॥

अर्थ—मानवको अपने आपको श्रावककोटिमें लाने के लिये आठ मूलगुणोंका धारण करना चाहिये। इनको अपनाये बिना वह श्रावक नहीं कहला सकता है। वे आठमूलगुण इस प्रकार हैं—

(१) मद्यत्याग, (२) मांसत्याग, (३) मधुत्याग, (४) उमर (ऊमर) त्याग, (५) वटत्याग (६) पिप्पलत्याग, (७) कोष्टोम्वर (कठूमर) त्याग, (८) पाकीरजाति त्याग।

(१) मद्यत्याग-शराब आदि त्रसहिंसाजन्य नशीली वस्तुका त्याग करना, उसका सेवनन करना।

(२) मांस त्याग—जंगली जीव के बधसे पैदा होने वाले मांस जैसी घिनावनी, अपवित्र, कृमिकुलयुक्त वस्तु का सेवन न करना, उसका त्याग करना।

(३) मधुत्याग—शहद, जो एक तरह से मधुमक्खियों का वमनरूप, घिनावनापदार्थ होता है तथा जिसकी उत्पत्तिमें अनेकों जीवोंकी हिंसा होती है, उसका त्यागकर देना।

(४) उम्बरफलत्याग— त्रसजीवोंसे युक्त ऊमरके फलोंका सेवन नहीं करना।

(५) वटफलत्याग— बटवृक्षमें लगनेवाले लाल रंग के फलोंका सेवन नहीं करना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

[५] रात्रिभुक्ति त्याग—रात्रीमें भोजन नहीं करना जिससे रात्रि में पैदा होजाने वाले जीवोका घात न हो।

[६] जलगालन—छानकर जलको उपयोग में लाना, इसमें भी जलकाय के जीवके रक्षा करने की दृष्टि है।

[७] जीवदया— समस्त संसारके विविध प्राणीयोंके दयाभाव रखना।

[८] पंचगुरु भक्ति—पंचपरमेष्ठीके प्रति भक्तिभाव रखना।

सूत्र—मद्यमांसमधुत्यागाहिंसासत्याचौर्यब्रह्मचर्याणुव्रत परिग्रहपरिमाणव्रताश्च ॥६॥

अर्थ—श्रावकोंके आठमूल गुण इस प्रकारसे भी बन सकते हैं। संक्षेपमें तीनप्रकार के मकारका त्याग और पांच अणुव्रतों का धारणकर लेनेरूप आठ मूलगुण होते हैं। उसके पृथक् पृथक् नाम इस प्रकार हैं—

[१] मद्यत्याग, [२] मांस त्याग, [३] मधुत्याग, [४] अहिंसाणुव्रत, [५] सत्याणुव्रत, [६] अचौर्याणुव्रत, [७] ब्रह्मचर्याणुव्रत, [८] परिग्रहपरिमाण व्रत।

(१) मद्यत्याग—शराब आदि नशीली वस्तुओंका त्याग करना।

(२) मांसत्याग—मांस सेवनका त्याग करना।

Version 1

(६) पिप्पलफलत्याग— पीपल वृक्षके फलोंका सेवन न करना।

(७) काष्ठोम्बर फल त्याग—काठूमर नामके फलों का सेवन न करना।

(८) पाकीरजातिफलत्याग—पाकर फलोंका सेवन न करना तथा ऐसे ही अन्य त्रसजीव समन्वित फलों के उपयोग से विरत होना।

सूत्र—मद्यमांसमधूदम्बररात्रीभुक्तित्यागजलगालनजीव दयापंचगुरुभक्त्योवा ॥५॥

अर्थ—श्रावकोंकेशिष्ट पुरुषोंके, योग्यआठ मूलगुण इस तरहके भी होसकते हैं—

[१] मद्यत्याग, [२] मांसत्याग, [३] मधुत्याग, [४] उदम्बरफलत्याग, [५] रात्रीभुक्तत्याग, [६] जलगालन [७] जीवदया, [८] पंचगुरुभक्ति।

[१] मद्यत्याग—शराब आदि नशीले पदार्थों का त्याग करना।

[२] मांसत्याग—मांस भक्षण नहीं करना।

[३] मधुत्याग—शहद आदि कीड़ोंसे युक्त वस्तुका सेवन त्याग।

[४] उदम्बरफलत्याग— पांच उदम्बर को सेवन नहीं करना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(३) मधुत्याग—शहदादि कृमियुक्त घिनावनी वस्तु का त्याग करना।

(४) अहिंसाणुव्रत—एकदेश रूपसे अहिंसाव्रत का पालन करना या स्थूलहिंसाका त्याग करदेना।

(५) सत्याणुव्रत— एकदेश रूपसे सत्यव्रत पालन करना या स्थूल असत्य (झूंठ) का त्याग कर देना।

(६) अचौर्याणुव्रत—एकदेश रूपसे अचौर्यव्रत का पालनकरना या स्थूलचोरी करने कात्याग कर देना।

(७) ब्रह्मचर्याणुव्रत— एकदेश रूप से ब्रह्मचर्य को धारण करना या स्थूलअब्रम्ह (व्यभिचार) का त्याग कर देना।

(८) परिग्रहपरिमाणुव्रत—एकदेश रूपसे दसप्रकारके बाह्यपरिग्रहों का परिमाण करलेना। इन्द्रिय विषयभोगों प्रति लालसा भावका कम करना।

सूत्र—स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुः वचनकायबलायुरुच्छ्वासाः पर्याप्तचतुरिन्द्रियप्राणाः ॥७॥

अर्थ—पर्याप्त चौइन्द्रिय जीव के व्यवहार नयकी अपेक्षा आठप्राण पाये जाते हैं। इनके नाम इसप्रकार हैं—

(१) स्पर्श-इन्द्रिय, (२) रसना-इन्द्रिय, (३) घ्राण-इन्द्रिय, (४) चक्षुःइन्द्रिय, (५) वचनबल, (६) कायबल (७) आयु, (८) श्वासोच्छ्वास।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सूत्र— कुमतिश्रुतावधिसुमतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानि ज्ञानमार्गणाः ॥८॥

अर्थ—ज्ञानमार्गणा के आठ खाते हैं। अर्थात् जितने भी ज्ञानविश्व में पायेजाते हैं उनको आठ विभागोंमें बांटा जासकता है। वे आठ विभाग ज्ञानमार्गण के अंतर्गत इस के हैं—

[१] कुमतिज्ञान, [२] कुश्रुतज्ञान, [३] कुअवधिज्ञान, [४] सुमतिज्ञान, [५] सुश्रुतज्ञान, [६] सुअवधिज्ञान, [७] मतःपर्ययज्ञान [८] केवलज्ञान।

१—कुमतिज्ञानः— खोटा जो मतिज्ञान।

२—कुश्रुतज्ञानः— खोटा जो श्रुतज्ञान।

३—कुअवधिज्ञानः— खोटा जो अवधिज्ञान।

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, और अवधिज्ञान का लक्षण आगे लिखा जारहा है। उससे विपरितका नाम कु या खोटाहै।

४—सुमतिज्ञान या मतिज्ञान—इन्द्रिय और मनकी सहायतासे होनेवाला वस्तु या पदार्थोंका मनकी सहायतासे जो विशेषपरिज्ञान प्राप्तहोता है। यह परोक्षज्ञान है।

५—सुश्रुतज्ञान या श्रुतज्ञान—मतिज्ञान से जाने हुये पदार्थों का मनकी सहायता से जो विशेष परिज्ञान प्राप्त किया जाता है वह श्रुतज्ञान है। यह भी परोक्षज्ञान है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

६—सुअवधिज्ञान या अवधिज्ञान—अवधिज्ञान वरणके क्षयोपशमके निमित्तसे आत्मामात्रकी सहायता लेते हुये जो रूपीपदार्थोंका ज्ञान होता है वह अवधि-ज्ञान है, जो एकदेश प्रत्यक्ष होता है।

७—मनःपर्ययज्ञान—मनःपर्ययज्ञानावरणके क्षयोप-शमके निमित्तसे आत्ममात्र की सहायता लेतेहुये दूसरेके मनमें पाये जाने वाले विचारोंका भी परिज्ञान जिससे हो उसे मनःपर्ययज्ञान कहते हैं। यह एक देशप्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

८—केवलज्ञान—ज्ञानावरणी कर्मके सम्पूर्ण क्षयसे उत्पन्न होनेवाला त्रिकाल एवं त्रिलोकवर्ती पदार्थोंकी साक्षात्कारीज्ञान केवलज्ञान कहलाता है। सकलप्रत्यक्षज्ञान यह होता है।

सूत्र—सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्चदिग्विदिक्स्था लौकान्तिकाः ॥६॥

अर्थ— ब्रह्मलोक नामक पाचवें स्वर्गके अंतछोर में ४ दिशाओं और ४ विदिशाओंमें रहनेवाले आठ लौकान्तिक देव रहते हैं। ये सिर्फ तीर्थकरोंके तपकल्या-णकके समय संवेग और वैराग्य परिणामों में दृढ़ता लाने वाले वचनोंको बोल भगवानकी स्तुति और प्रशंसा करते हैं। आठ देवों के आठ नाम इस प्रकार हैं—

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

१- सारस्वत, २-आदित्य, ३-वाह्नि, ४-अरुण, ५-गर्दतोय, ६-तुषित, ७-अव्याबाध, ८-अरिष्ट ।

सूत्र— किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयत्तराक्षसभूत पिशाचा व्यंतरा ॥१०॥

अर्थ १-किन्नरव्यंतर, २-किम्पुरुषव्यंतर, ३-महोरगव्यंतर, ४- गर्न्धर्वव्यंतर, ५-यक्षव्यंतर, ६- राक्षस व्यंतर, ७- भूतव्यंतर, ८- पिशाचव्यंतर । इसतरह व्यंतर देवोंके आठ भेद होते हैं ।

सूत्र— रत्नशर्कराबालुकापंकधूमतमोमहातमःप्रभषत्प्रा-वभाराः पृथ्व्यः ॥११॥

अर्थ—आठ पृथवियां होती हैं । उसके नाम इस प्रकार हैं:—

(१) रत्नप्रभा—यह प्रथम नरक भूमि का नाम है ।

(२) शर्कराप्रभा दूसरी नरकभूमि इस नामसे पुकारी जाती है ।

(३) बालुकाप्रभा—तीसरी नरकभूमिकी यह संज्ञा है।

(४) पंकप्रभा—यह सम्बोधन चौथी नरकभूमिको प्राप्त है ।

(५) धूमप्रभा— यह पांचवें नरककी भूमि है ।

(६) तमःप्रभा—यह छटवों नरककी भूमि का नाम है ।

(७) महातमःप्रभा—सातवों नरकभूमिकी यह संज्ञा है ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(८) ईषत्प्राग्भार— यह सिद्धभूमि का नाम है।

सूत्र— ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपणप्रतिष्ठापनासमिति मनोवचनकायागुप्तयः प्रवचनमातृकाः ॥१२॥

अर्थ—प्रवचनमातृक आठ होती हैं। उनकेनाम इस प्रकार हैं—

१–ईर्यासमिति, २–भाषासमिति, ३–एषणासमिति, ४–आदाननिक्षेपण समिति, ५–प्रतिष्ठापना समिति, ये पांच समितियां हैं। ६– मनोगुप्ति, ७– वचनगुप्ति, ८–कायगुप्ति ये तीनगुप्तियां हैं। दोनोंके मिला देनेसे आठ प्रवचनमातृक बनजाती हैं।

(१) ईर्यासमिति— गमन करतेहुये समीचीनतापूर्वक चार हाथ जमीन शोधकर प्रवृत्ति करना।

(२) भाषासमिति— सावधानीपूर्वक हितमित प्रिय-वचन बोलना।

(३) ऐषणासमिति— सावधानीपूर्वक शोधते हुये भोजन ग्रहणकरना।

(४) आदाननिक्षेपण समिति—देखभालकर सावधानी सहितसंयम और स्वाध्यायके साधनोंका उठाना धरना।

(५) प्रतिष्ठापना समिति—निर्जन्तु स्थानको देखकर उनमें टट्टी, पेशाब, थूक, खकार आदिको करना।

(६) मनोगुप्ति— मनकी प्रवृत्ति असंयत न होजाय

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अतः उसपर नियंत्रण रखना ।

(७) वचनगुप्ति— व्यर्थही बकवासमें न लगते हुये वाचनपर नियन्त्रण रखना ।

(८) कायगुप्ति—शारीरिक चेष्टाओं पर नियंत्रण रखना ।

सूत्र— निःशंकितनिःकांक्षितनिर्विचिकित्सतामूढ़दृष्टयुपगूहनस्थितिकरणवात्सल्यप्रभावनाःसम्यग्दर्शनाङ्गाः ॥१३॥

अर्थ—सम्यग्दर्शनके आठ अंग होते हैं। नाम उनके ये हैं—

१–निःशंकितअंग, २–निःकांक्षितअंग, ३–निर्विचिकित्सताअंग, ४–अमूढ़दृष्टिअंग, ५–उपगूहनअंग, ६–स्थितिकरणअङ्ग, ७–वात्सल्यअङ्ग, ८–प्रभावनाअङ्ग ।

(१) निःशंकितअङ्ग—जिनेन्द्र भगवान्‌ने जीवादिक सात तत्वोंका जैसा विवेचन किया है वह वैसाही है अन्यथा नहीं है ऐसी शंसयरहितपूर्ण श्रद्धाका होना ।

(२) निःकांक्षितअंग—संसारके विषयभोगोंकी वाञ्छा नहीं करना ।

(३) निर्विचिकित्सिताअंग— पूर्णसंयमके साधक ही नहीं अपितु धारक मुनिके मलिन शरीरको देखकर घृणा नहीं करना ।

(४) अमूढ़दृष्टिअंग— भली तरहसे जांच वगैरहकर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

शास्त्रदृष्टिका आलम्बनकर प्रवृत्ति करना।

(५) उपगूहनअंग—जिससे धर्म या धर्मात्माकी निन्दा होती हो ऐसी बातोंको जानते हुये भी प्रगट नहीं करना प्रत्युत गुप्त रूपसे सुधारकर देना।

(६) स्थितीकरणअंग—दर्शन या चारित्रसे जिसका चित्त चलायमान होरहा हो उसे उसमें पुनः स्थापनाकर दृढ़ करदेना।

(७) वात्सल्यअंग—सद्धर्मके प्रतिपालकोंसे वैसा प्रेम करना जैसा गाय अपने बछड़ेसे प्रेम करती है।

(८) प्रभावनाअंग—ऐसे कार्योंका पालन करना जिससे सद्धर्मका प्रकाश फैलजाय और अज्ञानांधकारका नाश हो जाय।

सूत्र—ज्ञानरूपकुलजातिबलर्द्धितपोवपुषांमदाः ॥१४॥

अर्थ—मद घमण्ड करनेको कहते हैं। उसके निम्न-लिखित भेद हैं:—

१–ज्ञानमद, २–रूपमद, ३–कुलमद, ४–जातिमद, ५–बलमद, ६–ऋद्धिमद, ७–तपमद, ८–वपुःमद।

(१) ज्ञानमद—अपनेमें पायेजानेवाले ज्ञानका घमंड करना।

(२) रूपमद—अपने सुन्दर रूपका घमंड करना।

(३) कुलमद—अपने बापदादाके उच्चकुल व पद का

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

घमण्ड करना।

(४) जातिमद्—अपने मामाके पक्षका आश्रय ले मद करना।

(५) बलमद्— अपनेमें पायेजानेवाले बलका मद करना।

(६) ऋद्धिमद—अपनेमें पाई जाने वाली ऋद्धिका मद करना।

(७) तपमद्—अपने द्वारा तपी गई तपस्याका मद करना।

(८) वपुःमद्—अपने शरीरका मद करना।

सूत्र—शंकाकांक्षाविचिकित्सामूढ़दृष्ट्यनुपगूहनास्थिति-करणावात्सल्याप्रभावनाः सम्यग्दर्शनदोषाः ॥१५॥

अर्थ– सम्यग्दर्शनको मलिन करदेनेवाले, आठ गुणों से विपरीत, आठ दोष हुआ करते हैं। उन आठ दोषोंकी नामावली इस प्रकार हैः—

(१) शंका दोष—जिनेन्द्रभगवान् द्वारा कहा हुआ वस्तु स्वरूप वस्तुतः वैसा है या नही इस प्रकार जिन-वचमें शंकासंशय या संदेहका होना।

(२) काँक्षादोष—धारण कियेगये व्रत नियमादिसे सांसारिक विषयभोगोंकी अभिलाषा करना।

(३) विचिकित्सादोष—सकलसंयमादि के धारकमुनि

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

आदिको देख 'नंगा है' 'गन्दा है' आदि ग्लानि और घृणाके भाव करना।

(४) मूढ़दृष्टिदोष—बिना किसी तरहकी परीक्षा किये जिसे चाहे उसको मान्य और पूज्य मान लेना।

(५) अनुपगूहनदोष— धर्म और धर्मात्माओंका अपमान करने वाली बातोंका सामने लाना उन्हें छिपाना नहीं।

(६) अस्थितिकरणदोष—धर्म और चलायमान चित्त वालेको और ज्यादा धर्माचरणके त्यागनेके लिये उकसाना।

(७) अप्रभावनादोष—ऐसे काम करना जिससे सद्धर्म का प्रकाश फैलने के बजाय संकुचित होजाय।

(८) अवात्सल्यदोष—धर्मात्मापुरुषों से प्रेम करनेके बजाय उनसे द्वेष या वैरभाव रखना।

सूत्र—कुमतिश्रुतावधिसुमतिश्रुतावधि मनःपर्ययकेवलानिज्ञानानि ॥१६॥

अर्थ—ज्ञान आठ विकल्पवाला होता है उसके आठ विकल्प या भेद इस प्रकारसे हैं:—

१– कुमतिज्ञान, २– कुश्रुतज्ञान, ३– कुअवधिज्ञान, ४– सुमतिज्ञान, ५– सुश्रुतज्ञान, ६– सुअवधिज्ञान, ७–मनःपर्ययज्ञान, ८–केवलज्ञान।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१) कुमतिज्ञान— कुमतिज्ञानावरणके उदयसे जो अज्ञान रूप या खोटे मतिज्ञान रूपसे जानना होता है उसका नाम कुमतिज्ञान है।

(२) कुश्रुतज्ञान—खोटा जो श्रुतज्ञान। इसके होने में कुश्रुतज्ञानावरण कर्म के उदय की अपेक्षा होती है।

(३) कुअवधिज्ञान— खोटे अवधिज्ञान को कुअवधिज्ञान कहते हैं। इसके होनेमें कुअवधिज्ञानावरण निमत्त हुआ करता है। नारकियोंका ज्ञान इसी कोटिमें गर्भित होता है।

(४) मतिज्ञान—इन्द्रिय और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान मतिज्ञानावरण के क्षयोपशम की अपेक्षा होती है।

(५) श्रुतज्ञान—श्रुतज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमसे मात्र मन निमित्तक ज्ञानका होना।

(६) अवधिज्ञान—अवधिज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशम से होनेवाला आत्मनिमित्तकज्ञानकाहोना।

(७) मनःपर्ययज्ञान— मनःपर्ययज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशम से होनेवाला आत्मनिमित्तकज्ञानकाहोना।

(८) केवलज्ञान—ज्ञानावरणी कर्मके बिल्कुल क्षयसे उत्पन्न होनेवालाज्ञान केवलज्ञान कहलाता। यह त्रिलोकवर्ती पदार्थोंको एवं उनकी त्रिकालवर्ती पर्यायों को युगपत जाननेकी सामर्थ्य रखता है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

सूत्र--शीतोष्णस्निग्धरूक्षलघुगुरूमृदुकठोराःस्पर्शाः । ६ ॥

अर्थ—स्पर्शनइन्द्रियका विषयभूत स्पर्श आठ प्रकार का होता है । उनके नाम निम्नलिखित हैं:—

१-शीतस्पर्श, २-उष्णस्पर्श, ३-स्निग्धस्पर्श, ४-रूक्ष स्पर्श, ५-लघुस्पर्श, ६-गुरुस्पर्श, ८-कठोरस्पर्श ।

[१] शीतस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो ठंडा प्रतीत हो ।

[२] उष्णस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो गरम प्रतीत हो ।

[३] स्निग्धस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो चिकना प्रतीत हो ।

[४] रूक्षस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो रूखा प्रतीत हो ।

[५] लघुस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो हलका प्रतीत हो ।

[६] गुरूस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो भारी प्रतीत हो ।

[७] मृदुस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो कोमल प्रतीत हो ।

[८] कठोरस्पर्श—ऐसा स्पर्श जो कठोर प्रतीत हो ।

सूत्र— आचाराधारव्यवहारप्रकारायापायदिगुत्पीड सुखावहापरिश्राविन आचार्यगुणाः ॥१८॥

अर्थ—दीक्षादण्ड आदि देनेमें समर्थ आचार्योंके आठ गुण होते हैं । नाम उनके इसप्रकार हैं:—

१-आचारगुण, २-आधारगुण, ३-व्यवहारगुण ४-प्रकर्तागुण, ५-अपायोपायविदर्शीगुण, ६-अवपीड़क गुण ७-सुखावह निर्यापकगुण, ८-अपरिश्राविगुण ।

(१) आचारगुण जो आचार्यस्वयं निर्दोष पंचाचार

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

आचरेपाले और अन्यमुनिनसे भी आचारण करावने में उद्यमी हो।

(२) आधारगुण—चार अनुयोगोंके ज्ञानका, प्रमाण, नयका युक्तियोंके ज्ञानका जिसके प्रबल आधार होय।

(३) व्यवहारगुण—महाधैर्यवान, बुद्धिमान, और व्यवहार प्रायश्चित सूत्रोंका ज्ञाता होना. लोकव्यवहार ज्ञाता।

(४) प्रकर्तागुण—सकल संघकी वैय्यावृत्ति में सावधान डिगतेको स्थिर करनेमें सावधान होना।

(५) अपायोपायविदर्शी— अन्यमुनियोंमें प्रमाद या रोग वश रत्नत्रयकी घटती या नाश देख रत्नत्रयकी रक्षा का उपाय बताना।

(६) अवपीड़कगुण—लज्जा भय या गौरवकर कोई मुनि शुद्धआलोचना नहींकरे तो समझाकर या अपने तप का तेज दिखाकर शुद्ध आलोचना करना।

(७) सुखावहनिर्यापकगुण—शिष्योंको अनेक विघ्नों से बचाय संसारसमुद्रसे पार लगादेना मृत्युपर्यन्त धर्ममें सावधान करना।

(८) अपरिश्राविगुण—शिष्यों के अपराध सुन कभी भी दूसरोंको नहीं प्रकटकरना जैसे तपा लोहेका गोला पानी पीजाय तैसे शिष्योंकी आलोचना सुन मनमेंही रखना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

सूत्र -- अशोकतरूसिंहासनछत्रभामंडलदिव्यध्वनिपुष्प वृष्टिचमरदुंदुभयः प्रातिहार्याः— ॥१६॥

अर्थ—भगवान जिनेन्द्र के सिद्धके नही आठ प्रतिहार्य पायेजाते हैं। उनकेनाम इस प्रकार हैं—

(१) अशोकतरूप्रातिहार्य, (२) सिंहासन प्रातिहार्य, (३) छत्रप्रातिहार्य, (४) भामंडलप्रातिहार्य, (५) दिव्यध्वनि प्रातिहार्य, (६) पुष्पवृष्टिप्रातिहार्य, (७) चमरप्रातिहार्य, (८) दुंदुभिप्रातिहार्य। ये आठप्रातिहार्य समवशरण में विराजमान भगवानजिनेन्द्रकी बाह्यविभूतियां होती हैं।

सूत्र — मस्तकबाहुद्वयजानुद्वयनितम्बपृष्ठोदराः कायंगाः ॥२०॥

अर्थ—मानवशरीरके आठ अंग होते हैं। वे इसप्रकार हैं:—

[१] मस्तक-अंग, [२–३] दो बाहुयें या भुजायें, [४–५] जानु [घुटने] युगल, [६] नितम्ब, [७] पृष्ठ [पीठ] [८] उदर [पेट]।

सूत्र— जलचंदनाक्षतपुष्पनैवेद्यदीपधूपफलानि पूजाष्ट द्रव्याणि ॥२१॥

अर्थ—आठ द्रव्योंसे पूजाकी जाती है। उनद्रव्योंके नाम ये हैं:—

१—जलद्रव्य, २— चंदनद्रव्य, ३— अक्षतद्रव्य,

Version 1

४—पुष्पद्रव्य, ५—नैवेद्यद्रव्य, ६—दीपद्रव्य, ७—धूप द्रव्य, ८—फलद्रव्य ।

सूत्र—प्रशमसंवेगानुकम्पास्तिक्यनिर्वेदनिंदागर्हावात्सल्यानि सम्यग्दृष्टिबाह्यगुणाः ॥२२॥

अर्थ—समीचीनदृष्टिसम्पन्न जो सम्यग्दृष्टि हैं उनके बाह्यमें दिखाई देनेवाले आठ गुण हुआ करते हैं। उन आठ गुणों की नामावली इसप्रकार है।

१-प्रशमगुण, २-संवेगगुण, ३-अनुकम्पागुण, ४-आस्तिक्यगुण, ५-निर्वेदगुण, ६-निंदागुण, ७-गर्हागुण, ८-वात्सल्यगुण ।

[१] प्रशमगुण— रागद्वेषके अवसर आनेपर भी लोभ क्षोभ न करके समताभाव धरने को कहते हैं।

[२] संवेगगुण—धर्म और आचारणके धारणपालन के प्रति सोत्साह प्रकृतिका होना ।

(३) अनुकम्पागुण—स्वभावसे प्राणी मात्रपर दया होना, अपने-पर का भेद न करके सबपर ऐसी दया आवे कि दुख दूर करदे ।

(४) आस्तिक्य गुण—आप्त, शास्त्र, व्रत, तत्त्वोंमें श्रद्धा होना, उनकी उपासना भावना रहना।

(५) निर्वेद गुण—संसारके दुःखोंके कारण मिथ्यात्व और पापोंसे डरना, बचना ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) निन्दा गुण---मुझे जैसी प्रवृत्ति रखनी चाहिये वैसी अभी नहीं करपाताहूँ ऐसी आत्म निन्दा मनमें कहना।

(७) गर्हा गुण —अपने आत्म कल्याणके प्रयत्नकी कमी पर रंज करके गुरूसे कहना—फिर आत्मकल्याणमें सावधानहोना।

(८) वात्सल्य गुण—निःस्वार्थ सेवाकरना, "भलाई कर कुऐ में डाल" कभीभी ऐसा न कहना मैंने तुम्हारा भला किया, साधर्मीसे विशेष प्रेम राखना।

सूत्र— उपशमसम्यक्त्वसूक्ष्मसाम्परायाहारकाहारक वैक्रयिकमिश्रकाययोगसासादनसम्यक्त्वमिश्र लब्ध्यपर्याप्तमनुष्या—अंतर्मार्गणाः ॥२३॥

अर्थ—अंतर्मार्गणा आठ होती हैं, नाम उनके इस प्रकार से हैः—

अंतर्मार्गणाओंसे ऐसी मार्गणाओं का प्रयोजन है जो संसारी जीवोंमें कुछ समय तक किसीभी जीवमें नहीं पाई जाती है।

(१) उपशमसम्यक्त्व— अंतर्मार्गणा। (२) सूक्ष्म साम्पराय—अंतर्मार्गणा। (३) आहारक—अंतर्मार्गणा। (४) आहारक मिश्र अंतर्मार्गणा। (५) वैक्रयिक मिश्रकाय योग—अंतर्मार्गणा। (६) सासादन सम्यक्त्व—अंतर्मार्गणा (७) मिश्र सम्यक्त्व—अंतर्मार्गणा। (८) लब्ध्यपर्याप्त-

Version 1

मनुष्य—अंतर्मार्गणा ।

(१) उपशमसम्यक्त्व—अंतर्मार्गणाः—उपशमसम्यक्त्व का उत्कृष्ट विरह काल सातदिन तथा जघन्य एक समय है ।

(२) सूक्ष्मसाम्पराय—अंतर्मार्गणाः—सूक्ष्मसाम्पराय-संयमका उत्कृष्ट विरह काल छह माह और जघन्य एक समय है ।

(३) आहारक—अंतर्मार्गणा—आहारक काय योग का उत्कृष्ट विरह काल वर्ष पृथक्त्व और जघन्य एक समय है ।

(४) आहारक मिश्र—अंतर्मार्गणाः—आहारक मिश्र काय योगका उत्कृष्ट विरहकाल वर्ष पृथक्त्व और जघन्य एक समय है ।

(५) वैक्रियिकमिश्रकाययोग-अंतर्मार्गणा—वैक्रयिक मिश्र काय योग का उत्कृष्ट विरह काल बारह मुहूर्त्त और जघन्य एक समय है ।

(६) सासादन सम्यक्त्व अंतर्मार्गणाः—सासादन सम्यक्त्वका उत्कृष्ट विरह काल पल्यका असंख्यातवां भाग और जघन्य एक समय है ।

(७) मिश्र सम्यक्त्व—अंतर्मार्गणाः—इसका उत्कृष्ट विरह काल पल्यका असंख्यातवां भाग और जघन्य एक

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

समय है।

(८) लब्ध्यपर्याप्तमनुष्य- अंतर्मार्गणा— इसका उत्कृष्ट विरह काल पल्य का असंख्यातवां भाग और जघन्य एक समय है।

सूत्र—आमंत्रणाज्ञापनयाचनापृच्छनप्रज्ञापनप्रत्याख्यान संशयेच्छानुलोमान्यनुभयवचनानि।

अर्थ—अनुभयवचन आठ तरह के होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) आमंत्रण- अनुभयवचन। (२) आज्ञापन—अनुभयवचन। (३) याचना अनुभय वचन। (४) पृच्छना-- अनुभय वचन। (५) प्रज्ञापन—अनुभय वचन (६) प्रत्याख्यान—अनुभयवचन। (७) संशयच्छा - अनुभय वचन। (८) अनुलोम—अनुभय वचन।

(१) आमंत्रण—अनुभय वचनः—यहां आओ इस तरह के बुलाने वाले वचन; कहना।

(२) आज्ञापन—अनुभयवचनः—यह काम करो ऐसी आज्ञा देना।

(३) याचना—अनुभय वचनः—यह चीज मुझे दो ऐसी प्रार्थना करना।

(४) पृच्छना—अनुभय वचन—:यह क्या है, ऐसी कोई बात पूछना।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(५) प्रज्ञापन—अनुभय वचनः—मैं अब क्या करूं ऐसी आज्ञा मांगना।

(६) प्रत्याख्यान—अनुभय वचनः—मैं ऐसे काम बचन विचार अभक्ष्यको छोड़ता हूं ऐसे वचन कहना।

(७) संशयवचन—यह घी है या तेल ऐसे संशय वचन कहना।

(८) इच्छानुलोम्नी—मुझे भी ऐसा कपड़ा भोजन चाहिये ऐसा कहना।

सूत्र—गौरिकगांधारमानवमनुमूलवीर्यान्तभूमिधरशंकुक कौशिका आर्यविद्याधराः ॥२५॥

अर्थ—आठ प्रकारके आर्य विद्याधर होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) गौरिक—आर्य विद्याधर। (२) गांधार आर्य विद्याधर। (३) मानव आर्य विद्याधर (५) मनु आर्य विद्याधर (४) मूल वीयन्ति आर्य विद्याधर। (६) भूमिधर आर्य विद्याधर। (७) शंकुक आर्य विद्याधर। (८) कौशिक आर्य विद्याधर।

सूत्र—मातंगस्मशानपांडुककालश्वपाकि पार्वतेय वैशाल्य वार्क्षमूलका मातंगविद्याधराः।

अर्थ—मातंग विद्याधर भी आठ प्रकारके होते हैं उनके नाम ये हैं:—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

अर्थः—भोजन सम्बन्धी शुद्धि आठ तरह की होती हैं। उनके नाम इसप्रकार हैं:—

१—उद्गमरहित आहारशुद्धि, २—उत्पादन रहित आहारशुद्धि, ३—अशनरहित आहारशुद्धि, ४—संयोजन रहित आहारशुद्धि, ५—प्रमाणरहित आहारशुद्धि, ६—अंगाररहित आहारशुद्धि, ७—धूमरहित आहारशुद्धि, ८—कारण रहित आहार शुद्धि।

[१] उद्गमदोष—आहार औषधि वसतिका उपकरण देनेमें जो दोषदातासे उत्पन्न हों।

[२] उत्पादनदोष—अपने लिये मार्गविरुद्ध क्रियाओं द्वारा भोजन बनवानेमें जो दोष हो।

(३) आहारदोष—भोज्य पदार्थके संबन्धमें जो दोष हो।

(४) संयोजनदोष—सचित्त में अचित्त मिलाना या प्राकृति साधुकी जानकर भी विरुद्ध भोजनदेना या आयुर्वेद सिद्धान्तके विरुद्ध भोजन देना।

(५) प्रमाणरहितदोष— पेटके २ अंश रोटी भात आदि खाद्य आहारसे भरना और १ भाग दूध पानी आदि पेयसे भरना चौथा भाग श्वासके लिये खाली रखना सो प्रमाण है और इससे अधिक भोजन पान करना प्रमाण रहित दोष है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) अंगारदोष-स्वादिष्ट भोजनमें लम्पटता रखना।

(७) धूमदोष—भोजनमें अरुचिप्रगटकर रंज करना। कि यह तो अच्छी स्वादिष्ट नहीं ।

सूत्र— आमर्ष जल्लमलविट्सर्वौषध्यास्याविषदृष्टयविषाश्चौषधर्द्धयः ॥३१॥

अर्थ—औषध-ऋद्धियां आठ होती हैं। नाम उनके निम्नलिखित हैः—

१- आमर्षऔषधिऋद्धि, २- जल्लौषधिऋद्धि, ३-मलौषधिऋद्धि, ४-विडौषधिऋद्धि, ५-सर्वौषधिऋद्धि, ६-आस्यौषधिऋद्धि, ७-दृष्टिऔषधिऋद्धि, ८-क्ष्वेलौषधि ऋद्धि।

(१) आमर्षऔषधिऋद्धिके प्रभावसे रोगीमनुष्य मुनि के पैर आदि अंगोंसे स्पर्शके निरोग हो जाता है।

(२) जल्लौषधिऋद्धिके प्रभावसे मुनिराजके पसीनेके परमाणुओंके स्पर्शसे रोगियोंके रोग नष्ट होजाते हैं।

(३) मलौषधिऋद्धिके प्रभावसे मुनिके जिह्वा ओष्ठ नासिका श्रोत आदि के मलसे रोगी निरोग होजाता है।

(४) विडौषधिऋद्धि के प्रभावसे मलमूत्रसे भी रोग दूर होजाता है।

(५) सर्वौषधिऋद्धि के प्रभावसे मुनियोंद्वारा स्पर्श किया हुआ जल वायु तथा उन मुनिके रोम नख भी रोग नाशक होते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(६) आस्यौषधिऋद्धिके प्रभावसे मुखमें गया कड़वा चिरपरा रसभी मीठा होजाता है।

(७) दृष्टिऔषधिऋद्धि के प्रभावसे मुनिकी नजरसे रोगीनिरोग हो जाता है।

(८) विषऔषधिऋद्धिके प्रभावसे सांपका काटा भी निर्विष होजाता है।

सूत्र— विषासाध्यरोगरक्तक्षयतीव्रभयशस्त्रघाततीव्र क्रोधादिश्वासनिरोधाहारनिरोधाः अकालमृत्युहेतवः ॥३२॥

अर्थ—नीचे लिखे जानेवाले आठ कारणोंसे असमय में ही कालके न आने पर भी मृत्यु होजाती है अतः इन कारणोंको अकालमृत्युहेतु कहते हैं।

१–विषग्रहण, २–असाध्यरोग, ३–रक्तक्षय, ४–तीव्र भय, ५–शस्त्रघात, ६–तीव्रक्रोधआदि, ७–श्वासनिरोध, ८–आहारनिरोध।

(१) विषग्रहण—अशुद्ध शांखिया आदि विषको खा लेना।

(२) असाध्यरोग—ऐसा रोग होजाना जिसका ठीक होना किसीभी हालतमें संभव न हो।

(३) रक्तक्षय—ऐसी खूनकी एक दम कमी होजाना जिससे जीवका जीवन खतरेमें पड़ जाय।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(४) तीव्रभय—बहुत जोरका भयानकभय (खौफनाक) डर होना।

(५) शस्त्रघात—तलवार आदि हथियारसे प्रहार होना जिससे मृत्यु की आशंका हो।

(६) तीव्रक्रोध—ऐसे जोरका गुस्सा आना जिससे मरने मारनेको भी क्रोधीपुरुष तैयार रहे।

(७) श्वासनिरोध—घुटकी या गलाका जोरसे ऐसा दबायाजाना जिससे भीतरकी सांस बाहर और बाहरकी वायु अंदर न जासके।

(८) आहारनिरोध—भोजनका न मिलना या उसका पेटमें में न पहुँचना।

सूत्र— किंपुरुषसत्पुरुषमहाकायगीतरतिमणिभद्रभीमसुरूपकाला व्यंतरदक्षिणेन्द्राः ॥३३॥

अर्थ—व्यंतरों के दक्षिणेन्द्र आठ हुआ करते हैं। नाम उनके नीचे दिये जाते हैं:—

१- किंपुरुष दक्षिणेन्द्र, २- सत्पुरुष दक्षिणेन्द्र, ३- महाकायदक्षिणेन्द्र, ४- गीतरति दक्षिणेन्द्र, ५-मणिभद्र दक्षिणेन्द्र, ६-भीमदक्षिणेन्द्र, ७-सुरूप-दक्षिणेन्द्र, ८-कालदक्षिणेद्र।

सूत्र—किन्नरमहापुरुषातिकायगीतवशपूर्णभद्रमहाभीमप्रतिरूपमहाकाला व्यंतरोत्तरेन्द्राः ॥३४॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

१–मातंगनामक मातंगविद्याधर, २–श्मसानमातंग विद्याधर, ३- कालमातंगविद्याधर, ५- श्वपाकि मातंग विद्याधर, ६– पार्वतेयमातंगविद्याधर, ७- वैशाल्यमातंग विद्याधर, ८–वार्त्तमूलकमातंगविद्याधर।

सूत्र—अंतरिक्षभौमांगस्वरस्वप्नलक्षणव्यंजनच्छिन्नानि महानिमित्तानि ॥२७॥

अर्थ—आठ महानिमित्त हुआ करते हैं। वे ये हैं:—

१–अंतरिक्ष महानिमित्त, २–भौम महानिमित्त, ३–अंग महानिमित्त, ४–स्वर महानिमित्त, ५–स्वप्नमहानिमित्त, ६– लक्षणमहानिमित्त, ७– व्यंजनमहानिमित्त, ८–छिन्नमहानिमित्त।

(१) अंतरिक्षमहानिमित्त— आकाशमें बादलदेख शुभाशुभकहना।

(२) भौममहानिमित्त— पृथ्वीकी विचित्रता देख शुभाशुभ कहना।

(३) अंगमहानिमित्त–कान बड़े छोटे, सिर हाथ-पैर छोटे बड़े देख शुभाशुभ कहना।

(४) स्वर महानिमित्त— मनुष्य तिर्यंचकी बोलीसे शुभाशुभ कहना।

(५) स्वप्नमहानिमित्त—शारीरिक मानसिक रोगों से

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

युक्त व्यक्तिको रात्रिके चौथे पहरमें जो स्वप्न आवें उनसे शुभाशुभ कहना।

(६) लक्षणमहानिमित्त— १०८ लक्षण, कमल सांथिया आदि चिन्ह शरीरके अंगोंमें देख शुभाशुभ कहना।

(७) व्यंजनमहानिमित्त—९०० व्यंजन तिल मौंरी मसा आदि देख शुभाशुभ कहना।

(८) छिन्नमहानिमित्त—चूहे वस्त्र काटदें अग्निसे जल जाय उससे शुभाशुभ कहना।

सूत्र— पृथिव्यप्तेजोवायुकायाहारकदेवनारककेवलि शरीराण्यप्रतिष्ठितशरीराणि ॥२८॥

अर्थ—आठ अप्रतिष्ठित शरीर होते हैं। नामावली उनकी इसप्रकार है:—

अप्रतिष्ठित शरीरसे प्रयोजन ऐसे शरीरोंसे है जो बादर निगोदियाजीवोंसे रहित होते हैं।

१-पृथ्वीकाय शरीर, २-अपकाय शरीर, ३-तेज काय शरीर, ४-वायुकाय शरीर, ५-आहारक शरीर, ७-नारकशरीर, ८-केवलीशरीर।

(१) पृथ्वीकाय शरीर—पृथ्वीकायिक जीवोंका शरीर पहाड़, पृथ्वी, पत्थर आदि की खदान।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(२) अपकाय शरीर— जलकायिक जीवोंका शरीर जलओलाओसआदि ।

(३) तेजकाय शरीर—अग्निकायिक जीवोंका शरीर आग बिजली ।

(४) वायुकायशरीर—वायुकायिक जीवोंका शरीर ।

(५) आहारक शरीर— छट्टे गुणस्थानवर्ती मुनिके शरीरसे तत्वोंकी शंका दूर करने को केवली श्रुत केवलीके पास मस्तक से निकला एक हाथ प्रमाण धवलवर्ण मनोज्ञ अंगवाला पुतला जाता है। उनके दर्शन मात्रसे तत्त्वोंकी शंका दूर होजाती है। अन्तर्मुहूर्तमेंही पुतला लौटकर मुनिके शरीरमें समा जाता है इससे संयम की रक्षा होती है। यह पुतला बहुत दूर क्षेत्रमें शीघ्र परजीवोंका परवस्तुओं की बिना विराधना किये चला जाता है।

(६) देवशरीर— असुरकुमारादि भवनवासी व्यंतर ज्योतिष्क और स्वर्गमें रहनेवाले देवोंका शरीर ।

(७) नारकशरीर—नरकमें रहनेवाले नारकियों का शरीर ।

(८) केवलीशरीर—अरहंत भगवानका शरीर ।

सूत्र— कालाग्निमृत्तिकागोमयजलज्ञाननिर्विचिकित्सा भस्मशुद्धियो लौकिकशुद्धयः—॥२६॥

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अर्थ—लौकिकशुद्धियां आठ होती हैं। नाम उनके ये हैं :—

१- कालनामक लौकिक-शुद्धि, २-अग्नि नामक लौकिकशुद्धि, ३- मृत्तिका नामक लौकिकशुद्धि, ४- गोमय नामक लौकिकशुद्धि, ५- जल नामक लौकिकशुद्धि, ६-ज्ञान नामक लौकिकशुद्धि, ७- निर्विचिकित्सा नामक लौकिक शुद्धि, ८- भस्मशुद्धि नामक लौकिकशुद्धि।

[१] कालशुद्धि— काल 'समय' कृत पवित्रताकी प्राप्ति होना।

[२] अग्निशुद्धि—आगसे अगयाकर शुद्धि करना।

[३]मृतिकाशुद्धि—मिट्टीके सम्पर्कसे या रगड़से शुद्धि होना।

[४] गोमयशुद्धि—गोबरसे लीपलापकर शुद्धि करना।

[५] जलशुद्धि— जलसे धोकर शुद्धिका होना।

[६] ज्ञानशुद्धि—ज्ञानसे शुद्धिका होना।

[७] निर्विचिकित्साशुद्धि—ग्लानि या घृणाको दूर कर शुद्धिका होना।

[८] भस्मशुद्धि—राखआदिसे अशुद्धि को दूरकर देना।

सूत्र— उद्गमोत्पादनाशनसंयोजनप्रमाणांगारधमदोष रहिताहारशुद्धयः अशनशुद्धयः ॥३०॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

अर्थ—जैसे दक्षिणेन्द्र, व्यंतरों के आठ होते हैं; वैसे ही व्यंतरों के उत्तर दिशा सम्बन्धी आठ इन्द्र होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

१—किन्नर उत्तरेन्द्र, २—महापुरुष उत्तरेन्द्र, ३—अतिपुरुष उत्तरेन्द्र, ४—गीतवश उत्तरेन्द्र, ५—पूर्णभद्र उत्तरेन्द्र, ६—महाभीम उत्तरेन्द्र, ७-प्रतिरूप उत्तरेन्द्र। ८—महाकाल उत्तरेन्द्र।

सूत्र— बुद्धिक्रियाविक्रियातपोबलौषधिरसक्षेत्रीयाः ऋद्धयः ॥३५॥

अर्थः—ऋद्धियां आठ होती हैं। उनके नाम ये हैं:-

१—बुद्धिऋद्धि, २—क्रियाऋद्धि, ३—विक्रियाऋद्धि, ४—तपऋद्धि, ५—बलऋद्धि, ६—औषधिऋद्धि, ७—रस-ऋद्धि, ८—क्षेत्रऋद्धि।

(१) बुद्धिऋद्धि—ज्ञान में चमत्कार होना। यह बुद्धि-ऋद्धि भी १८ भेद वाली है।

(२) क्रियाऋद्धि—चलनेमें चमत्कार होना पानी व आकाश आदिमें पृथ्वी समान चलना।

(३) विक्रियाऋद्धि— शरीर सम्बन्धी चमत्कार होना छोटा बड़ा बना लेना।

(४) तपऋद्धि— तप सम्बन्धी चमत्कार होना, उपवास अधिक करतेभी शारीरिक मानसिकबल बढ़तेजाना।

Version 1

(५) बलऋद्धि— अन्तर्मुहूर्त में ही द्वाद=शांगका उच्चारण व मनन करलेना, लोकको छिगरी से उठानेका सामर्थ्य होना।

(६) औषधिऋद्धि— जिसके प्रभावसे रोगीके देखते ही निरोग होजावे।

(७) रसऋद्धि—जिसके प्रभाव से रूखा सूखा भोजन उनके हाथमें जातेही घी दूध आदि युक्त ज्ञात होने लगे।

(८) क्षेत्रऋद्धि—जिस ऋद्धिके प्रभाव से अल्प क्षेत्र में बहुतव्यक्ति समा जायें।

सूत्र—तत्प्राप्ता ऋद्धिप्राप्तार्याः ॥३६॥

अर्थ—उपरिवर्णित या विवेचित आठ ऋद्धियोंको प्राप्त करने आर्य हुआ करते हैं। यही ऋद्धिप्राप्तार्य कहलाते हैं। इनकी संख्या आठ हैं; नाम इस प्रकार हैं:—

१-बुद्धिऋद्धिप्राप्तार्य, २-क्रियाऋद्धिप्राप्तार्य, ३-विक्रियाऋद्धिप्राप्तार्य, ४-तपऋद्धिप्राप्तार्य, ५-बलऋद्धिप्राप्तार्य, ६-औषधिऋद्धिप्राप्तार्य, ७-रसऋद्धिप्राप्तार्य, ८-क्षेत्रऋद्धिप्राप्तार्य।

(१) बुद्धिऋद्धिप्राप्तार्य-ऐसे आर्य जिन्हें बुद्धिनामक ऋद्धिप्राप्त हो गई हो।

(२) क्रियाऋद्धिप्राप्तार्य— ऐसे आर्य जिन्हें क्रियाऋद्धि प्राप्त हो गई हो।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(३) विक्रिया ऋद्धिप्राप्तार्य— ऐसे आर्य जिन्हें विक्रियाऋद्धि प्राप्त होगई हो वे इस कोटिमें गर्भित होते हैं।

(४) तपऋद्धिप्राप्तार्य—ऐसे आर्य जिन्हें तपऋद्धि प्राप्त होचुकी हो इस वे कोटिमें आते हैं।

(५) बलऋद्धिप्राप्तार्य—ऐसे आर्य जिन्हें बलऋद्धि प्राप्त हो चुकी हो वे इसके अंतर्गत रखे जा सकते हैं।

(६) औषधिऋद्धिप्राप्तार्य— ऐसे आर्य जिन्हें औषधिऋद्धि मिलचुकी हो।

(७) रसऋद्धिप्राप्तार्य— ऐसे आर्य जिन्हें रस नामकऋद्धि मिलचुकी हो।

(८) —क्षेत्रऋद्धिप्राप्तार्य—ऐसे आर्य जिन्हें क्षेत्र-ऋद्धि प्राप्त हो गई हो।

सूत्र—स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुश्रोत्रज्ञान मनोवचःकायार्थ भाव योगवर्तनानि भावप्राणाः ॥३७॥

अर्थः— भावयोग से होने वाले भावप्राण आठ होते हैं। नामावली उनकी निम्नलिखित हैः—

उनके नाम इस प्रकार हैः—

(१) स्पर्शनज्ञान (२) रसनज्ञान (३) घ्राणज्ञान (४) चक्षु, ज्ञान (५) श्रोत्रज्ञान, (६) मनो-अर्थभावयोगवर्तन (७) वचन-अर्थभावयोगवर्तन (८) कायार्थभावयोगवर्तन।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१) स्पर्शनज्ञान– स्पर्शनइन्द्रियके निमित्तसे होने वालाज्ञान।

(२) रसनज्ञान– रसनाइन्द्रियके निमित्तसे होने वाला ज्ञान।

(३) घ्राणज्ञान–घ्राणइन्द्रियके निमित्तसे होने वाला ज्ञान

(४) चक्षुर्ज्ञान–चक्षुइन्द्रियके निमित्तसे होने वाला ज्ञान।

(५) श्रोत्रज्ञान–कर्णइन्द्रियके निमित्तसे होने वाला ज्ञान।

(६) मनोअर्थभावयोगवर्तन—मनसे एक पदार्थको विचार कर भिन्न पदार्थका विचारना।

(७) वचनअर्थभावयोगवर्तन—वचनसे एक पदार्थका स्वरूप कहकर भिन्न पदार्थ कहना।

(८) कायअर्थभावयोगवर्तन–शरीरसे एक कार्य करके भिन्न कार्य करना।

सूत्र—भावकायविनयेर्यापथभिक्षाप्रतिष्ठापनाशयनासन वाक्यशुद्धयः अपहृतसंयमशुद्धयः ॥३८॥

अर्थ–अपहृतसंयमशुद्धि आठ प्रकार की होती हैं। आगे उनके नाम दिये जाते हैं:—

(१) भावशुद्धि (२) कायशुद्धि ३) विनयशुद्धि (४) ईर्या

Report any errors at vikasnd@gmail.com

पथशुद्धि (५) भिक्षाशुद्धि (६) प्रतिष्ठापनाशुद्धि (७) शयनासनशुद्धि (८) वाक्यशुद्धि ।

(१) भावशुद्धि— कषायोंकी मन्दतासे परिणामोंकी शुध्दि करना ।

(२) कायशुद्धि—जलादिकसे ऊपरी शुद्धि करना और वातपित्त कफ के विकार दबाना ।

(३) विनयशुद्धि— ज्ञान दर्शन चारित्र व उनके साधनों की विनय करना ।

(४) ईर्यापथशुद्धि— चलनेमें पूर्ण सावधानी रखना कि किसी जीवको कष्ट न पहुंचे ।

[५] भिक्षाशुद्धि— भोजनकी शुद्धि पद व नियम अनुसार रखना ।

(६) प्रतिष्ठापनाशुद्धि— निर्जन्तु स्थानमें मल मूत्र त्यागना ।

[७] शयनासनशुद्धि—शय्या और आसनकी शुद्धि रखना कोई जीव का बध न हो जाये ।

[८] वाक्यशुद्धि—हित मित प्रिय वचन बोलना ।

सूत्र—शचीपद्माशिवाश्यामाकालिन्दिसुलसाऽज्जुकाभानुरतयः स्वर्ग दक्षिणेन्द्राग्रदेवीनामानि ॥३६॥

अर्थ—स्वर्गों में दक्षिण दिशा के इन्द्रों की आठ अग्रदेवियां होती हैं । उनके नाम ये हैं:—

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

१- शची अग्रदेवी २-पाद्मा अग्रदेवी ३-शिवा अग्र देवी ४- श्यामाअग्रदेवी ५- कालिन्दि अग्रदेवी ६- सुलसा-अग्रदेवी ७- अज्जुका अग्रदेवी ८- भानुरतीअग्रदेवी ।

सूत्र–श्रीमतीरामासुसीमाप्रभावतीजयसेनासुषेणावसुमित्रा-वसुन्धराः स्वर्गोत्तरेन्द्रदेवीनामानि ॥४०॥

अर्थ— स्वर्गों में वास करने वाले उत्तर दिशा सम्ब-न्धी इन्द्रों की भी आठ अग्रदेवियाँ होती हैं। उनके नाम ये हैं:—

[१] श्रीमती उत्तरेन्द्राग्रदेवी (२) रामाउ त्तरेन्द्र अग्रदेवी [३] सुसीमाउत्तरेन्द्र अग्रदेवी [४] प्रभावती उत्तरेन्द्र अग्र देवी [५] जयसेना उत्त रेन्द्र अग्रदेवी [६] सुषेणा उत्तरेन्द्र अग्रदेवी [७] वसुमित्रा उत्त रेंद्र अग्र देवी [८] वसुंधरा उत्तरेंद्र अग्रदेवी ।

सूत्र— हृत्कंठमस्तकदंतताल्वोष्ठनासिकाजिह्वामूलानि शब्दोच्चारणस्थानानि ॥४१॥

अर्थ—स्वर व्यंजनादिरूप शब्दों के उच्चारण किये जानेके स्थान आठ हुआ करते हैं अर्थात् शब्दोच्चारणके आठ स्थान हैं। नाम उनके ये हैं:—

[१] हृदयशब्दोच्चारण स्थान [२] कंठशब्दोच्चारण स्था-न [३] मस्तक मूर्धनशब्दोच्चारणस्थान [४] दंत शब्दो-च्चारण स्थान [५] तालु शब्दउच्चारण स्थान [६] ओष्ठ-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

शब्द उच्चारणस्थान [७] नासिका शब्द उच्चारण स्थान [८] जिह्वामूल शब्द उच्चारण स्थान ।

[१] हृदय शब्द—

[२] कंठ शब्द—अ क वर्ग ह और विसर्ग

[३] मस्तक शब्द—ऋ ट ठ ड ढ ण र ष

[४] दंत शब्द—लृ त थ द ध न ल स

[५] तालु शब्द—इ च छ ज झ ञ य श

[६] ओष्ठ शब्द—उ प फ ब भ म उपधमानी

[७] नासिकशब्द— ञ म ङ ण न

[८] जिह्वामूल शब्द— कँ खँ

सूत्र— मनुमानवकौशिकगौरिकगांधारभूमितुण्डमूल-वीर्यकशंकुकीया गंधर्वविद्याः ॥४२॥

अर्थ—१- मनु-गंधर्वविद्या, २- मानवगन्धर्वविद्या, ३- कौशिकगंधर्वविद्या, ४- गौरिकगन्धर्वविद्या, ५-गांधार भूमिगंधर्वविद्या, ६-तुंडमूलगन्धर्वविद्या, ७-वीर्यकगंधर्वविद्या ८- शंकुकीयगंधर्वविद्या । इस प्रकार आठ प्रकारकी गंधर्वविद्या होती हैं ।

सूत्र—मातंगपाण्डुककालस्वपाकपर्वतवंशालयपांशुमूल वृक्षमूलीयादैत्यविद्याः ॥४३॥

अर्थः— १—मातंगदैत्यविद्या, २—पाण्डुक दैत्यविद्या ३—कालदैत्यविद्या, ४—स्वपाक दैत्यविद्या, ५—पर्वतदैत्य-

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

विद्या, ६-वंशालयदैत्य विद्या, ७-पांशुमूलदैत्यविद्या,-८-वृक्षमूलीयदैत्यविद्या रूप आठ दैत्यविद्यायें होती हैं।

सूत्र— इन्द्रसामानिकपारिषदात्मरक्षानीकप्रकीर्णकाभियोग्य किल्विषकाः व्यंतरदेवपदाः ॥४४॥

अर्थ—व्यंतर देवोंमें आठ विभाग हुआ करते हैं। उन्हीं विभागों को व्यन्तर देव पद भी कहते हैं। वे आठ पद ये हैं:—

१—इन्द्रव्यन्तरदेवपद, २—सामानिक-व्यन्तरदेवपद, ३—पारिषद्व्यन्तरदेवपद, ४—आत्मरक्ष-व्यंतरदेवपद, ५—अनीकव्यंतरदेवपद, ६—प्रकीर्णकव्यंतरदेवपद, ७—आभियोग्यव्यंतरदेवपद, ८-किल्विषक व्यन्तरदेवपद।

(१) इन्द्रव्यन्तरदेवपद—जैसे मनुष्योंमें राजा होता है वैसे ही अन्य देवोंमें न रहने वाली अणिमादि ऋद्धियों से जो युक्त होते हुये देवोंमें राजा के समान हो।

(२) सामानिकव्यंतरदेवपदः— आयु वीर्य भोग उपभोगादि सामग्री इन्द्र तुल्य होते हुये भी आज्ञा रूप ऐश्वर्य से जो रहित हों ये पिता या गुरु तुल्य होते हैं।

(३) परीषद् व्यन्तरदेवपद— जैसे सभामें सभासद् हैं वैसेही इन्द्रके दरबार में जो बैठते हों।

(४) आत्मरक्षव्यन्तरदेवपद— जैसे राजाओं के

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

ए० डी० सी० आदि होते हैं वैसे ही जो देव इन्द्र के अंग रक्षक सदृश होते हैं।

(५) अनीक व्यन्तरदेवपद— जो देवपदाति रथ आदि सात तरह की सेना में विभक्त होते हैं।

(६) प्रकीर्णक व्यन्तरदेवपद—- जो नगरवासियों के समान स्वर्ग में यहां वहां फैले हुये विमानोंमें रहते हैं।

(७) आभियोग्य व्यंतरदेवपद—- जो देव दासोंके समान सवारी आदिके काममें आते हैं।

(८) किल्विषक व्यंतरदेवपद-- जैसे मर्त्यलोकमें चांडालादि होते हैं वैसेही जो देव चांडालादिकी तरह नीच काम करने वाले हों।

सूत्र-- ज्योतिष्कदेवपदाश्च ॥४५॥

अर्थ— जैसे व्यन्तरोंके आठ देव-पद हुआ करते हैं वैसे ही ज्योतिष्क देवोंके भी आठ देव पद होते हैं। नामोंमें भी कोई अन्तर नहीं है। उनके नाम ये हैं:—

(१) इन्द्र-ज्योतिष्कदेवपद, (२) सामानिकज्योतिष्कदेवपद (३) पारिषदज्योतिष्कदेवपद, (४) आत्मरक्षज्योतिष्कदेवपद (५) अनीकज्योतिष्कदेवपद, (६) प्रकीर्णकज्योतिष्कदेवपद, (७)आभियोग्यज्योतिष्कदेवपद, (८) किल्विषकज्योतिष्क-देवपद।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१) इन्द्र-ज्योतिष्कदेवपद— मनुष्योंमें जैसे राजा होता है वैसे ही देवों में विशिष्ट ऋद्धिसे युक्त जो होता है ।

(२) सामानिक-ज्योतिष्कदेवपद— आयु वीर्य भोग उपभोगसे युक्त होते हुये भी जो आज्ञा रूप ऐश्वर्यसे रहित हों ।

(३) पारिषद-ज्योतिष्कदेवपद—दरबारमें जैसे दरबारी होते हैं वैसे इन्द्रसभामें बैठनेवाले जो सभासद होते हैं ।

(४) आत्मरक्षज्योतिष्कपद— अंगरक्षक के सदृश जो देव हाते हैं वे इस कोटिमें गर्भित होते हैं ।

(५) अनीकज्योतिष्कपद— पदाति, रथ, आदि सप्तसेनामें विभक्त हो रहनेवाले देव अनीक कहलाते हैं ।

(६) प्रकीर्णकज्योतिष्कपद— नगरवासियोंके समान स्वर्गमें यहां वहां फैले विमानोंमें रहनेवाले देव इस कोटिमें आते हैं ।

(७) आभियोग्यज्योतिष्कपद— जो देव दासोंके समान सवारी आदिके काम आते हों ।

(८) किल्विषकज्योतिष्कदेवपद— जो चांडालादि की तरह नीच काम करते हों ।

सूत्र— अशोकचंपकनागतुंबुरुवटकंटतरुतुलसीकदंबा व्यंतरचैत्य वृक्षाः ॥४६॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

अर्थ—व्यंतर चैत्यवृक्ष आठ होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

१—अशोकव्यंतरचैत्यवृक्ष, २—चंपकव्यन्तरचैत्यवृक्ष, ३—नागव्यंतरचैत्यवृक्ष, ४—तुम्बुरुव्यन्तरचैत्यवृक्ष, ५—वट-व्यन्तरचैत्यवृक्ष, ६—कंटतरुव्यंतरचैत्यवृक्ष, ७—तुलसीव्यं-तरचैत्यवृक्ष, ८—कदम्बव्यन्तरचैत्यवृक्ष।

सूत्र— अंजनकवज्रधातुक-सुवर्णमनःशिलकवज्ररजत हिंगुलिकहरितालाव्यन्तरेन्द्रनगराश्रयाद्वीपाः ॥४७॥

अर्थ—व्यंतरेन्द्रोंके नगरोंके आश्रित आठ द्वीप हैं उन आठ द्वीपोंके नाम ये हैं:—

१—अंजनकद्वीप, २—वज्रधातुक दीप, ३—सुवर्णद्वीप, ४—मनःशिलकद्वीप ५—वज्रद्वीप, ६—रजतद्वीप, ७—हिंगु-लिकद्वीप, ८—हरितालद्वीप।

सूत्र—पल्यसागरसूचीप्रतरघनांगुलजगच्छ्रेणीलोकप्रतर लोकाउपमाप्रमाणाः ॥४८।

अर्थ—आठ उपमाप्रमाण होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

१- पल्य उपमाप्रमाण, २- सागर उपमाप्रमाण, ३- सूच्यांगुल उपमाप्रमाण, ४- प्रतरांगुल उपमाप्रमाण, ५- घनांगुल उपमाप्रमाण, ६—जगत्श्रेणी उपमाप्रमाण, ७—लोकप्रतर उपमाप्रमाण, ८—लोक उपमाप्रमाण।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१) पल्य उपमाप्रमाण—एक योजन लम्बे चौड़े गहरे गड्ढे की कल्पना कर उसे भोगभूमि में उत्पन्न, सात दिन की आयुवाले मेमनेके ऐसे बालों के टुकड़ोंसे जिसका कि फिर दूसरा खंड न हो खूब दाबदूब कर ठसाठस भरा हुआ मानाजाय। सौ सौ वर्षके बाद एक एक बालके टुकड़े को निकालते हुये उस गड्ढेको खाली किया जाय (कल्पनाद्वारा) जितना समय ऐसा करनेमें लगे उसका नाम एक पल्य है।

(२) सागर उपमाप्रमाण— दश कोड़ा कोड़ी पल्योंका एक सागर होता है।

(३) सूची उपमाप्रमाण—१ परमाणु २ उवसन्नवासन्न ३ सन्नासन्न ४ त्रुटिरेणु, ५ त्रसरेणु ६ रथरेणु ७ उत्तमंभोगभूमिकाबालाग्र, ८ मध्यमभोगभूमिका, ९ जघन्यभोगभूमिका १० कर्मभूमिका बालाग्र, ११—लीक, १२ जूं, १३ जौ, और १४ अंगुल। ये १४ चीजें क्रमशः आगे ८/८ गुनीबड़ी हैं। यह अंगुल अन्तका सूच्यंगुल कहलाता है।

(४) प्रतर उपमाप्रमाण—सूच्यंगुलके वर्गको प्रतरांगुल कहते हैं।

(५) घनांगुलउपमाप्रमाण—सूच्यंगुलके घनको घनांगुल कहते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) जगत्च्छ्रेणीउपमाप्रमाण— सात रज्जु मयी आकाशके प्रदेशोंकी पंक्तिको जगत् श्रेणी कहते हैं।

(७) लोकप्रतर उपमाप्रमाण— जगतश्रेणीके प्रमाण के वर्गको लोकप्रतर प्रमाण कहते हैं।

(८) लोक उपमाप्रमाण—जगत्श्रेणीके प्रमाणके घन को लोकप्रमाण कहते हैं।

सूत्र— शरीरवाङ्मनःश्वासोच्छ्वाससुखदुःखजीवनमरणानिपुद्गलोपग्रहाः । ४६॥

अर्थ—पुद्गल नामक अजीव द्रव्यके आठ उपग्रह हैं। अर्थात् पुद्गलोंसे आठ तरहके उपकार होते हैं। वे आठ ये हैंः—

१ शरीरपुद्गलोपग्रह, २– वाङ्पुद्गलोपग्रह, ३- मनःपुद्गलोपग्रह, ४ श्वासोच्छ्वास पुद्गलोपग्रह, ५- सुखपुद्गलोपग्रह, ६- दुःखपुद्गलोपग्रह, ७—जीवन पुद्गलोपग्रह, ८—मरणपुद्गलोपग्रह।

(१) शरीरपुद्गलोपग्रह— शरीरके बननेमें पुद्गलोंका कारण होना शरीर पुद्लोपग्रह कहलाता है। पुद्गल इसमें उपदानकारण होते हैं।

(२) वाङ्पुद्गलोपग्रह— वचनके बननेमें पुद्गलों का कारण होना वाङ्पुद्गलोपग्रह है। इसमें भी पुद्गल उपादानकारण होता है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(३) मनः पुद्‌गलोपग्रह— मनके बननेमें पुद्‌गलोंका कारण होना मनपुद्‌गलोपग्रह कहलाता है। पुद्‌गल इसमें उपादानकारण होता है।

(४) श्वासोच्छ्‌वास पुद्‌गलोपग्रह— श्वासोच्छ्‌वासमें पुद्‌गलोंका कारण होना श्वासोच्छ्‌वास पुद्‌गलोपग्रह है। इसमें भी वह उपादान कारण होता है।

(५) सुख पुद्‌गलोपग्रह— सुखके होनेमें पुद्‌गलोंका कारण होना। इसमें पुद्‌गल निमित्तकारण होता है।

(६) दुःखपुद्‌गलोपग्रह— दुःखके होनेमें पुद्‌गलका कारण होना पुद्‌गल इसमें निमित्तकारणके रूपमें काम करता है।

(७) जीवन पुद्‌गलोपग्रह—जीवन प्राप्तिमें पुद्‌गलका कारण होना निमित्त कारणके रूपमें जीवन पुद्‌गलोपग्रह कहलाता है।

(८) मरणपुद्‌गलोपग्रह— मरणमें भी पुद्‌गलका निमित्तकारणके रूपमें कारण होना।

सूत्र——नन्दनमंदरनिषधहिमवद्राजसरुचकसागरकवज्रा नंदनवनकूटाः ॥५०॥

अर्थ—आठ नंदनवनकूट होते हैं नाम उनके ये हैं:—

१– नंदन-नंदनवनकूट, २–मंदर-नंदनवनकूट, ३–निषध नंदनवनकूट, ४–हिमवन् नंदनवनकूट, ५–राजस

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

नंदनवनकूट, ६–रुचक नंदनवनकूट, ७–सागरक नंदन-वनकूट, ८–वज्र नंदनवनकूट ।

सूत्र— मेघंकरामेघवतीसुमेघामंथमालिनितोयंधराविचित्रापुष्पमालाऽनिंदितास्तत्कूटशिखरस्थदिक्कन्याः ॥५१॥

अर्थ—नन्दनवन के कूटोंके शिखर पर स्थित या रहने वाली आठ दिक्‌कन्यायें होती हैं। उनके नाम ये हैं:—

१–मेघंकरादिक्कन्या, २–मेघवतीदिक्कन्या, ३–सुमेघा दिक्‌कन्या, ४–मंथमालिनिदिक्कन्या, ५–तोयंधरादिक्कन्या ६–विचित्रादिक्कन्या, ७–पुष्पमालादिक्कन्या, ८–अनिन्दितादिक्कन्या ।

सूत्र– पद्मोत्तरनीलस्वस्तिकाञ्जनकुमुदपलाशावतंसरोचनाह्वा मेरु पार्श्ववर्तिदिग्गजाः ॥५२॥

अर्थ— मेरु पर्वत के पार्श्व में रहने वाले आठ दिग्गज होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

१–पद्मोत्तर दिग्गज २–नील दिग्गज ३–स्वस्तिक दिग्गज ४–अंजन दिग्गज ५–कुमुद दिग्गज ६–पलाश दिग्गज ७–अवतंस दिग्गज ८–संरोचन दिग्गज ।

सूत्र— कच्छ सुकच्छ महाकच्छकच्छकावत्यावर्तलांगलावर्तपुष्कल पुष्कलावत्यः सीतानीलमध्यस्थविदेह-देशाः ॥५३॥

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अर्थ-- सीतानदी और नीलपर्वत के मध्यमें पाये जाने वाले आठ विदेहदेश हैं। उन देशोंकी नामावली यह है:—

१-कच्छ विदेहदेश २-सुकच्छ विदेहदेश ३-महा कच्छ विदेहदेश ४-कच्छकावती विदेहदेश ५-आवर्त विदेहदेश ६-लांगलावर्त विदेहदेश ७-पुष्कल विदेहदेश ८-पुष्कलावती विदेहदेश।

सूत्र-- क्षेमाक्षेमपुर्यरिष्टारिष्टपुरिखड्गामंजूषौषधि-पुण्डरीकिण्यस्तद्देशार्यखण्डराजधान्यः ॥५४॥

अर्थ— उपरिलिखित आठ देशोंके आर्यखण्डों की आठ राजधानियां हैं। उन राजधानियोंके नाम इसप्रकार हैं:—

(१) क्षेमा राजधानी (२) क्षेमपुरी राजधानी (३) अरिष्टा राजधानी (४) अरिष्टपुरी राजधानी (५) खड्गा राजधानी (६) मंजूषा राजधानी (७) औषधी राजधानी (८) पुण्डरीकिणी राजधानी।

सूत्र— वत्ससुवत्समहावत्सवत्सकावतिरम्यसुरम्यरम-णीयमंगलावत्यः सीतानिषधमध्यस्थविदेहदेशाः ॥५५॥

अर्थ— सीता नदी और निषध-पर्वत के मध्य में स्थित आठ विदेह देश हैं। उन देशों के नाम इस प्रकार हैं:—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१) वत्स विदेहदेश (२) सुवत्स विदेहदेश (३) महावत्स विदेहदेश (४) वत्सकावती विदेहदेश (५) रम्य विदेहदेश (६) सुरम्य विदेहदेश (७) रमणीय विदेहदेश (८) मंगलावती विदेह देश।

सूत्र— सुसीमाकुंडलापराजिताप्रभंकराङ्कापद्मावति शुभारत्नसंचयास्तद्देशार्यखंडराजधान्यः ॥५६॥

अर्थ— १-सुसीमा राजधानी २-कुंडला राजधानी ३-अपराजिता राजधानी ४-प्रभंकरा राजधानी ५-अङ्का राजधानी ६-पद्मावती राजधानी ७-शुभा राजधानी ८-रत्नसंचया राजधानी। ये आठ राजधानियाँ सीता नदी और निषधपर्वतके बीचमें पाये जाने वाले आठ देशोंकी हैं।

सूत्र— पद्मसुपद्ममहापद्मपद्मकावतिशंखनलिनिकुमुदसरितासीतोदानिषधमध्यस्थविदेहदेशाः ॥५७॥

अर्थ—सीतोदा नदी और निषध पर्वतके बीचमें स्थित आठ विदेह देश हैं। नाम उनके आगे लिखे जा रहें हैं:—

१- पद्म विदेहदेश, २- सुपद्म विदेहदेश, ३-महापद्म विदेहदेश, ४- पद्मकावती विदेहदेश, ५- शंख विदेहदेश, ६- नलिनी विदेहदेश, ७- कुमुद विदेहदेश, ८- सरित विदेहदेश।

सूत्र— अश्वपुरीसिंहपुरीमहापुरीविजयपुर्यरजाविरजा

Version 1

ऽशोकावीतशोकास्तद्देशार्यखंडराजधान्यः ॥५८॥

अर्थ—उपरिलिखित आठ विदेहदेश आर्यखंडोंकी आठ राजधानियां हैं। उनके नाम इस तरहसे हैं:—

१- अश्वपुरीराजधानी, २- सिंहपुरी राजधानी, ३- महापुरी राजधानी, ४- विजयपुरी राजधानी, ५- अरजा राजधानी, ६- विरजा राजधानी, ७- अशोका राजधानी, ८- वीतशोका राजधानी

सूत्र—वप्रसुवप्रमहावप्रवप्रकावतिगंधसुगंधगंधिलगंधमालिन्यः सीतोदानीलमध्यस्थविदेहदेशाः ॥५६।

अर्थ—सीतोदा नदी और नील पर्वतके मध्यमें स्थित आठ विदेह देश पाये जाते हैं। उनके नाम ये हैं:—

१–वप्रविदेहदेश, २–सुवप्रविदेहदेश, ३–महावप्रविदेह देश, ४–वप्रकावतीविदेहदेश, ५–गंधविदेहदेश, ६-सुगंध विदेहदेश, ७–गंधिलविदेहदेश, ८–गंधमालिनीविदेहदेश।

सूत्र— विजयावैजयन्तीजयन्तापराजिताचक्रपुरीखड्गपुर्ययोध्यावध्यास्तद्देशार्यखंडराजधान्यः ॥६०॥

अर्थ—उन उपरिलिखित आठ विदेहदेशोंके आर्य खण्डोंकी आठ राजधानियां हैं। नाम उनके ये हैं:—

१- विजयाराजधानी, २- वैजयन्ती राजधानी, ३- जयन्ताराजधानी, ४- अपराजिताराजधानी, ५- चक्रपुरी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

राजधानी, ६- खड्गपुरीराजधानी, ७-अयोध्याराजधानी, ८- अवध्याराजधानी ।

सूत्र--सिद्धायतनमहाहिमवद्धैमवतरोहिताद्रीहरिकान्ता हरिवर्षवैडूर्याह्वामहाहिमवत्कूटाः ॥६१॥

अर्थ—महाहिमवत पर्वतके आठ कूट हैं। वे आठ ये हैं:—

१- सिद्धायनतमहाहिमवत्कूट, २- महाहिमवत-महाहिमवत्कूट, ३- हैमवत महाहिमवत्कूट, ४-रोहितमहाहिमवत्कूट, ५- आद्री महाहिमवत्कूट, ६- हरिकान्ता महाहिमवत्कूट, ७- हरीवर्षमहाहिमवत्कूट, ८—वैडूर्यमहाहिमवत्कूट

सूत्र—सिद्धायतननीलपूर्वविदेहसीताकीर्तिनरकान्ताऽपरविदेहरम्यकादर्शनाह्वाः रुक्मिकुलाचलकूटा ॥६२॥

अर्थ—रुक्मि नामक पर्वतके आठ कूट हैं। उन आठ कूटों के नाम ये हैं:—

१—सिद्धायतन रुक्मिकुलाचलकूट, २—नीलरुक्मिकुलाचलकूट, ३—पूर्वविदेहरुक्मिकुलाचलकूट, ४—सीतारुक्मिकुलाचलकूट, ५ कीर्तिरुक्मिकुलाचलकूट, ६— नरकांता रुक्मिकुलाचलकूट, ७- अपरविदेहरुक्मिकुलाचलकूट,

सूत्र—कनककांचनतपनस्वस्तिकसुभद्रांजनकांजनमूलवज्रा रुचकगिरिपूर्वादिकस्थकूटाः ॥६३॥

Version 1

अर्थ—रुचकगिरि की पूर्व दिशामें स्थित ये आठ कूट पाये जाते हैं। आठ कूटोंके नाम ये हैं:—

१- कनककूट, २- कांचनकूट, ३- तपनकूट, ४- स्वस्तिककूट, ५ सुभद्रकूट, ६ अंजनककूट, ७ अंजनकूट, ८ मूलवज्रकूट।

सूत्र--विजयावैजयन्तीजयन्त्यपराजितानंदानंदवतीनंदोत्तरानंदिषेणास्तन्निवासिन्यो देव्यः ॥६४॥

अर्थ—उनरुचकगिरिकी पूर्वदिशामें स्थित आठ कूटों पर निवास करने वाली आठ देवियां होती हैं। उन देवियों के नाम ये हैं:—

१- विजयादेवी, २- वैजयन्तीदेवी, ३- जयन्तीदेवी, ४- अपराजितादेवी, ५- नंदादेवी, ६- नंदवतीदेवी ७- नंदोत्तरादेवी, ८ नंदिषेणादेवी।

सूत्र—स्फटिकरजतकुमुदनलिनपद्मशशिवैश्रवणवैडूर्या रुचकदक्षिणकूटाः ॥६५॥

अर्थ—रुचकगिरि की दक्षिणदिशामें आठ कूट पाये जाते हैं। वे आठ कूट निम्नलिखित नाम वाले हैं:—

(१) स्फटिक रुचकदक्षिणकूट, (२) रजतरुचकदक्षिण-कूट, (३) कुमुद रुचकदक्षिणकूट, (४) नलिन रुचकदक्षिण कूट, (५) पद्म रुचकदक्षिणकूट, (६) शशि रुचकदक्षिणकूट, (७) वैश्रवणरुचकदक्षिणकूट, (८) वैडूर्य रुचकदक्षिणकूट।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

सूत्र— इच्छाप्रथमेच्छासमाहारा सुप्रकीर्णायशोधरा लक्ष्मीशेषवतीचित्रगुप्तावसुन्धरातन्निवासिन्यो देव्यः ॥६६॥

अर्थ— उन रुचक गिरिके दक्षिण दिशामें पाये जाने वाले कूटों पर आठ देवियां रहती हैं। इन आठ देवियों के नाम ये हैं:—

(१) इच्छाप्रथमेच्छा देवी, (२) समाहारा देवी, (३) सुप्रकीर्णा देवी, (४) यशोधरा देवी, (५) लक्ष्मी देवी, (६) शेषवती देवी, (७) चित्रगुप्ता देवी, (८) वसुन्धरा देवी

सूत्र— अमोघस्वस्तिकमंदरहैमवतराज्यराज्योत्तम-चन्द्रसुदर्शनारुचकपश्चिमकूटाः ॥६७॥

अर्थ— रुचक गिरिकी पश्चिम दिशामें आठ कूट पाये जाते हैं। नाम उनके ये हैं:—

[१] अमोघरुचक पश्चिम कूट, [२] स्वस्तिकरुचक पश्चिम कूट, [३] मंदररुचक पश्चिम कूट, [४] हैमवत रुचक पश्चिम कूट, [५] राज्यरुचक पश्चिम कूट, [६] राज्योत्तमरुचक पश्चिम कूट, [७] चन्द्ररुचक पश्चिम कूट, [८] सुदर्शनरुचक पश्चिम कूट।

सूत्र— इलावतीसुरादेवीपृथ्वीपद्मावती त्यैक नासा नवमिका सीताभद्रास्तन्निवासिन्यो देव्यः ॥६८॥

अर्थ— उन रुचक गिरि के पश्चिम दिशा सम्बन्धी

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

आठ कूटों पर रहने वाली आठ देवियां नीचे लिखे नाम वाली होती हैं:—

[१] इलावती देवी, [२] सुरा देवी, [३] पृथ्वी देवी [४] पद्मावती देवी। [५] एकनासा देवी, [६] नवमिका देवी, [७] सीता देवी, [८] भद्रा देवी।

सूत्र— विजयवैजयंतजयंतापराजितकुंडलरुचकरत्नसर्वरत्नारुचकोत्तर कूटाः ॥६९॥

अर्थ— रुचक गिरि की उत्तर दिशा में पाये जाने वाले आठ कूट होते हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं:—

[१] विजयरुचकोत्तर कूट, [२] वैजयन्तरुचकोत्तर कूट, [३] जयन्तरुचकोत्तर कूट, [४] अपराजितरुचकोत्तर कूट, [५] कुंडलरुचकोत्तर कूट, [६] रुचकरुचकोत्तर कूट [७] रत्नरुचकोत्तर कूट, [८] सर्वरत्नरुचकोत्तर कूट।

सूत्रः— अलंभूषामिश्रकेशीपुण्डरीकिणीवारुण्याशासत्याह्रीश्रियस्तन्निवासिन्यो देव्यः ॥७०॥

अर्थ—उपरिलिखित आठ रुचकोत्तरकूटों पर रहने या निवास करनेवाली आठ देवियां हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) अलंभूषादेवी, (२) मिश्रकेशीदेवी, (३) पुण्डरीकिणीदेवी, (४) वारुणीदेवी, (५) आशादेवी, (६) सत्या देवी, (७) ह्रीदेवी, (८) श्री देवी।

सूत्र— भृंगारकलशदर्पणपीठवीजनध्वजचामरातप-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

ष्टसुप्रतिष्ठानिमंगलद्रव्याणि ।।७१।।

अर्थ—आठ मांगलिक मंगलद्रव्य होते । नाम उनके ये हैं:—

(१) भृंगार मंगलद्रव्य, (२) कलशमंगलद्रव्य, (३) दर्पणमंगलद्रव्य (४) पीठ मंगलद्रव्य (५) बीजनमंगल द्रव्य, (६) ध्वजमंगलद्रव्य (७) चामरमंगलद्रव्य, (८) आतपत्र मंगलद्रव्य ।

(१) भृंगारमंगलद्रव्य— टोंटीदार झारी भृंगार कहलाती है ।

(२) कलशमंगलद्रव्य—साधारण कलश ।

(३) दर्पणमंगलद्रव्य – इसमें भूत और भविष्य की प्राणियों की पर्यायें दीखती हैं ।

(४) पीठ मंगलद्रव्य—पीठ सिंहासन को कहते है ।

(५) बीजनमंगलद्रव्य— बीजनसे प्रयोजन पंखेसे है ।

(६) ध्वजामंगलद्रव्य-- झंडा या झंडियोंसे प्रयोजन है ।

(७) चामर मंगलद्रव्य— भगवान के चमर ढोरे जाते हैं ।

(८) आतपत्रमंगलद्रव्य—आतपत्र से प्रयोजनछत्र है ।

सूत्र— आमर्षसर्वौषधाशीर्विषंविषदृष्टिविषविषद्द्वेल विड्जल्लमलौषधय औषधर्द्धयः ।।७२।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अर्थ— औषध ऋद्धियां आठ प्रकार की होती हैं। नाम उनके निम्न प्रकार हैं:—

(१) आमर्ष औषधऋद्धि, (२) सर्वौषध औषधऋद्धि, (३) दृष्टिनिर्विषऋद्धि, (४) वचननिर्विषऋद्धि, (५) क्ष्वेलौषधऋद्धि (६) विडौषधिऋद्धि, (७) जल्लौषधिऋद्धि, (८) मलौषऋद्धि।

[१] आमर्ष औषधऋद्धि— धारीमुनी के हस्तपाद आदिकेस्पर्श से रोगी निरोग हो जाता है।

[२] सर्वौषध औषधर्ऋद्धि—धारीमुनी का स्पर्शक्रिया जल आदि भी रोग नाशक होता है।

[३] दृष्टिनिर्विष ऋद्धि के प्रभाव से मुनिके देखतेही रोगी निरोग हो जाता है।

[४] वचन निर्विष ऋद्धिधारी मुनिके वचनोंसे ही विष उतर जाता है।

[५] क्ष्वेलौषधिधारी मुनि के कफ नासिका मल व आंखों के मल से रोगी निरोग हो जाता है।

[६] विडौषधि ऋद्धिधारी मुनि के मल मूत्र से रोगी निरोग हो जाता है।

[७] जल्लौषधि ऋद्धिधारी मुनिके पसीनेके स्पर्शसे रोगी निरोग हो जाता है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

[८] मलौषधि ऋद्धिसे ओठ दांत आदिके मलसे रोगी निरोग हो जाता है।

सूत्र— पटप्रतीहारासिमद्यकाष्ठयंत्रचित्रकारकुंभकार-भंडारिणःकर्मप्रकृतिदृष्टान्तः ॥७३॥

अर्थ— ज्ञानावरणादिक आठ कर्मप्रकृतियोंके स्वरूप को सरलताके साथ स्पष्ट रूपसे ज्ञान कराने वाले आठ दृष्टान्त हैं। उनके नाम आगे दिये जा रहे हैं:—

(१) पट कर्मप्रकृतिदृष्टान्त (२) प्रतीहार कर्मप्रकृति दृष्टान्त, (३) असिकर्मप्रकृतिदृष्टान्त, (४) मद्यकर्मप्रकृति-दृष्टान्त, (५) काष्ठयंत्रकर्मप्रकृतिदृष्टान्त, (६) चित्रकार-कर्मप्रकृतिदृष्टान्त, (७) कुंभकारकर्मप्रकृतिदृष्टान्त, (८) भंडारीकर्मप्रकृतिदृष्टान्त।

(१) पटकर्मप्रकृतिदृष्टान्त— जैसे प्रतिमापर पर्दा डाल दिया जाये तो वह प्रतिमाको ढक लेता है इसी भांति ज्ञानावरणकर्म ज्ञान को प्रगट नहीं होने देता।

(२) प्रतीहारकर्मप्रकृतिदृष्टान्त—जैसे दरबान अन्दर जाकर राजाके दर्शन नहीं करने देता वैसेही दर्शनावरणी कर्म दर्शनगुण को प्रकट नहीं होने देता।

(३) असिकर्म प्रकृति दृष्टान्त—जैसे शहद या गुड़ लपेटी तलवार खाने वाले को मीठे रसका मजा और जीभ

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

को काट दे दुःख देने वाली होती है। वैसे ही जीभ को सुख दुःख का वेदन करावे सो वेदनीय कर्म है।

(४) मद्यकर्मप्रकृतिदृष्टान्त— जैसे कषायित रस की शराब बुद्धि खराब कर प्राणी को भुलादेती है वैसे ही जो जीवको स्वस्वरूप से विमुख कर उसकी रागात्मक प्रवृत्तिको जाग्रतकर संसार में फंसादेवे सो मोहनीय कर्म है।

(५) काष्ठयंत्रकर्मप्रकृतिदृष्टान्त— जैसे काठ की बेड़ीमें फंसा हुआ कैदी निर्धारित समय से पहिले नहीं छूट पाता उसी में उसे फंसा रहना पड़ता है। वैसे ही जो प्राणी को पर्याय विशेष में निश्चित समय तक रोके रक्खे सो आयु कर्म है।

(६) चित्रकार कर्मप्रकृतिदृष्टान्त—जैसे चित्र बनाने वाला नाना प्रकार के चित्र बनाता है उसी तरह नामकर्म नाना प्रकार के शरीर बनाता है।

(७) कुंभकार कर्मप्रकृतिदृष्टान्त—जैसे कुम्हार छोटे बड़े सब तरह के बर्तन बनाता है वैसे ही गोत्र कर्म इस जीव को ऊंचे व नीचे कुल में पैदा करता है।

(८) भंडारीकर्मप्रकृतिदृष्टान्त— जैसे मालिक या स्वामीकी इच्छा होने पर भी कि अमुक को इतना दान दे दिया जाय और वह देने को तैयार हो जाय।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

उस समय भंडारी या कोषाध्यक्ष देने की झूठमूठ ही अनुपयोगितादि बता विघ्न डाल देता है। वैसे ही जो जीव के भोग-उपभोग आदि सामग्री की उपलब्धि में बाधक हो सो अंतराय कर्म है।

सूत्र—पटप्रतीत्याख्यानावरणक्रोधमानमायालोभतिर्यग्गत्यायुर्नीचैरुद्योताःदेसंयते उदयव्युच्छिन्नाः प्रकृतयः॥७४॥

अर्थ— देशसंयत नायक पाचवें गुणस्थानमें उदय-व्युच्छिन्न प्रकृतियां आठ होती हैं उनके नाम ये हैं:—

१-प्रत्याख्यानावरणक्रोध, २-प्रत्याख्यानावरणमान, ३-प्रत्याख्यानावरणमाया, ४-प्रत्याख्यानावरणलोभ, ५-तिर्यग्गति, ६-तिर्यंगायु, ७-नीचगोत्र, ८-उद्योतनामक· नामकर्म की प्रकृति ये उपरिलिखित आठ कर्म प्रकृतियाँ पाँचवें से आगे के गुणस्थानों में उदय को प्राप्त नहीं होतीं।

सूत्र—देवोगतिदेवगत्यान्नुपूर्व्व्यवैक्रयिकशरीरतदंगोपाङ्गाहारकतंदगोपागंयशकीतिदेवायू'ष्युदयव्युच्छत्तिपश्चाद्' बध व्युच्छिन्नप्रकृतयः॥७५॥

अर्थ—नीचे जिनके नाम लिखे जा रहे हैं ऐसी आठ प्रकृतियां इस प्रकार की हैं कि पहिले उनकी उदय व्युच्छित्ति होजाती है फिर (उनकी) बंधव्युच्छति होती है:-

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

१- देवगति, २-देवगत्यानुपूर्वी, ३-वैक्रयिक-शरीर, ४-वैक्रयिकशरीरांगोपांग, ५-आहारकशरीर, ६-आहारकशरीरांगोपांग, ७-यशःकीर्ति, ८-देवायु।

सूत्र—एकक्षेत्रस्थितयोग्यसाद्यनाद्ययोग्यसाद्यनादीन्यनेकक्षेत्रस्थित योग्यसाद्यनायोग्यसाद्यनादीनिकामर्णिपुद्गल द्रव्याणि ॥७६॥

अर्थ—निम्नलिखित संज्ञा (नाम) वाले आठ तरहके कार्माणपुद्गलद्रव्य हैं:—

१-एकक्षेत्रस्थित-योग्य-सादि-कामर्णिपुद्गलद्रव्य।
२-एकक्षेत्रस्थित-योग्य-अनादि-कामर्णिपुद्गलद्रव्य।
३-एकक्षेत्रस्थित-अयोग्य-सादि-कामर्णिपुद्गलद्रव्य।
४-एकक्षेत्रस्थित-अयोग्य-अनादि-कामर्णिपुद्गलद्रव्य
५-अनेकक्षेत्रस्थित-योग्य-सादि-कामर्णिपुद्गलद्रव्य।
६-अनेकक्षेत्रस्थितयोग्य अनादिकामर्णिपुद्गलद्रव्य।
७-अनेकक्षेत्रस्थितअयोग्यसादिकार्णिपुद्गलद्रव्य।
८-अनेकक्षेत्रस्थितअयोग्यअनादिकामर्णिपुद्गलद्रव्य

सूत्र-त्रयोविंशतिकपंचविंशषड्विंशाष्टाविंशतिकैकोनत्रिंशत्रिंशत्कैकत्रिंशत्कैकानि नामकर्मबंधस्थानानि ॥८७॥

अर्थ—नाम कर्म की प्रकृतियों के आठ बंध स्थान हैं उन बंधस्थानोंमें बंधनेवाली कर्मप्रकृतियोंके गुच्छों की संख्या इस प्रकार है:—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

१-त्रयोविंशतिक (तेईस प्रकृतियों वाला) नामकर्म बंध स्थान, २-पंचविंशतिक, (पच्चीस प्रकृतियों वाला) नामकर्म बंध स्थान, ३-षड्विंशतिक, (छब्बीसप्र कृतियों वाला) नामकर्म बंधस्थान, ४-अष्टाविंशतिक (अट्ठाईस प्रकृतियों वाला) नामकर्मबंध स्थान, ५-एकोनत्रिंशतिक (उनतीस २६ प्रकृतियोंवाला) नामकर्मबंध स्थान, ६-त्रिंशतिक (तीस ३० प्रकृतियोंवाला) नाम कर्मबंधस्थान ७-एकत्रिंशतिक, (इकत्तीस प्रकृतियों वाला नामकर्म बंधस्थन, ८-ऐकिक (एक १ प्रकृति वाला) नामकर्मबंध स्थान।

सूत्र — पंच गुरुभक्ति सूत्र रुचि पर गुण दर्शिता पर प्रशंसा स्वनिन्दा परदोषादर्शिता विनय मंदकषाया उच्चे-र्गोत्रस्याश्रवाः ॥७८॥

अर्थ—उच्च गोत्र के आश्रव के कारण आठ हैं। नाम उनके ये हैं:—

१- पंचगुरुभक्ति २- सूत्ररुचि ३- परगुणदर्शिता ४- परप्रशंसा ५- स्वनिन्दा ६- पर-दोष-अदर्शिता ७- विनय ८- मंदकषाय।

१-पंचगुरु भक्ति- अरहंतादि पंच परमेष्ठी रूप गुरुओं के प्रति हमेशा श्रद्धा भाव रखते हुए उनमें पाये जाने वाले गुणों के प्रति विशेष अनुराग बुद्धि रखना।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

३– सूत्र रुचि- सूत्रादि रूप में पाये जाने वाले जिनागमों एवं जिन-सिद्धान्तों के प्रति विशेष मन का झुकाव होना। उनका पठन पाठन करना।

३- परगुणदर्शिता- दूसरे में पाये जाने वाले गुणों को देखने की आदत होना। उसमें पाये जाने वाले अल्प गुण अच्छी तरह से देखनाः—

४– परप्रशंसा- दूसरे की प्रशंसा हृदय से करना इसमें कृत्रिमता या छल नहीं होना चाहियेः–

५– स्वनिन्दा- स्वयं अनेक सद्गुणों से युक्त होते हुउ भी अपनी लघुता बताना। अपनी प्रशंसा के पुल बांधते हुए निन्दा करना।

६– परदोष अदर्शिताः—दूसरे के दोषों पर ध्यान न देना। अपनी ऐसी आदत बना लेना जिससे दूसरों में दोष रहते हुए भी उस ओर दृष्टि ही न जायः—

७—विनय– व्रत चारित्र ज्ञान आदि से वृद्ध पुरुषों के प्रति आदर भाव रखना विनय कहलाता है।

८— मंदकषाय— आत्मा के अहित करने वाली क्रोधादि कषायों की प्रवृत्ति कम करना।

सूत्र—तद्विपरीता नीचैर्गोत्रस्य ॥७६॥

अर्थ—ऊपर जो उच्चगोत्र के आश्रव के कारण बतलाये हैं उनसे उल्टे आठ कारण नीच गोत्र के कारण

Report any errors at vikasnd@gmail.com

होते हैं। नीच गोत्र के आश्रव के कारणों के नाम इह तरह लिखे जा सकते हैं:-

१- पंचगुरु अभक्ति या कुगुरु भक्ति २- सूत्र अरुचि या कुसूत्ररुचि ३- पर दोष दर्शिता ४- पर निन्दा ५ - स्वप्रशंसा ६- परगुण अदर्शिता ७- अविनय ८- तीव्रकषाय।

इन आठ के स्वरूप, जो कुछ उच्चगोत्र के कारणों का स्वरूप पहिले बतला आये हैं उससे उलटा है। यही कारण है इनसे उल्टे गोत्र (नीच गोत्र) का आश्रव होता है। फिर भी संक्षेप में इनका स्वरूप इस प्रकार है:—

१- पंचगुरु अभक्ति या कुगुरु भक्ति—अरहंतादि पंचपरमेष्ठी गुरुओं के प्रति भक्ति नही होना अथवा जो हतकारी सीख के न देनेवाले होते हुए मात्र दिखावटी खोटे गुरु हैं उनके प्रति श्रद्धा होना।

२- सूत्र अरुचि या कुसूत्र रुचि-जिनागम के अध्ययन मनन आदि के प्रति अरुचि होना अथवा खोटे शास्त्रों के अध्ययन में लगना

३— परगुण अदर्शिता- दूसरे में पाये जाने वाले गुणों को नहो देखना। उनमें भी दोष देखना।

४- पर अप्रशंसा- दूसरे के सद्गुण सम्पन्न होने पर भी उसकी प्रशंसा या तारीफ नहीं करना

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

५– स्वनिन्दा–– स्वयं की हमेशा तारीफों के पुल बांधते रहना या अपने में थोड़े से पाये जाने वाले गुणों की जरुरत से ज्यादा बात करना।

६– परदोष-दर्शिता–दूसरे में पाये जाने वाले दोष को देखना या इस बात की फिराक में रहना कि इस का छोटा सा छोटा दूषण भी देख पाऊं जिससे कि खूब खिल्ली उड़ाई जाय। ऐसे पर छिद्रान्वेषण तत्पर स्वभाव या आदत का नाम ही परदोषदर्शिता है।

(७) अविनय— व्रत चारित्र ज्ञानादि गुणों से वृद्ध व्यक्तियों के प्रति अनादर भाव का रखना।

(८) तीव्र कषाय— प्रायः लाल २ आखों, कुटिल भावों आदि को हमेशा रखते हुए आत्म अहित कारक प्रवृत्ति को बनाये रखना

सूत्र — द्रव्यस्थित्यायाम गुणहान्यायाम नाना गुण हानिदोगुणहान्यन्योन्याभ्यस्त राशि निषेक हारचयाः कर्म-स्थिति रचना ज्ञेयराशयः ॥८०॥

अर्थ— कर्म स्थिति रचना को समझाने के लिये आठ जानने योग्य राशियां हैं। वे आठ राशियाँ इस तरह के नाम वाली हैं:—

(१) कर्मस्थितिरचनाज्ञेय राशि (२) स्थिति-आयाम कर्मस्थिति रचना ज्ञेयराशि (३) गुणहानि– आयाम कर्म

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

स्थिति रचना ज्ञेयराशि (४) नानागुणहानि कर्मस्थिति रचनाज्ञेयराशि (५) दोगुणहानि कर्मस्थितिरचना ज्ञेय राशि (६) अन्योन्याभ्यस्तराशि (७) निषेकहार कर्म स्थिति रचना ज्ञेयराशि (८) चंय- कर्म स्थिति रचना ज्ञेयराशि।

सूत्र— पृथ्व्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायविकलेन्द्रिय संज्ञ्यसंज्ञिपंचेन्द्रिया जीव समासाः ॥८१॥

अर्थ— जीव समास आठ होते हैं। नाम उनके ये हैं-

१- पृथ्वी जीवसमास २- अप जीवसमास ३- तेज जीवसमास ४- वायु जीवसमास ५- वनस्पतिकाय जीवसमास ६- विकलेन्द्रिय जीवसमास ७- संज्ञिपंचेन्द्रिय जीवसमास ८- असंज्ञिपंचेन्द्रिय जीवसमास

सूत्र— एकेन्द्रियविकलेन्द्रियसंज्ञ्यसंज्ञिपंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्ताश्च ॥८२॥

अर्थ— उपरिलिखित आठ जीवसमासों को इस (आगे लिखे जाने वाले) तरीके से भी आठ जीवसमासों के रूप में रखा जा सकता है।

१- एकेन्द्रियपर्याप्त जीवसमास २- एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास ३- विकलेन्द्रियपर्याप्त जीवसमास ४- विकलेन्द्रियअपर्याप्त जीवसमास ५- संज्ञी

Version 1

पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवसमास ६- संज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास ७- असंज्ञीपंचेन्द्रियपर्याप्त जीवसमास ८- असंज्ञीअपर्याप्त जीवसमास।

सूत्र – मिथ्यात्वमनंतानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्या-नावरण संज्वलनसंबंधिषु क्रोधमानमायालोभेष्वेकचतुष्कम् हास्यरत्यरतिशोकयोरेकयुग्ममृत्रिवेदेष्वेकोमोहनीयाष्टकोद-यस्थानप्रकृतयः ॥८३॥

अर्थ— मोहनीय कर्मकी आठ उदयस्थान वाली आठ प्रकृतियाँ होती हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं:—

१- मिथ्यात्व मोहनीयाष्टकोदयस्थान प्रकृति (२-३-४-५) अनंतानुबंधी संबंधी क्रोधमान माया लोभ, अप्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमान माया लोभ, प्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमान माया लोभ, संज्वलन संबंधी क्रोधमानमाया लोभ में से कोई एक सदृश चतुष्क (६-७) हास्य रति, अरति शोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल ८- तीन वेदोंमें से कोई एक वेद।

सूत्र— मिथ्यात्वमप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरण संज्वलनसंबंधिषु क्रोधमानमायालोभेष्वेकत्रिकम् हास्यरत्य-रतिशोकयोरेक युग्मम् त्रिवेदेष्वेको भयेन सह च॥८४॥

अर्थ— मोहनीय कर्म की आठ उदय स्थान वाली ८ प्रकृतियां इस प्रकार की भी हो सकती हैं। उनके नाम इस

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

प्रकार हैं :-

१ मिथ्यात्व मोहनीयाष्टकोदयस्थान प्रकृति (२-३-४) अप्रत्याख्यानावरण सम्बंधी क्रोधमान मायालोभ प्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन संबंधी क्रोधमानमायालोभ में से कोई एक सदृश त्रिक (५-६) हास्य रति, अरति शोक, इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) तीन वेदों में से कोई एक वद (८) भय मोहनीयाष्टकोदयप्रकृति ।

सूत्र—जुगुप्सया सह च ॥८५॥

अर्थ—मोहनीय कर्म की आठ उदयस्थान वाली आठ प्रकृतियां इस तरह से भी हो सकती हैं। उन के नाम इस प्रकार हैं:—

१ मिथ्यात्व मोहनीयाष्टकोदयप्रकृति (२-३-४) अप्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमानमाया लोभ, प्रत्याख्याना वरण सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन सम्बंधी क्रोध मानमायालोभ में से कोई एक सदृश त्रिक (५-६) हास्य रति अरित शोक, इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) तीन वेदों में से कोई एक वेद (८) जुगुप्सा मोहनीयाष्टकोदय स्थानप्रकृति ।

सूत्र—अनंतानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरण संज्वलन क्रोधमानमायालोभेष्वेकचतुष्कम् हास्यरत्यरतिशोक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

योरेकयुग्मम् वेदेष्वेको भयेन सहवा ॥८६॥

अर्थ— मोहनीय कर्म की आठ उदय स्थान वाली आठ प्रकृतियां इस तरह से भी हो सकती हैं। उनके आठ के नाम इस प्रकार हैं :—

(१-२-३--४) अनंत नुबंधी संबंधी क्रोधमानमायालोभ, अप्रत्याख्यानसंबंधीक्रोधमानमायालोभ, संज्वलन सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ में से कोई एक सदृश चतुष्क।
(५-६) हास्य रति अरतिशोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) तीन वेदों में से कोई एक वेद (८) भय मोहनीयअष्टकोदयस्थान प्रकृति।

सूत्र— जुगुप्सया सह वा।८७॥

अर्थ—उपरिलिखि आठ प्रकृतियों में से भयके स्थान पर जुगुप्सा रख देने से भी मोहनीय कर्म की आठ उदय स्थान वाली आठ प्रकृतियाँ बन जाती हैं। उनके विविक्त२ नाम इस प्रकार हैं:—

(१-२-३-४) अनंतानुबंधी सम्बन्धी क्रोधमानमाया लोभ, अप्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, प्रत्याख्यानावरण सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन संबंधी क्रोधमानमायालोभ में से कोई एक सदृश चतुष्क (५-६)हास्य रति, अरति शोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) तीन वेदों में से कोई एक वेद (८)जुगुप्सा मोहनीयाष्टकोदयस्थानप्रकृति।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

सूत्र— सम्यङ्मिथ्यात्वमप्रत्याख्यानप्रत्याख्याना वरणसंज्वलनसम्बन्धिषु क्रोधमानमायालोभष्वेकत्रिकम् हास्यरत्यरतिशोकयोरेकयुग्ममूवेदेष्वेको भयेन सह ॥८८॥

अर्थ— मोहनीय कर्म की आठ उदयस्थानवाली आठ प्रकृतियों की रचना इस तरह भी हो सकती है। उनके अलग २ नाम इस प्रकार हैं:—

[१] सम्यङ्मिथ्यात्व नामक मोहनीयाष्टकोदयस्थान प्रकृति (२–३–४) अप्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमान-मायालोभ, प्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमानमाया, लोभ संज्वलन सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, में से कोई एक सदृश त्रिक [५-६] हास्यरति अरतिशोक इनदो युगलों में से कोई एक युगल (७) तीन वेदों में से कोई एक वेद (८) भय मोहनीयाष्टकोदयस्थानकर्मप्रकृति।

सूत्र— जुगुप्सया सह ॥८९॥

भय के स्थान पर जुगुप्सा को जोड़ देने से भी आठ उदय स्थान प्रकृतिवाले मोहनीय कर्म की आठ प्रकृतियां हो जाती हैं। उनके पृथक् पृथक् नाम इस प्रकार हैं:—

[१] सम्यङ्मिथ्यात्व उदयस्थानप्रकृति (२–३–४) अप्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोधमानमाया लोभ, प्रत्या-ख्यानावरण वरण सम्बंधी क्रोधमानमामालोभ, संज्वलन सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ में से कोई एक सदृशत्रिक (५–

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

६] हास्य रति, अरति शोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) तीन वेदों में से कोई एक वेद (८) जुगुप्सा नामक उदय स्थान प्रकृति।

सूत्र— सम्यक्प्रकृत्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरण संज्वलनसम्बन्धिषु क्रोधमानमायालोभेष्वेकत्रिकम् हास्यरत्य रतिशोकयोरेकयुग्मम् वेदेष्वेको भयेन सह वा ॥६०॥

अर्थ— मोहनीय कर्म के आठ प्रकृतिवालेउदयस्थान कीआठ प्रकृतियां इस प्रकार से भी हो सकती हैं:—

(१) सम्यक् प्रकृति (२-३-४) अप्रत्याख्यानावरण सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ, प्रत्याख्यानावरण सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ में से कोई एक सदृशत्रिक (५-६) हास्य रति अरति शोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) तीन वेदों में से कोई एक वेद (८) भय प्रकृति।

सूत्र— जुगुप्सया सह वा ॥६७॥

अर्थ—मोहनीय कर्म केआठ प्रकृति वाले उदयस्थान की आठ प्रकृतियां इस प्रकार से भी हो सकती हैं। उपरि लिखित आठ प्रकृतियां में से प्रथम सात वे की वे हीं किन्तु आठवीं भय प्रकृतिके स्थान जुगुप्सा प्रकृति को जोड़ लिया जाय। इनके पृथक् २ नाम रखना चाहें तो वे इस प्रकार होंगे :—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१) सम्यक् प्रकृति [२–३–४] अप्रत्याख्यानावरण सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन सम्बंधी क्रोधमान-मायालोभ में से कोई एक सदृशत्रिक (५–६) हास्य रति अरति शोक इनदो युगलों में से एक युगल (७) तीनवेदों में से कोई एक वेद (८) जुगुप्सा प्रकृति।

सूत्र— अप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणसंज्वलनक्रोध-मानमायालोभष्वेकत्रिकम् हास्यरत्यरतिशोकयोरेकयुग्मम् भयजुगुप्से वेदेष्वेको वा ॥६२॥

अर्थ—मोहनीय कर्म की आठ प्रकृति वाले उदयस्थान की आठ प्रकृतियों की गणना इस प्रकार से भी हो सकती है। नाम उनके ये हैं :—

[१–२–३ अप्रत्याख्यानावरण सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ प्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोध मान माया लोभ संज्वलन सम्बंधी क्रोधमानमायालोभ में से कोई एक सदृश त्रिक (४–५) हास्यरति, अरति शोक, में से कोई एक युगल (६) भय प्रकृति (७) जुगुप्सा प्रकृति (८) तीन वेदों में से कोई एक वेद।

सूत्र— सम्यक्प्रकृतिप्रत्याख्यानावरण संज्वलन सम्बंधीक्रोध मानमायालोभेष्वेकद्विकम् हास्यरत्यरतिशोकयोरेक युग्मम् भयजुगुप्से वेदष्वेको मोहनीयाष्टकोदयस्थानप्रकृतयः

अर्थ— मोहनीय कर्मकी आठ प्रकृतिवाले उदयस्थान

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

कीआठप्रकृतियां निम्नलिखित रूप से भी हो सकती हैं:— (१) सम्यक् प्रकृति (२—३) प्रत्याख्यानावरण सम्बंधी क्रोधमानमाया लोभ, संज्वलन सम्बधी क्रोधमानमाया लोभ में कोई सदृश एक एक (४—५) हास्य रति, अरति शोक इन दो युगलों मेंसे कोई एक युगल (६) भय प्रकृति (७) जुगुप्सा प्रकृति (८) तीन वेदों में से कोई एक वेद।

सूत्र— अस्तिवस्तुद्रव्यप्रमेयागुरुलघुप्रदेशित्वानि चेतनामूर्त्तत्वाभ्यां सह जीवस्य सामान्यगुणाः ॥६४॥

अर्थ—जीव के सामान्यगुण आठ हुआ करते हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं:—

(१) अस्तित्व सामान्यगुण (२) वस्तुत्व सामान्यगुण द्रव्यत्व सामान्य गुण (४) प्रमेयत्व सामान्यगुण (५) अगुरुलघु सामान्यगुण (६) प्रदेशित्व सामान्य-गुण (८) अमूर्तत्व सामान्य गुण।

(१) अस्तित्व सामान्यगुण—जिस शक्ति या गुण के निमित्त से द्रव्व का कभी नाश न हो उसको अस्तित्व गुण कहते हैं

(२) वस्तुत्व सामान्यगुण—जिस शक्ति या गुण के निमित्त से द्रव्य में अर्थ क्रिया हो जैसे घड़े की अर्थ क्रिया जल धारण

(३) द्रव्यत्व सामान्यगुण—जिस शक्ति के निमित्त

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

से द्रव्य सर्वदा एकसा न रहे किन्तु जिसकी पर्यायें बदलती रहें।

(४) प्रमेयत्व सामान्य गुण—जिस शक्ति या गुण के निमित्तसे द्रव्य किसी न किसी ज्ञानका विषय हो।

(५) अगुरुलघु सामान्य गुण—जिस शक्ति या गुणके निमित्तसे द्रव्यकी द्रव्यता कायम रहे। अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप न परिणमे एक गुण भी दूसरे गुण रूप न हो जाये।

(६) प्रदेशित्व सामान्य गुण—जिस शक्ति या गुण के निमित्त से द्रव्य का कुछ न कुछ आकार अवश्य रहे

(७) चेतनत्व सामान्यगुण—जीव द्रव्यमें सामान्य ज्ञान दर्शन शक्ति को चेतनत्व सामान्यगुण कहते हैं

(८) अमूर्तत्व सामान्यगुण—रूपरसगंध स्पर्शरहित सामान्य अवस्था अमूर्तत्व सामान्यगुण है

सूत्र—अचेतनमूर्तत्वाभ्यां सह पुद्गलस्य ॥९५॥

अर्थ—ऊपर जो जीव के आठ सामान्यगुण बतलाये हैं उनमें से प्रथम छह गुण और अंतिम दो गुणों के स्थान पर अचेतनत्व तथा मूर्तत्व गुणों का सन्निवेश कर देने से पुद्गल के आठ सामान्य गुण हो जाते हैं। आठ गुणों के नाम अलग २ इस प्रकार से हैं:—

(१) अस्तित्व सामान्य गुण जिस शक्ति के निमित्त

Version 1

से द्रव्यका कभी नाश न हो सदा द्रव्य रहे।

(२) वस्तुत्व सामान्यगुण—जिस शक्तिके निमित्त से द्रव्यमें अर्थ क्रिया हो जैसे कलम से लिखते हैं।

द्रव्यत्व सामान्यगुण—जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य सर्वदा एकसा न रहे उसकी पर्यायें बदलती रहें जैसे सोनेके अनेक गहने बनते जाते हैं।

प्रमेयत्व सामान्यगुण—जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्य किसी न किसी ज्ञानके द्वारा अवश्य जाना जाये।

अगुरुलघुत्व सामान्यगुण—जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्यकी द्रव्यता कायम रहें पुद्गलका अन्यन्ताभाव कभी नहीं होता।

प्रदेशित्व सामान्यगुण—जिस शक्ति के निमित्तसे द्रव्यका कुछ न कुछ आकार अवश्य हो।

अचेतनत्व सामान्यगुण—पुद्गलधर्म अधर्म आकाश काल में अचेतनता सामान्य गुण है।

मूर्तत्व सामान्यगुण—पुद्गलद्रव्य में रूप रस गंध वर्ण सामान्य रूप से अवश्य है।

सूत्र—अचेतनामूर्तत्वाभ्यां सह धर्मद्रव्यस्य ॥६६॥

अर्थ—ऊपर पुद्गल द्रव्यों के आठ सामान्यगुणकहे गये या विवेचित किये गये हैं। इन आठ में से प्रथम छः को ग्रहण करते हुए अंतिम दो गुणों के स्थान पर अचते-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

नत्व और अमूर्तत्व का सन्निवेश (रख) कर देने से आठ सामान्य गुण धर्म द्रव्य है बन जाते हैं। उनके अलग २ ये हैं:—

[१] अस्तित्व सामान्यगुण [२] वस्तुत्वसामान्यगुण [३] द्रव्यत्व सामान्यगुण [४] प्रमेयत्व सामान्यगुण [५] अगुरुलघुत्व सामान्यगुण [६] प्रदेशित्व सामान्यगुण [७] अचेतनत्व सामान्यगुण [८] अमूर्तत्व सामान्यगुण इन आठ गुणों में से प्रथम छह के लक्षण ऊपर बतलाये जा चुके हैं अतः वहाँ स्वरूप यहाँ भी समझ लेना चाहिये वशेष स्वरूप अंतिम दो गुणों का यह है:—

(७) अचेतनत्व सामान्यगुण—धर्मद्रव्य में अचेतनता सामान्य गुण है।

(८) अमूर्तत्व सामान्यगुण—धर्मद्रव्य में रूप रस गंध स्पर्श नही होते अतः उसमें अमूर्तपना है।

सूत्र—अधर्मस्य ॥६७॥

अर्थ—धर्म द्रव्य के आठ सामान्य गुणों के समान अधर्म द्रव्य के भी आठ सामान्य गुण होते हैं। उन आठ गुणों को अलग अलग इस तरह से कहा जासकता है:—

(१) अस्तित्व-अधर्म-सामान्यगुण (२) वस्तुत्व-अधर्म सामान्यगुण (३) द्रव्यत्व-अधर्म-सामान्यगुण (४) प्रमे-

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

यत्व-अधर्म-सामान्यगुण (५) अगुरुलघुत्वअधर्म सामान्य गुण (६) प्रदेशित्व अधर्म सामान्यगुण (७) अचेतनत्व अधर्म सामान्य गुण (८) अमूर्तत्व-अधर्म सामान्यगुण इन आठ के लक्षण धर्म द्रव्य के आठ सामान्यगुणों के लक्षण के समान समझ लेना चाहिये।

सूत्र—आकाशस्य ॥६६॥

अर्थ—अधर्म द्रव्य के समान आकाश के भी आठ सामान्यगुण हैं। नाम उनके ये हैं:—

[१] अस्तित्व आकाश सामान्य गुण [२] द्रव्यत्व आकाश सामान्यगुण [३] द्रव्यत्व आकाश सामान्यगुण [४] प्रमेयत्व आकाश सामन्यगुण [५] अगुरुलघुत्व आकाश सामान्यगुण [६] प्रदेशित्व आकाश सामान्य गुण [७] अचेतनत्व आकाश सामान्यगुण [८] अमूर्तत्व आकाश सामान्यगुण आकाश द्रव्य के सामान्य गुणों का स्वरूप अधर्म द्रव्य के गुणों के स्वरूप के समान समझ लेना चाहिये।

सूत्रः—कालस्य ॥६६॥

अर्थः—आकाश के समान कालद्रव्य के भी आठ सामान्यगुण होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

[१] अस्तित्व काल सामान्यगुण [२] वस्तुत्व काल सामान्यगुण [३] द्रव्यत्व काल सामान्यगुण [४]

Report any errors at vikasnd@gmail.com

प्रमेयत्व काल सामान्यगुण [५] अगुरुलघुत्व काल सामान्यगुण [६] प्रदेशित्व काल सामान्यगुण [७] अचेतनत्व काल सामान्यगुण [८] अमूर्तत्व काल सामान्य गुण आकाश द्रव्य के गुणों के स्वरूप के समान इनके स्वरूप भी समझ लेना चाहिये। विशेषता इतनी ही है कि आकाश के बजाय इनका सम्बन्ध काल द्रव्य से होता है।

सूत्र—शब्दार्थोभय शुद्धिकाल विनयोपधानबहुमाना-निन्हवाः सम्यग्ज्ञानाङ्गाः।

अर्थ—सम्यादर्शन के समान सम्यग्ज्ञान के भी आठ अंग होते हैं। अंगो के नाम इसप्रकार से हैं:—

(१) शब्द शुद्धि (२) अर्थशुद्धि (३) उभयशुद्धि (४) काल (५) विनय (६) उपधान (७) बहुमान (८) अनिन्हव।

(१) शब्द शुद्धि—ज्ञान के साधन भूत शब्दों का ठीक २ शुद्ध रूपसे जानकारी होना।

(२) अर्थ शुद्धि—शब्दोंका जो अर्थ है उससे विपरीत अर्थ न करते हुए ठीक २ अर्थोंकी जानकारी होना।

(३) उभयशुद्धि—ज्ञानोत्पादन में सहायभूत शब्द और अर्थ दोनोंका सामंजस्य रखते हुए ठीक २ ज्ञान होना।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(४) काल—आगमविहित समय में संध्या ग्रहण आदि प्रतिषेधित समय को छोड़कर ज्ञानार्जन के लिये सचेष्ट होना।

(५) विनय—ज्ञान साधन सामग्री के प्रति विनय भाव रखना।

(६) उपधान—आगमदिक के पठन पाठन को किसी प्रतिज्ञा के साथ पढ़ना।

(७) बहुमान—ज्ञान के साधनभूत आगमादिक के प्रति अति आदर सन्मानादि के भाव रखना।

(८) अनिन्हव—छल आदि भावों को दूर कर वस्तु स्वरूप की जानकारी को बताने निन्हव (छिपाव) नहीं करना।

सूत्र—चर्मादि पंचेन्द्रियवृहत्पशु भ्रष्टाचारिरजस्वला-रोमपत्तनखप्रतिज्ञाधातिस्पर्शाः भोजन प्रकरणे स्पर्शना-न्तरायाः

अर्थ—भोजन विषयक अंतरायों में आगे लिखे जाने वाले आठ अंतराय स्पर्शन (छूना) जन्य होते हैं:—

(१) चर्मादिस्पर्श (२) पञ्चेन्द्रिय वृहत्पशुस्पर्श (३) भ्रष्टाचारीस्पर्श (४) रजस्वला स्पर्श (५) रोमस्पर्श (६) पत्त स्पर्श (७) मखस्पर्श (८) प्रतिज्ञा धातिस्पर्श

१- चर्मादिस्पर्श—मरे हुए जीवों के अपवित्र चमड़े

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

आदि का स्पर्श [सम्बन्ध या संसर्ग] होना।

२- पञ्चेन्द्रियवृहर्पशुस्पर्श—कुत्ता सुअर गाय भैंस आदि का स्पर्श होना

३- भ्रष्टाचारी स्पर्श—जिनका आचरण व्यवहार आदि लोकगर्हित हो ऐसों का स्पर्श होना।

४- रजस्वलास्पर्श—भोजन ग्रहण करते हुए रजस्वला स्त्री आदि का स्पर्श होना अंतराय केलिये कारण है।

५- रोमस्पर्श—भोजन लेते समय टूटे बाल [रोम] का स्पर्श हो जाना, या भोजन में निकल आना।

६- पक्षस्पर्श—भोजन लेते समय पक्षियों के पंख आदि अपवित्र वस्तुओं का स्पर्श हो जाना।

७- नख स्पर्श—भोजन लेते समय अपवित्र कटे हुए नाखून आदि का संसर्ग हो जाना।

८- प्रतिज्ञाघातिस्पर्श—ऐसी किसी वस्तु का संबन्ध या स्पर्श हो जाना जिससे ग्रहण की हुई कोई प्रतिज्ञा में ठेस पहुंचे या उसका घात हो।

सूत्र—बालरसायनतनुविषभूतापनयनक्षारतंत्रशालाकिशल्यचिकित्साश्चिकित्साः।

अर्थ—आठ तरह की चिकित्सायें होती हैं। नाम उनके ये हैं:—

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१) बालचिकित्सा (२) रसायनचिकित्सा (३) तनु विषचिकित्सा (४) भूतापनयनचिकित्सा (५) क्षारचिकित्सा तंत्रचिकित्सा (७) शालाकिचिकित्सा (८) शल्यचिकित्सा।

(१) बालचिकित्सा— जो अपनी वेदना या रोग पीड़ा को स्पष्ट रूप से नहीं कह सकते ऐसे बालकों की चिकित्सा करना।

(२) रसायन चिकित्सा—शारीरिक रोग व निर्बलता दूर करने के लिये च्यवनप्राश, लोह आदि रासायनिक औषधियों के प्रयोग विशेष नीति से करना।

(३) तनुविषचिकित्सा—शरीर सम्बन्धित विष के दूर करने की चिकित्सा।

(४) भूतापनयनचिकित्सा—भूत व्यंतरादि जन्य पीड़ा को दूर करने सम्बन्धी चिकित्सा।

(५) क्षारचिकित्सा—शरीर में क्षार पदार्थ की कमी पूर्ति के लिये यवक्षार सज्जीखार नौसादर पंचलवण आदि विधि से सेवन करना।

(६) तंत्रचिकित्सा—प्रायः कर बच्चों वा स्त्रियों के रोग दूर करने का जो टोटका विशेषविधिसे किये जायें।

(७) शालाकि चिकित्सा—उपस्थ इन्द्रिय व मलद्वार में सलाई प्रवेश कर मूत्र व मल को ठीक प्रकार चालू कराना

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(८) शल्यचिकित्सा—फोड़ा आदि के दुख को दूर करने के लिये डाक्टरी सावधानी से चीर फाड़ करके रोग मुक्त करना,

सूत्र—समितिगुप्त्यावश्यकस्वाध्यायविहाराहारप्रतिलेखनवचना नामागन्तुकमुनिपरीक्षाः।

अर्थ—अन्य स्थान से आये हुए नव आगन्तुक मुनि की परीक्षा के हेतु आठ बातें होती हैं। अर्थात् नवागन्तुक मुनि की जांच, संघ में प्रविष्ट होने के लिये, आठ प्रकार से की जा सकती है:—

(१) समिति-परीक्षा (२) गुप्ति-परीक्षा (३) आवश्यक परीक्षा (४) स्वाध्याय परीक्षा (५) विहार परीक्षा (६) आहार परीक्षा (७) प्रतिलेखन परीक्षा (८) वचनपरीक्षा।

(१) समिति-परीक्षा—प्रवेशार्थी मुनि समितियों का पालन यथावत रीति से करता है या नहीं इस रूप से जांच करना।

(२) गुप्ति-परीक्षा—नवीन समागत मुनि तीन गुप्तियों का पालन सुचारु रीत्या करता है या नहीं इस रूप से परीक्षण करना।

(३) आवश्यक परीक्षा—आये हुए मुनि पद के लिये आवश्यक कर्तव्यों का पालन ठीक तरह से करते हैं या नहीं इस रूप से देखना।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(४) स्वाध्याय परीक्षा—स्व जो आत्मा, उसके स्वरूपाववोध के प्रति भी मुनि सचेष्ट है या नहीं इस रूप से देखना।

(५) विहारपरीक्षा—विहार के पूर्व, विहार में और विहार के बाद करणीय क्रियाओं का मुनि यथावतपालन करता है या नहीं इस रूप से देखना।

(६) आहार-परीक्षा—विविध रसों से युक्त भुक्ति के प्रति ग्रध्रता के भाव हैं या नहीं अथवा विधि पूर्वक आहार ग्रहण करते हैं या नहीं इस रूप से मुनि को देखना।

(७) प्रतिलेखन-परीक्षा—प्रमाद या त्रुटि वश हुई गलतियों का या अपराधों का लेखन गुरु के समक्ष ठीक ठीक करता है या नहीं इस दृष्टि से देखना।

(८) वचन-परीक्षा—हित-मित-मनोहर वचनों का व्याख्या न वार्तालापादि में प्रयोग मुनि करता है या नहीं, इस रूप से देखना।

सूत्र— दूतब्राह्मणव्याघ्रलोक गजेराजपुत्रपथिकराज्ञां सन्देहे श्रावकोदिताः कथाः।

अर्थ—एक बार एक निर्ग्रन्थ परम तपस्वी दिगम्बर साधु एक श्रावक के यहां आये। चूंकी मुनि सामायिक में बैठ गये श्रावक मुनि के पास से चला गया। जहां मुनि बैठे थे वहीं श्रावक के बहुमूल्य मणिमुक्तादि एक छोटी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

लाल पिटारी में रक्खे हुए थे। चील आदि किसी पक्षी ने उसे मांस पिण्ड समझ लिया और वह चोंच में दबा झाड़ पर जा बैठा। मुनि सामायिक पूरी कर चल दिये। श्रावक वापिस वहाँ आया जहाँ महाराज बैठे थे और वहाँ अपनी जवाहरतों की पेटी को न पा महाराज पर उसे सन्देह हो गया तथा उन को ढूंढने चल दिया। कुछ दूर जा महाराज से मिला और बड़ी विनय पूर्वक वापिस चलने के लिये आग्रह करने लगा। घर आकर कथाओं के रूप में मुनि पर चोरी का दोषारोपण करते हुए उन्हें उपकार के बदले अपकार करने वाली कहने लगा। वे कथाएं जिनके द्वारा श्रावक ने अपने कुटिल भावों को व्यक्त किया आठ थीं। उन आठ कथाओं के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) दूतकथा (२) ब्राह्मणकथा (३) व्याघ्रकथा (४) लोककथा (५) गजकथा (६) राजपुत्रकथा (७) पथिककथा (८) राजा की कथा। इन कथाओं का पूरा विवरण पुराण से जान लेना चाहिये। यहां विस्तार भय से ज्यादा न लिखते हुए मात्र उनका नामोल्लेख कर दिया है।

सूत्र—वानरनकुलवैद्यवृषभतापसवृत्त सिवर्णीसपर्णां-संदेहापनोदाय मुन्युदिताः कथाः।

अर्थ—पूर्व सूत्र संबंधित कथा का सिलसिला यहां भी है। श्रावक के भावों को जानकर मुनि ने भी अव्यक्त

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

रूप से कथाओं के द्वारा उसके मन में उठे हुए संदेह को दूर करने के लिये कथा रूप में उत्तर दिया। मुनि महराज ने जो कथाएं कहीं थीं उनकी भी संख्या आठ है। उन आठ के नाम ये हैं।

(१) वानरकथा २) नकुल कथा (३) वैद्यकथा (४) वृषमकथा (५) तापसकथा (६) वृक्ष कथा (७) सिवणी कथा (८) सर्प कथा।

इन कथाओं का पूरा विवेचन पुराण में किया गया है जिन्हें इस विषय को और विस्तार से जानना हो उन्हें वहां से पढ़ लेना चाहिये।

सूत्र—कुलरूबलैश्वर्यश्रुतप्रज्ञालाभ तपोमानवशार्तमरणानि मानवशार्तमरणानि।

अर्थ—प्राणियों का मरण शांति से न होते हुए प्रायः आर्त [दुःख संक्लेश आदि] परिणामों से हुआ करता है। ऐसे परिणामों के होने में क्रोधमानमायालोभादि कषाय निमित्त हुआ करती हैं। जिस कषाय की प्रमुखता रहती है उस कषाय का नाम जोड़ आर्तमरण कहलाने लगता है। यहां मानवश-आर्तमरणों का विवेचन किया जारहा है। मान या मद चूंकि आठ तरह के होते हैं अतः उनके वश से होने वाले जो आर्तमरण हैं वे भी आठ संख्या वाले हैं। नाम उनके पृथक २ इस प्रकार हैं—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

[१] कुलमानवश–आर्तमरण [२] रूप मान वश–आर्तमरण [३] बलमानवश–आर्तमरण [४] ऐश्वर्यमान वश–आर्तमरण (५) श्रुतमानवश आर्तमरण [६] प्रज्ञामान वश– आर्तमरण (७) लाभमानवश आर्तमरण [८) तप मान वश– आर्तमरण ।

(१ कुलमानवशार्तमरण – अच्छे कुल में पैदा होने का जो (घमण्ड) उसके वश से दुःखित परिणामों से मरण का होना ।

(२) रूपमानवशार्तमरण– लोकमोहक रूपसे युक्त होने का जो मद उसके वशसे होने वाले दुःखित परिणामों से मरण (देहत्याग) का होना ।

(३) बलमान वशार्तमरण – बल से प्रयोजन शक्ति का है । उसके निमित्त से होने वाले मान के कारण दुखी परिमाणों से शरीर त्याग होना ।

(४) ऐश्वर्यमानवशार्तमरण – लोक प्रभावोत्पादक ठाठ बाठ से उत्पन्न होने वाले मान के कारण जो दुःखी परिणामों के साथ शरीर छोड़ना ।

(५) श्रुतमानवशार्तमरण – बहुत से शास्त्रों के पठन पाठन से उत्पन्न होने वाले श्रुतज्ञान के मानसे होने वाले दुःखी परिणामोंसे युक्त मरण होना ।

(६) प्रज्ञामानवशार्तमरण – निसर्ग से ही स्फुराय

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

माण विशेषबुद्धि के घमंड से अंत होने वाले दुःखी परिणामों से मरण होना ।

(७) लाभमानवशार्तमरण – आकस्मिक या साहजिक रूप से विशेष धनधान्यसन्मानादि की प्राप्ति से उत्पन्न होने वाले घमण्ड से दुःखी परिमाणामों से युक्त मरण होना

(८) तपोमानवशार्तमरण – अत्यन्त कठिन तपस्या की साधना से उत्पन्न होने वाले घमण्ड के कारण अंत में दुःखी परिणामों के साथ मरण होना ।

सूत्र–ध्यातृध्यानफलध्येयक्षेत्रस्वामिकालविधयो ध्यानाङ्गाः ।

अर्थ—किसी एक चिन्त्य पदार्थ की ओर मन को, सब ओर से खीच, लगाना ध्यान कहलाता है । इस तरह का ध्यान ज्यादा से ज्यादा अंतर्मूहूर्त तक रहता है । इससे अधिक नहीं । ध्यान के आठ अंग होते हैं । नाम उनके इस प्रकार से हैं :—

(१) ध्याता (२) ध्यान (३) ध्यानफल (४) ध्येय (५) क्षेत्र (६) स्वामि (७) काल (८) विधि ।

(१) ध्याता – जो पुरुष या प्राणी अपने मन को किसी एक चिन्त्य पदार्थ में लगाता है वह ध्याता है ।

(२) ध्यान – चिन्त्य पदार्थ के चिंतवन की क्रिया

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

का नाम ध्यान है ।

शारीरिक बाधा और मानसिक विकल्पों से निपट कर शान्त एकान्त स्थान में अंतरंग बहिरंग शुद्धि से ध्यान करना ।

(३) ध्यानफल — चिन्तवन करनेवालेको चिन्तवन से जो निराकुलतादि की प्राप्ति होती है वह ध्यान फल है ।

(४) ध्येय :—चिंतवन करने वाला जिसकी चिंतना करता है वह ध्येय है ।

(५) क्षेत्र – वह स्थान जहां रह ध्याता रह चिंतना करता है ।

(६) स्वामि – जो लौकिकसुखकीचाह छोड़े शास्त्रज्ञान बढ़ाने में लगा रहे, व्रत पाले वही ध्यान कर सकेगा ।

(७) काल – वह समय जिसमें चिन्तवनक्रिया को ध्याता करता हैं ।

[८] विधि-प्रातः दोपहर सायं और किसी भी समय नियत समय तक रागद्वेष छोड़ आत्मा या परमात्मा या किसी तत्व के चिन्तवन में लगना

सूत्र—ॐणमोअरहंताणंइत्यष्टाक्षरमंत्रवर्णाः ।

अर्थ—आठ अक्षर वाले मंत्र के आठ अक्षर प्रथक प्रथक रूप से ये हैं :—

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

ॐ ण मो अ र हं ता णं ।

सूत्र—ॐ णमो आइरियाणं ।

अर्थ—ॐ ण मो आ इ रि या णं इस प्रकार से यह भी आठ अक्षरों वाला मंत्र है।

सूत्र—ॐ णमो उवज्झायाणं ।

अर्थ—ॐ ण मो उ व ज्झा या णं इस तरह से यह आठ अक्षरों वाला मंत्र है

सूत्र—ॐ उपाध्यायेभ्यो नमः ।

अर्थ—ॐ उ पा ध्या ये भ्यो न मः यह भी आठ अक्षरों वाला मंत्र है।

सूत्र—ॐ नमः सर्वसिद्धेभ्यः ।

अर्थ—ॐ न मः स र्व सि द्धे भ्यः रूप आठ अक्षरों वाला यह मंत्र है।

सूत्र—ॐ सम्यग्ज्ञानाय नमः ।

अर्थ—ॐ स म्यग् ज्ञा ना य न मः इस तरह यह भी आठ अक्षरों वाला मंत्र है।

सूत्र—सम्यग्दर्शनाय नमः ।

अर्थ—यह आठ अक्षरों वाला मंत्र है। इसके प्रथक् अक्षर इस प्रकार हैं–स म्यग् द र्श ना य न मः ।

सूत्र—सम्यक् चारित्राय नमः ।

अर्थ—उपरिलिखित आठ अक्षर वाले मंत्र के प्रथक २

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

अक्षर ये हैं :- स म्यक् चा रि त्रा य न मः

सूत्र—जलजंघातंतुफलपुष्पबीजांकुराकाशश्रेणिगतिकुशलताश्चारणर्द्धयः।

अर्थ—गति में कुशलता को प्रदान करने वाली चारण ऋद्धियाँ आठ होती हैं। नाम उनके ये हैं :-

(१) जलचारणऋद्धि (२) जंघाचारणऋद्धि (३) तंतुचारणऋद्धि (४) फल चारणऋद्धि (५) पुष्प चारणऋद्धि [६] बीज चारणऋद्धि [७] अंकुर चारण ऋद्धि [८] आकाशश्रेणि चारण ऋद्धि

[१] जल चारणऋद्धि—जलकायिक जीवों की बिना विराधना किये पानी पर पृथ्वी की तरह चले जाना।

[२] जंघा चारणऋद्धि – चार अंगुल पृथ्वी से अधर ऊँचे होकर घुटनों को मोड़े बिना सीधे चले जाना।

(३ तंतु चारणऋद्धि—मकड़ी के तन्तुओं के ऊपर इस तरह चले जाना कि तन्तुओं की विराधना न हो।

(४) फल चारणऋद्धि—फल संबन्धी त्रसस्थावर जीवों की बिना विराधना किये उन पर गमन करना।

(५) पुष्प चारणऋद्धि—फूलों में रहने वाले जीवों की विराधना न करके फूलों पर पैर रखते जिस ऋद्धि से जावे।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) बीज चारणऋद्धि–गेहूँ चने आदि की बालों पर पैर रखते चले जाना और उन सम्बन्धी जीवों की विराधना न हो।

(७) अंकुर चारणऋद्धि के प्रभाव से तृणों के अग्र भाग पर इस तरह चले जाते हैं कि उनके पैर रखने से तृण संबन्धी बनस्पतिकायिक जीवों की विराधना नहीं होती।

(८) आकाश चारणऋद्धि के प्रभाव से आकाश में मुनिराज पक्षियों की तरह किन्तु (बिना अंगोपांग हिलाये) नभचर जीवों की बिना विराधना किये चले जाते हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

॥ नवमोऽध्यायः ॥

सूत्र — जीवाजवश्रवबंधपुण्यपापसंवरनिर्जरामोक्षाः पदार्थाः ॥१॥

अर्थ—नौ पदार्थ होते हैं, नाम उनके इस प्रकार से हैं:—

(१) जीव पदार्थ (२) अजीवपदार्थ (३) आश्रव पदार्थ (४) बंध पदार्थ (५) पुण्य पदार्थ (६) पाप पदार्थ (७) संवरपदार्थ (८) निर्जरापदार्थ (९) मोक्ष पदार्थ

(१) जीव पदार्थ—जिसमें चेतना, उपयोग या प्राण (इन्द्रिय बल, आयु श्वासोच्छ्वासं) पाये जांय।

(२) अजीव पदार्थ—जीव से ठीक विपरीत स्वरूप

Version 1

वाला जो हो। अर्थात् जो जड़ हो, चेतना रहित हो, प्राण रहित हो।

(३) आश्रव पदार्थ—कर्मरूप परिणत पुद्‌गल परमाणुओं का आत्मा में आना।

(४) बंध पदार्थ—आत्मा और कर्म रूप परिणत पुद्‌गल परमाणुओं का बिलकुल एकमेक हो बंध जाना, एक के प्रदेशों का दूसरे के प्रदेशों से मिल जाना।

(५) पुण्य पदार्थ—जो अच्छे या शुभ कर्मों से होने वाला हो। आत्मा को शुभ-फल-प्राप्ति जिससे होती हो।

(६) पाप पदार्थ—बुरे कर्मों से होने वाला आत्मा को पतन और दुःख के झमेले में डालने वाला जो हो।

(७) संवर पदार्थ— आत्मानुभवन के कारण पुण्य-पाप प्रवृत्ति नहीं होने से कर्मों का आना रुक जाना।

(८) निर्जरा पदार्थ—कर्मों का चाहे वे पूर्व संचित हों या नवीन बंधे हुये हों, तपस्यादि के द्वारा आत्मा से संबंध विच्छेद कर देना। कर्मों का झड़ जाना।

(९) मोक्ष पदार्थ—सम्पूर्ण कर्मों से छुटकारा प्राप्त कर आत्मा का शुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर लेना।

सूत्र—सुदर्शनामोघसुप्रबुद्धयशोधरसुभद्रसुविशालसुमन-ससौमनसप्रीतिकरा ग्रैवेयकेन्द्रकाः ॥२॥

अर्थ—सोलहस्वर्गों के ऊपर पाये जाने वाले नौ

Report any errors at vikasnd@gmail.com

ग्रैवेयकों को नौ इन्द्रक विमान होते हैं। नाम पृथक् पृथक् उनके इस प्रकार हैं :—

(१) सुदर्शन ग्रैवेयकेन्द्रक (२) अमोघ ग्रैवेयकेन्द्रक (३) सुप्रबुद्ध ग्रैवेयकेन्द्रक (४) यशोधर ग्रैवेयकेन्द्रक (५) सुभद्र ग्रैवेयकेन्द्रक (६) सुविशाल ग्रैवेयकेन्द्रक (७) सुमनस ग्रैवेयकेन्द्रक (८) सौमनस ग्रैवेयकेन्द्रक (९) प्रीतिकर ग्रैवेयकेन्द्रक।

सूत्र — चक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनावरणानि निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयो दर्शनावरणानि ॥३॥

अर्थ—आत्मा के दर्शन गुण को ढकने वाले दर्शनावरणी के नौ भेद हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं—

(१) चक्षुर्दर्शनावरण (२) अचक्षुर्दर्शनावरण (३) अवधि दर्शनावरण (४) केवलदर्शनावरण (५) निद्रा (६) निद्रानिद्रा (७) प्रचला (८) प्रचलाप्रचला (९) स्त्यानगृद्धि।

(१) चक्षुर्दर्शनावरण— उस कर्म का नाम है जो चक्षु इन्द्रिय से होने वाले सामान्य अवलोकन न होने दे।

(२) अचक्षुर्दर्शनावरण— उस कर्म का नाम है जिस से चक्षु इन्द्रिय के अलावा अन्य चार इन्द्रियों और मन

http://sahjanandvarnishastra.org/

से पदार्थ का सामान्य अवलोकन न हो सके।

(३) अवधिदर्शनावरण— अवधिज्ञान से पहले होने वाले सामान्य अवलोकन को जो कर्म न होने देवे।

(४) केवलदर्शनावरण – केवलज्ञान के पहले नहीं, अपितु साथ में होने वाले सामान्य अवलोकन को जो कर्म न होने देवे।

(५) निद्रादर्शनावरण – जिस कर्म के उदय से निद्रा हो उसे निद्रादर्शनावरण कहते हैं। निद्रा से तात्पर्य शयन से है जो कि मद, खेद, श्रम आदि की थकान को दूर करने के लिये किया जाता है।

(६) निद्रानिद्रादर्शनावरण – नींद के बाद फिर फिर के नींद आने को निद्रानिद्रा कहा जाता है। इसके वशीभूत हो, जीव अपनी आंखों को खोलने की इच्छा रखते हुये भी खोल नहीं पाता।

(७) प्रचलादर्शनावरण – बैठे बैठे नेत्र शरीर आदि में विकार करने वाली, शोक तथा थकावट से समुत्पन्न नींद प्रचला कहलाती है। इसके निमित्त से जीव सोता हुआ भी जागता रहता है।

(८) प्रचलाप्रचलादर्शनावरण - प्रचला के ऊपर प्रचला के आने को प्रचलाप्रचला कहते हैं। इससे सोती हुई हालत में मुंह से लार बहने लग जाती है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) स्त्यानगृद्धिदर्शनावरण – जिस निद्रा के द्वारा सोती हुई अवस्था में भी नाना प्रकार के आर्त कर्म कर डाले और जगने पर यह मालूम ही न हो कि उसने क्या कर डाला ?

सूत्र—दर्शनावरणप्रथमबंधस्थानप्रकृतयः ॥४॥

अर्थ – ऊपर जो दर्शनावरणी कर्म की नौ प्रकृतियां हैं, वे ही दर्शनावरणी कर्म के प्रथमबंधस्थान की नौ प्रकृतियाँ हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं :–

(१) चक्षुर्दर्शनावरण (२) अचक्षुर्दर्शनावरण (३) अवधिदर्शनावरण (४) केवलदर्शनावरण (५) निद्रा-दर्शनावरण (६) निद्रानिद्रादर्शनावरण (७) प्रचलादर्शना-वरण (८) प्रचलाप्रचलादर्शनावरण (९) स्त्यानगृद्धिदर्शना वरण।

सूत्र—दर्शनावरणनवकसत्वस्थानप्रकृतयः ॥५॥

अर्थ – दर्शनावरणी कर्म के नौ प्रकृति वाले सत्व-स्थान की प्रकृतियां नौ होती हैं, नाम उनके ये हैं:—

[१] चक्षुर्दर्शनावरण [२] अचक्षुर्दर्शनावरण [३] अवधिदर्शनावरण [४] केवलदर्शनावरण [५] निद्रा दर्शनावरण [६] निद्रानिद्रादर्शनावरण [७] प्रचलादर्शना-वरण [८] प्रचलाप्रचलादर्शनावरण [९] स्त्यानगृद्धिदर्शना-वरण।

सूत्र – केवलज्ञानदर्शन क्षायिकदानलाभभोगोपभोग-

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

वीर्यसम्यक्त्वचारित्राणि क्षायिकभावाः ॥६॥

अर्थ – क्षय से मतलब, यहां कर्मों के पूर्णरूप से विनाश होने से हैं। तथा जो भाव कर्मों के क्षय से होते हैं, उन्हें क्षायिक भाव कहते हैं। क्षायिक भाव नौ होते हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं:—

(१) केवलज्ञान (२) केवलदर्शन (३) क्षायिकदान (४) क्षायिकलाभ (५) क्षायिकभोग (६) क्षयिकउपभोग (७) क्षायिकवीर्य (८) क्षायिकसम्यक्त्व (९) क्षायिक चारित्र।

(१) केवलज्ञान – ज्ञानवरणी कर्म समूल क्षय से उत्पन्न होने वाला जो भाव।

(२) केवलदर्शनभाव – जो दर्शनावरणी कर्म के समूलक्षय से उत्पन्न हो।

(३) क्षायिकदान— दानान्तराय के पूर्ण क्षय से उत्पन्न होने वाला भाव।

(४) क्षायिकलाभ – जो लाभान्तराय के पूर्ण नाश से हो।

(५) क्षायिकभोग – भोगान्तराय के पूर्णतया नाश हो जाने से जो हो।

(६) क्षायिक उपभोग – उपभोगान्राय के पूर्ण नाश से जो भाव हो।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(७) क्षायिकवीर्य — वीर्यान्तराय के पूर्ण क्षय से जो भाव हो।

(८) क्षायिकसम्यक्त्व – सम्यक्त्व की विराधन करने वाली सात प्रकृतियाँ [अनन्तानुबन्धी क्रोध मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्यकमिथ्यात्व, सम्यकप्रकृति होती है। इन सात के क्षय से होने वाला भाव।

[९] क्षायिक चारित्र – आत्मा के चारित्रगुण की घात करने वाली मोहनीय कर्म की इक्कीस प्रकृतियां [अप्रत्याख्यानावरणादि इक्कीस] होती हैं। उनके क्षय से जो भाव होता है सो क्षायिक चारित्र कहलाता है।

सूत्र – हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सापुं स्त्रीनपुंसक वेदा नोकषायाः ॥७॥

अर्थ – कषायों से आत्मा के गुणों का घात होता है किन्तु इनसे जिनके कि कांम आगे दिये जा रहे हैं आत्मा के गुणों का पूरा पूरा घात नहीं हो पाता अतः इनको नोकषाय या किंचित्कषाय कहते हैं। ये नौ होती है या नौ भेद हैं, नाम इस प्रकार से हैं :—

(१) हास्यनोकषाय (२) रति नोकषाय (३) अरति नोकषाय (४) शोकनोकषाय (५) भय नोकषाय (६) जुगुप्सा नोकषाय (७) पुंवेद (८) स्त्रीवेद (९) नपुंसकवेद।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(१) हास्य नोकषाय— जिस कर्म के उदय से हंसी आवे।

(२) रति नोकषाय—जिस कर्म के उदय से विषयों में प्रेम हो।

(३) अरतिनोकषाय—जिसके उदय से विषयों में प्रेम न हो।

(४) शोक नोकषाय—जिस कर्म के उदय से चिन्ता शोक रूप परिणाम बने रहें।

(५) भय नोकषाय—जिस कर्म के उदय से डर रूप परिणाम बने रहें।

(६) जुगुप्सा नोकषाय—जिस कर्म के उदय से ग्लानि [घिन] रूप परिणाम हों।

(७) पुंवेद—जिस कर्म के उदय से स्त्री के साथ रमण करने के भाव या परिणाम हों।

(८) स्त्रीवेद—उस कर्म का नाम है जिसके उदय से पुरुष के साथ रमण करने के भाव हों।

(९) नपुंसकवेद—जिस कर्म के उदय से स्त्री तथा पुरुष दोनों के साथ रमण करने की इच्छा हो।

सूत्र—तद्वशार्तमरणानिनोकषायवशार्तमरणानि ॥८॥

अर्थ—ऊपर जो नोकषाय के नौ भेद बताये हैं, उन में से जिस नोकषाय के वशसे आर्तमरण होता है वह उस

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

नाम का नोकषायवश-आर्तमरण कहलाता है। इस प्रकार नोकषायवश-आर्तमरण के भी नौ भेद हो जाते हैं। नाम उनके पृथक् पृथक् रूप से इस प्रकार से हैं:—

(१) हास्य नोकषायवश-आर्तमरण (२) रति नोकषाय-वशआर्तमरण (३) अरति नोकषायवश-आर्तमरण (४) शोक नोकषायवश-आर्तमरण (५) भय नोकषायवश-आर्तमरण (६) जुगुप्सा नोकषायवश-आर्तमरण (७) पुंवेद नोकषाय वश-आर्तमरण (८) स्त्रीवेद नोकषायवश-आर्तमरण (९) नपुंसकवेद नोकषायवश-आर्तमरण।

जैसा कि बतलाया जा चुका है जब जिस नोकषाय के वशसे आर्तपरिणामों से युक्त हो मरण होता है तब वह उस नाम की नोकषायवश आर्तमरण वाला कहलाता है।

सूत्र--त्रसबादरपर्याप्तिप्रत्येकशुभसुस्वरसुभग स्थिरादेया स्त्रसनवकम् ॥९॥

अर्थ—त्रस को आदि लेकर आगे लिखी जाने वाली नामकर्म की प्रकृतियां त्रस नवक कहलाती हैं। नाम इस प्रकार हैं:—

त्रस, बादर, पर्याप्ति, प्रत्येक, शुभ, सुस्वर, सुभग, स्थिर, आदेय।

[१] त्रस नामकर्म—जिस कर्म के उदय से द्वीन्द्रि-यादिक पर्यायों में जीव का जन्म हो।

Version 1

[२] बादर नामकर्म—जिस कर्म के उदय से ऐसे शरीर की प्राप्ति हो जो स्वयं दूसरों को रोके तथा दूसरों से रोका जा सके।

[३] पर्याप्तिनामकर्म—जिस कर्म के उदय से अपने योग्य पर्याप्ति की पूर्णता प्राप्त हो।

[४] प्रत्येक नामकर्म—जिस कर्म के उदय से शरीर का एक ही जीव स्वामी हो।

[५] शुभनामकर्म—जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव सुन्दर हों।

[६] सुस्वर नामकर्म—जिस कर्म के उदय से उत्तम स्वर (आवाज) हो, दूसरे शब्दों में ऐसा स्वर जो कर्णप्रिय हो।

[७] सुभग नामकर्म—जिस कर्म के उदय से दूसरे जीवों को अपने से प्रीति उत्पन्न हो।

[८] स्थिर नामकर्म—जिस कर्म के उदय से शरीर स्थित धातुएं (रस, रुधिर, मांस, मेदा, हाड़, मज्जा वीर्य) और उपधातुएं (वात, पित्त, कफ, शिरा, स्नायु, चाम, जठराग्नि) अपने अपने स्थान पर स्थिरता को प्राप्त हों।

[९] आदेय नामकर्म—प्रभा सहित शरीर जिस कर्म के उदय से होता है उस कर्म का नाम आदेय है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

सूत्र— द्वित्रिचतुरिन्द्रियपर्याप्तनिर्वृत्यपर्याप्तलब्ध्य-पर्याप्ता विकलेन्द्रियजीवसमासाः ॥१०॥

अर्थ—विकल हैं इन्द्रिय जिन्हों की ऐसे विकलेन्द्रिय जीवों के नौ जीवसमास होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) द्वीन्द्रियपर्याप्त जीवसमास (२) त्रीन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास (३) चतुरिन्द्रियपर्याप्त जीवसमास।

पर्याप्त से प्रयोजन उन जीवों से है जिनको अपने अपने योग्य पर्याप्तियों की पूर्णता प्राप्त हो चुकी हो। इसके सम्बन्ध से विकलेन्द्रिय जीवों के उपरिलिखित तीन जीव समास होते हैं।

(४) द्वीन्द्रियनिर्वृत्यपर्याप्त जीवसमास (५) त्रीन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्त जीवसमास (६) चतुरिन्द्रिय निर्वृत्यपर्याप्त जीवसमास निर्वृत्यपर्याप्तक से प्रयोजन उन जीवों से है जिनकी शरीरपर्याप्ति अभी पूर्ण नहीं हुई है किन्तु आगामी भविष्य में नियम से पूर्ण होने वाली है। इस सम्बन्धी जीवसमास तीन ऊपर लिखे गये हैं।

(७) द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवसमास (८) त्रीन्द्रिय-लब्ध्यपर्याप्तजीवसमास (९) चतुरिन्द्रियलब्ध्यपर्याप्त जीवसमास। लब्ध्यपर्याप्तक से उन जीवों का ग्रहण होता है जिनके अभी तक एक भी पर्याप्ति पूर्ण नहीं हुई हो और न भविष्य में ही पूर्ण होने की आशा हो इस संबंध

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

जीवसमास भी तीन हैं जो कि ऊपर लिखे गये हैं। इस प्रकार कुल विकलेन्द्रिय जीव सम्बन्धी नौ जीवसमास हुआ करते हैं।

सूत्र—स्पर्शन रसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रेन्द्रियवचः काय-बलायु रूच्छ्वासाः पर्याप्तासंज्ञिपञ्चेन्द्रिय प्राणाः ॥११॥

अर्थ—पर्याप्त असंज्ञी (मनरहित) पञ्चेन्द्रिय जीवों के निम्नलिखित नौ प्राण होते हैं:—

स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, वचन बल, काय बल, आयु, श्वासोच्छ्वास।

सूत्र—सचितशीतसंवृताः सेतरा मिश्राश्च योनयः ॥१२॥

अर्थ—सम्मूर्च्छन आदि जन्मों की नौ प्रकार की योनियाँ होती हैं। योनि का अर्थ होता है जीवों की उत्पत्ति स्थान। जन्म और योनि का एक ही अर्थ न होते हुये उनमें आधार आधेय का अन्तर है अर्थात् योनि आधार है और उसमें होने वाला जन्म आधेय है। नौ योनियों के नाम ये हैं:—

सचित्तयोनि, अचित्तयोनि, शीतयोनि, उष्णयोनि, संवृतयोनि, विवृत्तयोनि, सचित्ताचित्तयोनि, शीतोष्णयोनि, संवृत विवृतयोनि।

(१) सचित्त योनि—चित्त (जीव) सहित योनि का नाम सचित्तयोनि है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(२) अचित्तयोनि–प्राणी रहित योनि को अचित्त योनि कहते हैं।

(३) शीत योनि–ऐसा उत्पत्ति स्थान जो शीत हो।

(४) उष्ण योनि–ऐसा उत्पत्ति स्थान जो उष्ण हो।

(५) संवृत योनि–ऐसा जीव का उत्पत्ति स्थान जो किसी के देखने में न आये, अर्थात् जो ढकी हुई हो।

(६) विवृत योनि–जीव के उस उत्पत्ति स्थान का नाम विवृत है जो सबके देखने में आये।

(७) सचित्ताचित्त योनि–ऐसा उत्पत्ति स्थान जो कुछ सजीव हो और कुछ जीव रहित हो।

(८) शीतोष्ण योनि– जो कुछ शीत और कुछ उष्ण इस तरह से मिला हुआ उत्पत्ति स्थान हो।

(९) संवृतविवृत योनि– जिस उत्पत्ति स्थान का कुछ भाग ढका हुआ और कुछ खुला हुआ हो।

सूत्र–जघन्यमध्यमोत्कृष्टपरीत युक्तासँख्यातासंख्याता असंख्याताः ॥१३॥

यह सूत्र वस्तुतः आगे लिखा जाना चाहिये था तीसवे सूत्र के बाद।

अर्थ–असंख्यातसंख्या नौ प्रकार की होती है। उनके नाम इस प्रकार से हैं:–

(१) जघन्यपरीत–असँख्यात (२) मध्यम-परीत

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

असँख्यात (३) उत्कृष्ट परीत-असंख्यात (४) जघन्ययुक्त असंख्यात (५) मध्यमयुक्त-असंख्यात (६) उत्कृष्ट-युक्त असंख्यात (७) जघन्य असंख्यातासंख्यात (८) मध्यम असंख्यातासंख्यात (९) उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात ।

सूत्र—अर्हसिन्द्धाचार्योपाध्यायसाधुजिनबिम्बमन्दिरागमधर्मादेवताः ॥१४॥

अर्थ–(१) अर्हद्देवता (२) सिद्धदेवता (३) आचार्य-देवता (४) उपाध्यायदेवता (५) साधुदेवता (६) जिनबिम्ब देवता (७) जिनमन्दिर देवता (८) जिनागमदेवता (९) जिन धर्म देवता, ये नौ देवता हैं जो कि पूज्य हैं उपासना योग्य हैं और हैं वंदनीय ।

[१] अर्हद्देवता– उन आत्माओं का ग्रहण अर्हन्त पद से होता है जो चार घातिया कर्मों का विनाश कर केवल ज्ञान लक्ष्मी के भरतार बन जाते हैं । अनन्त चतुष्टयों से युक्त भी वे हुआ करते हैं । सर्वदर्शी और सर्वज्ञ हो सत्वों को समीचीन शांति प्रदायक देशना को वे दिया करते हैं । ऐसी आत्माएं पूज्य होती हैं और नौ देवताओं में उनका समावेश होता है ।

[२] सिद्धदेवता– आठ प्रकार के कर्म मल से रहित हो जो अष्ट गुणों से युक्त हो गये हों जो निरञ्जन निराकार हो सततः आत्मीक आनन्द में पगे रहते हों

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

और निराकुल हो सच्चे सुख का अनुभवन करते रहते हों ऐसे परमात्मपद में प्रतिष्ठित सिद्ध हुआ करते हैं। वे भी तो नौ देवता में से एक हैं।

[३] आचार्य देवता– परम दिगम्बर निर्ग्रंथ मुनियों में से जो स्वयं पंच प्रकार के आचार का पालन करते हों तथा दूसरे संघस्थ व्यक्तियों से शक्त्यनुसार पालन कराते हों वे आचार्य कहलाते हैं। दीक्षा देने का अधिकार इन को ही रहता है।

[४] उपाध्याय देवता–परम दिगम्बर दशा सम्पन्न नौ ये भी हुआ करते हैं किन्तु इनका मुख्य काम संघस्थ प्राणियों को अध्यापन कराना होता है। शास्त्रों के अच्छे विद्वान होने के नाते इनके पास मुनि श्रावक आदि अध्ययन के लिये आते हैं।

[५] साधुदेवता– दश प्रकार के बाह्य और चौदह प्रकार के अन्तरंग परिग्रह से रहित दिगम्बर दशापन्न मुनि साधु कहलाता हैं। नाना प्रकार के आसन, व्रत, नियमोपवास आदि के द्वारा हमेशा शरीर से ममत्व घटा आत्मीक उन्नति में लगे रहते हैं।

[६] जिनबिम्ब देवता–रागद्वेषादि के जयी, परम तेज सम्पन्न, शुद्ध, केवलज्ञान-दशा-युक्त आत्मा के स्वरूप को बतलाने वाली मूर्ति की स्थापना की जाती है, उसकी

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

प्रतिष्ठादि विधि कर उसे पूज्य बनाया जाता है उसका नाम जिनबिम्ब है। यह स्वर्ण, रजत, सप्तधातु आदि की, स्फटिक, हीरा, पन्ना मणिमुक्तादि की, या पाषाण की हुआ करती है। यह भी नौ देवताओं में से एक है।

[७] जिनमन्दिर देवता-- उपरिलिखित स्वरूप वाली जिनेन्द्र भगवान् की मूर्ति जिस भवन में विराजमान होती है उस मन्दिर (गृह) का नाम जिनमन्दिर है।

[८] जिनागम देवता—सर्वज्ञ, वीतराग, हितोपदेशी जो जिनेन्द्र भगवान, उनके द्वारा प्रणीत, पूर्वापर विरोध रहित, कुमार्ग का खण्डन करने वाला शास्त्र होता है। वही, चूंकि जिन द्वारा प्रतिपादित होता है, जिनागम कहलाता है।

[९] जिनधर्म देवता—आत्मा भी परमात्मापद को प्राप्त कर उत्तमतम दशापन्न हो जाता है। इस तथ्य को बतलाने वाले, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप धर्म को ही जिनधर्म कहते हैं। समस्त प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव को रखने की प्रेरणा प्रदान करना इसका मुख्य मन्त्र है। ऐसा जीवोद्धारक समस्त सत्वहितकारक धर्म नौ देवताओं में से एक है।

सूत्र — मिथ्यात्वसासादनमिश्राविरतसम्यक्त्वदेश संयम प्रमत्ताविरताप्रमत्तापूर्वानिवृत्तिकरणाः बादरकषाय

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

गुणस्थानानि ॥१५॥

अर्थ-बादर (स्थूल) कषाय सम्बन्धी नौ गुणस्थान होते हैं। नामावली उनकी इस प्रकार हैं:—

(१) मिथ्यात्व गुणस्थान (२) सासादन गुणस्थान (३) मिश्रगुणस्थान (४) अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान (५) देशसंयम गुणस्थान (६) प्रमत्तविरत गुणस्थान (७) अप्रमत्तविरत गुणस्थान (८) अपूर्वकरण गुणस्थान (९) अनिवृत्ति करण गुणस्थान।

इन नौ गुणस्थानों तक ही बादर कषाय का सद्भाव पाया जाता है। इनके आगे गुणस्थानों में नहीं।

सूत्र-आलोचना प्रतिक्रमणोभय विवेकव्युत्सर्गतपश्छेद परिहारोपस्थापनाः प्रायश्चित्तानि ॥१६॥

अर्थ—प्रायः और चित्त इन दो शब्दों को जोड़ने से प्रायश्चित्त शब्द बनता है। प्रायः का अर्थ है अपराध और चित्त का अर्थ है शुद्धि। इस प्रकार प्रायश्चित से प्रयोजन प्रमाद अथवा अज्ञान से लगे हुये दोषों की शुद्धि करना है। इस प्रायश्चित्त के नौ भेद होते हैं। नाम उनके ये हैं :—

(१) आलोचना प्रायश्चित्त (२) प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त (३) उभय प्रायश्चित्त (४) विवेक प्रायश्चित्त (५) व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त (६) तप प्रायश्चित्त (७) छेद प्रायश्चित्त

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(८) परिहार प्रायश्चित्त (९) उपस्थापन प्रायश्चित्त ।

(१) आलोचना प्रायश्चित्त- प्रमाद के कारण लगे हुये अपने दोषों को गुरु के समीप जाकर बिना किसी छल कपट के कह देना।

(२) प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त- मेरे द्वारा किये गये या हुये अपराध मिथ्या हों ऐसा कहना।

(३) उभय प्रायश्चित्त- आलोचना तथा प्रतिक्रमण इन दोनों का करना।

(४) विवेक प्रायश्चित्त- आहार पानी का समय की सीमा बांधते हुये त्याग करना।

(५) व्युत्सर्ग प्रायश्चित्त-कायोत्सर्ग करना।

(६) तप प्रायश्चित्त—उपवासादि को करना।

(७) छेद प्रायश्चित्त-एक दिन, सप्ताह, पक्ष, मास आदि की दीक्षा का छेद करना। ऐसी दीक्षा छेद से पारस्परिक मुनियों में पूज्यत्व की दृष्टि से अन्तर पड़ जाता है। वही जो दीक्षा छेद के पहले दूसरों के द्वारा नमस्करणीय था कभी कभी दीक्षा छेद के कारण उसे उन दूसरों को नमस्कार करने के लिये बाध्य होना पड़ता है।

(८) परिहार प्रायश्चित्त- अपराध विशेष होने पर दिन पक्ष महीने आदि नियमित समय की सीमा पर्यन्त संघ से निकाल या पृथक कर देना। यह भी एक कठोर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

दण्ड है।

(६) उपस्थापन प्रायश्चित्त–सम्पूर्ण दीक्षा का छेद कर फिर से नवीन दीक्षा देना।

यहां यह ध्यान में रखना चाहिये कि इन प्रायश्चित्तों का प्रयोग संघ के प्रधान आचार्य किया करते हैं। वे ही इसके अधिकारी हैं।

सूत्र– मनकृतकारितानुमोदनवचनकृतकारितानुमोदन कायकृतकारितानुमोदनानि नवकोऽयः ॥१६॥

अर्थ–नौ कोटियां हुआ करती है। इनके समूह के को ही नवकोटि संज्ञा प्रदान की जाती है। पृथक पृथक नाम उनके ये हैं:–

(१) मनकृतकोटि (२) मनकारितकोटि (३) मनानुमोदिनकोटि (४) वचन कृतकोटि (५) वचन कारितकोटि (६) वचनानुमोदित कोटि (७) कायकृतकोटि (८) कायकारितकोटि (६) कायानुमोदितकोटि।

सूत्र — आदित्यार्चिमालिनीवैरवैरोचनसोमसोमरूपांकस्फटिकान्यनु दिशविमानानि ॥१७॥

अर्थ–उर्ध्वलोक में सोलहस्वर्ग और नवग्रैवेयकों के ऊपर नवअनुदिशविमान अवस्थित या पाये जाते हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं:–

(१) आदित्य अनुदिशविमान (२) अर्चअनुदिश-

Version 1

विमान (३) अर्चमालिनी अनुदिशविमान (४) वैर अनुदिशविमान (५) वैरोचन अनुदिशविमान (६) सोम अनुदिशविमान (७) सोमरूप अनुदिशविमान (८) अङ्क अनुदिशविमान (९) स्फटिक अनुदिशविमान।

सूत्र—जलचन्दनाक्षतपुष्पचरुदीपधूपफलार्घ्याणि पूजन सर्वद्रव्याणि ॥१८॥

अर्थ—गुणगरिमा से युक्त आत्माओं के प्रति श्रद्धा आदर आदि के भाव प्रदर्शन करने के लिये द्रव्य [वस्तु] का आलंबन स्तुतिपाठ आदि किया जाता है। यही पूजन कहलाती है। इसका उद्देश्य एक मात्र यही रहता कि उन जैसे गुणों की सम्पन्नता प्राप्त हो जावे। लोक में पूजा नव द्रव्यों से की जाती है। नाम ये हैं उनके:—

(१) जल नायक पूजाद्रव्य (२) चन्दन नामक पूजा-द्रव्य (३) अक्षत नामक पूजाद्रव्य (४) पुष्पनामक पूजा द्रव्य (५) नैवेद्य नामक पूजाद्रव्य (६) दीपनामक पूजा द्रव्य (७) धूप नामक पूजाद्रव्य (८) फलनामक पूजा द्रव्य (९) उपरिलिखित आठ द्रव्यों के सम्मिश्रण रूप अर्घ्य नामक पूजा द्रव्य।

सूत्र – विजयाचलसुभद्र सुप्रभसुदर्शनानंदीनन्दिमित्र रामचन्द्रबल्देवाः गतचतुर्थकाले बलभद्राः ॥१९॥

अर्थ—अवसर्पिणीकाल के चौथे विभाग में जोकि बीत

Report any errors at vikasnd@gmail.com

चुका है, सरल परणामी, बलशाली, गौरवर्ण के नौ बलभद्र होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

विजय, अचल, सुधर्म या सुभद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, नन्दी, नन्दिमित्र, रामचन्द्र, बलदेव या पद्म।

सूत्र—त्रिपृष्टद्विपृष्टस्वयंभूपुरुषोत्तमपुरुषसिंह पुण्डरीक-दत्तलक्ष्मणकृष्णा नारायणाः ।

अर्थ—बलभद्रों के लघुभ्राता, तीन खण्ड के अधिपति नौ नारायण इसी काल के (अवसर्पिणीकाल जो कि वर्तमान हैं) चौथे आरे दुःषमसुषमा में हो चुके हैं। उन नौ नारायणों के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) त्रिपृष्ट नामक नारायण (२) द्विपृष्ट नामक नारायण (३) स्वयंभू नामक नारायण (४) पुरुषोत्तम नामक नारायण (५) पुरुषसिंह नामक नारायण (६) पुरुषपुण्डरीक नामक नारायण (७) पुरुषदत्त नामक नारायण (८) लक्ष्मण नामक नारायण (९) कृष्ण नामक नारायण।

सूत्र — अश्वग्रीवतारकमेरुक निशुंभमधुवलिप्रहरण-रावणजरासिंधवः प्रतिनारायणाः ।

अर्थ—ये नौ प्रतिनारायणों की नामावली है। इन नौ का घात कर उपरिलिखित सूत्र में बताये गये व्यक्ति नारायण पदवी को प्राप्त करते हैं। जब तक नारायण प्रतिनारायणों का आमना सामना नहीं होता प्रतिनारायण

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

चक्र का अधिपति हुआ करता है। नाम ये हैं :—

अश्वग्रीव, तारक, मेरुक, निशुंभ, मधुकैम्भ, बलि, प्रहरण, रावण, जरासिन्ध।

इन नौ में से प्रथम आठ खेचर विद्याधर थे जबकि जरान्सिध नौवां प्रतिनारायण भूमिगोचरी था।

सूत्र—भीममहाभीमरूद्रमहारुद्र कालमहाकालदुर्मुख-नरकमुखाधीमुखा नारदाः।

अर्थ—अवसर्पिणी के दुःषमा सुषमा नामक चौथे काल में हो चुके नौ नारदों के नाम यहां लिखे जा रहे हैं। ये बाल ब्रह्मचारी तो हुआ ही करते हैं किन्तु बड़े बड़े तत्कालीन राज्यों में परस्पर कलह कराकर लड़ाने में इन्हें आनन्द आया करता था। नाम ये हैं:—

(१) भीम नामक नारद (२) महाभीम नामक नारद (३) रुद्र नामक नारद (४) महारुद्र नामक नारद (५) काल नामक नारद (६) महाकाल नामक नारद (७) दुर्मुख नामक नारद (८) नरकमुख नामक नारद (९) अधोमुख नामक नारद।

सूत्र— कालमहाकालमाणवकपिंगलनैसर्पपद्मपाण्डुक-शंखनानारत्नानिचक्रिनिधयः।

अर्थ—अवसर्पिणी के चौथे काल में जहाँ बलभद्र नारायण आदि होते हैं वहीं उनसे पूर्व चक्रवर्ती हुआ करते

Report any errors at vikasnd@gmail.com

हैं। ये भरत और ऐरावत क्षेत्रों के छः खण्डों के अधिपति हुआ करते थे। ये महान वैभव, प्रताप, पुण्य आदि से युक्त होते थे। यहां उनकी नवनिधियों के नाम बताये जा रहे हैं, नाम इस प्रकार हैं :—

कालनिधि, महाकालनिधि, माणवक, पिंगलनिधि, नैसर्पनिधि, पद्मनिधि, पाण्डुनिधि, शंखनिधि, नानारत्न-निधि।

सूत्र—पत्तिसेनासेनामुखगुल्मवाहिनीपृतनाचम्वनीकि-न्यक्षौहिण्यः सेनाभेदाः।

अर्थ—राष्ट्र की सुरक्षा एव शान्ति को स्थिर बनाये रखने के लिये सेना का होना अत्यावश्यक है। उसी सेना के भेदों को यहां गिनाया जा रहा है।

पत्ति, सेना, सेनामुख, गुल्म, वाहिनी, पृतना, चमू, अनीकिनी, अक्षौहणी।

सूत्रः—प्रतिग्रहोच्चैः स्थानपादप्रक्षालनपूजाप्रणाम नोवाक्कायाहारशुद्धयः पात्रदानात्रसो भक्तयः।

अर्थ—व्रतसंयमादि से सम्पन्न व्यक्ति पात्र कहलाते हैं उस समय जब उन्हें आहार दान आदि दिया जाता है। चारित्र की तरतमता से पात्रों में उत्तम मध्यम जघन्यपना आता है। इस सूत्र में अट्ठाईस मूलगुणधारी मुनि, जो कि उत्तमपात्र माने जाते हैं, को आहारदान देते

Version 1

समय की जाने योग्य नौ भक्तियों को दिखाया जा रहा है। नवभक्तियों के नाम ये हैं:-

प्रतिग्रह भक्ति, उच्चैःस्थान भक्ति, पादप्रक्षालन भक्ति, प्रजाभक्ति, प्रणामभक्ति, मनशुद्धि भक्ति, वचनशुद्धि भक्ति, कायशुद्धि भक्ति, आहारशुद्धि भक्ति।

(१) प्रतिग्रहभक्ति—चारित्र के परिपालन के लिये शरीर टिका रहे इस दृष्टि को ले चर्या के लिये निकले मुनि को आदर और श्रद्धा से ग्रहण करना, हे स्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ आदि कह उनको आहार के लिये ठहराकर अगवानी करना।

(२) उच्चैस्थान—विनय पूर्वक घर में प्रवेश करा ऊंचे स्थान पर उन्हें बिठालना।

(३) पादप्रक्षालन—पात्र के पैरों को सावधानी के साथ धोना या पखारना।

(३) पूजा—अष्टद्रव्यमिश्रित अर्घ से समागत पात्र की पूजा करना।

(५) प्रणाम—पूजा के बाद प्रदक्षिणा के पात्र (मुनि) को नमस्कार करना।

(६) मन शुद्धि—मन में कषाय कलुषितपरिणामों को न करते हुये निर्मल भावनाओं को रखना।

(७) वचनशुद्धि—जैसा मन है उसके अनुसार प्रिय

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

मनोहारि वचनों को उपयोग में लाना। वे कर्कश, परुष और कर्णकटु न हों इसका ध्यान रखना।

(८) कायशुद्धि—स्नानादि कर शुद्ध धुले हुये वस्त्रों को धारण करना अपने शरीर को पवित्र रखना, आदि बातें कायशुद्धि के अन्तर्गत हैं।

(९) आहार शुद्धि—देखभाल कर, शोधबीन कर अन्नादिक सामग्री से पवित्रतापूर्वक आहार बनाना। सब वस्तुयें ढकी मुंदी रखना आदि बातें आहार शुद्धि के अन्तर्गत हैं।

सूत्र—स्त्र्यसहवासरागानवलोकनमिष्टावचन पूर्वभोगास्मरणावृष्याभुक्तियशृङ्गाराशय्याशयन कामाकथोनोदरभोजनानि शीलवृत्तयः।

अर्थ—जैसे लहलहाते हुये धान्य सम्पन्न खेतों की सुरक्षा के लिये उनके चारों ओर बागड़ रहती है वैसे ही विषय वासनादि रूप विकट वन्यपशु शीलव्रत रूप वल्लरियों को चट न कर जाये इसके लिये नौ शीलवृत्तियाँ बागड़ का काम करती हैं। उन नौ बातों या वृत्तियों के नाम ये हैं:—

(१) स्त्रीअसहवास-शीलवृत्ति (२) राग-अनवलोकन शीलवृत्ति (३) मिष्ट-अवचन शीलवृत्ति (४) पूर्वभोग-अस्मरण शीलवृत्ति (५) वृष्यअभुक्ति शीलवृत्ति

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) अश्रृंगार शीलवृत्ति (७) अशय्याशयन शीलवृत्ति (८) काम-अकथा शीलवृत्ति (९) उनोदरभोजन-शीलवृत्ति इनसे शीलव्रत परिपालम में दृढ़ता तो मिलती ही है साथ ही साथ व्रती सीमाका उल्लंघन भी नहीं कर सकता है। विषय वासना पास में फटक नहीं सकतीं।

(१) स्त्री-असहवास—ब्रह्मचर्य व्रत के धारण करने वाले अपने आपको स्त्रियों के सहवास से दूर रखना चाहिये।

(२) राग-अनवलोकन—स्त्रियों को अनुराग दृष्टि से नहीं देखना।

(३) मिष्ट-अवचन—स्त्रियों के साथ मीठे और हास्य वचनों के साथ वार्तालाप न करना।

(४) पूर्वभोगा-अस्मरण—जीवन के पूर्व भाग में भोगे हुये मनोग्य विषयों का स्मरण नहीं करना।

(५) वृष्य-अभुक्ति—कामोद्दीपक पुष्ट गरिष्ठ आहार को ग्रहण नहीं करना।

(६) अश्रृंगार-श्रृंगार नहीं करना या अपने आपको इस तरह से नहीं सजाना जिससे काम वासना जागृत हो।

(७) अशय्या-शयन—कोमल चिकने वस्त्रोंसे बनी हुई शय्या पर न सोना अथवा व्रतियोंके अनुरूप काष्ठा-कादिक के पाटे पर शयन करना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(८) काम अकथा—काम संबंधी कथाओं को नहीं कहना।

(९) उनोदर भोजन—भूख से कम भोजन करना अथवा उदर दरी में भूख के द्वारा बनाये हुये गद्दे के दो भागों को आहार से व एक भाग को जल से भरकर एक भाग को खाली रखना।

सूत्र—सूर्याचन्द्रमंगलबुधगुरुशुक्रशनिराहुकेतवः प्रसिद्ध-ग्रहाः।

अर्थ—लोक में प्रसिद्ध नौ ग्रह हैं। उनके नाम ये हैं:—

सूर्यग्रह, चन्द्रग्रह, मंगलग्रह, बुधग्रह, गुरुग्रह, शुक्र-ग्रह, राहुग्रह, केतुग्रह।

सूत्र—द्रव्ये द्रव्यस्य गुणस्य पर्यायस्य, गुणेद्रवस्य गुणस्य पर्यायस्य पर्याये द्रव्यस्य गुणस्य पर्यायस्यारोपा, सजात्यसद्भूतव्यवहारनयाः।

अर्थ—सजाति असद्भूतव्यवहारनय के नौ भेद होते हैं। उनका विवेचन इस प्रकार से है:-

तीन द्रव्य सम्बन्धी सजाति असद्भूतव्यवहारनय
तीन गुण सम्बन्धी सजात्यसद्भूतव्यवहारनय
तीन पर्याय सम्बन्धी सजात्यसद्भूतव्यवहारनय

द्रव्य सम्बन्धी तीननयः—

Version 1

(१) द्रव्य में द्रव्य का आरोप करना ।
(२) द्रव्य में गुण का आरोप करना ।
(३) द्रव्य में पर्याय का आरोप करना ।
गुण सम्बन्धी तीननयः-
(४) गुण में द्रव्य का आरोप करना ।
(५) गुण में गुण का आरोप करना ।
(६) गुण में पर्याय का आरोप करना ।
पर्याय सम्बन्धी तीननयः—
(७) पर्याय में द्रव्य का आरोप करना ।
(८) पर्याय में गुण का आरोप करना ।
(९) पर्याय में पर्यायका आरोप करना ।

सूत्र–सजातौ विजातेः सजातिविजात्यसद्भूतव्यवहार-नयाः ।

अर्थ—सजातिविजात्यसद्भूतव्यवहारनय के नौ भेद होते हैं । उनका विवेचन इस प्रकार हैः—

[१] सजाति द्रव्य में विजाति द्रव्य का आरोप करना ।

[२] सजाति द्रव्य में विजाति गुण का आरोप करना ।

[३] सजाति द्रव्य में विजाति पर्याय का आरोप करना ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

[४] सजाति गुण में विजाति द्रव्य का आरोप करना।

[५] सजाति गुण में विजाति गुण का आरोप करना।

[६] सजाति गुण में विजाति पर्याय का आरोप करना।

[७] सजाति पर्याय में विजाति द्रव्य का आरोप करना।

[८] सजाति पर्याय में विजाति गुण का आरोप करना।

[९] सजाति पर्याय में विजाति पर्याय का आरोप करना।

नोट—२१ वे सूत्र की व्याख्या १२ वे सूत्र के आगे लिखी है।

सूत्र—जघन्यमध्यमोत्कृष्टपरीतयुक्तानन्तानन्ता अनन्ता।

अर्थ—अनन्त के नौ भेद हैं। उनके नाम ये हैं:—

जघन्य परीत-अनन्त, मध्यम परीत अनन्त, उत्कृष्ट परीत अनन्त, जघन्य युक्तानन्त, मध्यम युक्तानन्त, उत्कृष्ट युक्तानन्त, जघन्य अनन्तानन्त, मध्यम अनन्तानन्त, उत्कृष्ट अनन्तानन्त।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सूत्र—तप्ततापिततपनतापननिदाघोज्ज्वलितप्रज्वलितसंज्वलितसंप्रज्वलितानि मेघेन्द्रकविलानि ।

अर्थ—मेघा नामक तृतीय नरक पृथ्वी में पाये जाने वाले इन्द्रकबिल नौ होते हैं। नाम उनके ये हैं :—

(१) तप्त इन्द्रकबिल (२) तापित इन्द्रकबिल (३) तपन इन्द्रकबिल (४) तापन इन्द्रकबिल (५) निदाघ इन्द्रकबिल (६) उज्ज्वलित इन्द्रकबिल (७) प्रज्वलित इन्द्रकबिल (८) संज्वलित इन्द्रकबिल (९) संप्रज्वलित इन्द्रकबिल ।

सूत्र—धर्माधर्माकाशानां कायदेशप्रदेशबंधा अनादि वैस्त्रसिक बंधाः ।

अर्थ—अनादिवैस्त्रसिकबंध से प्रयोजन उस बंध से है जो अनादिकालीन होता हुआ वैस्त्रसिक या स्वाभाविक होता है। इस प्रकार के बंध के लिये किसी प्रयत्न की आवश्यकता नहीं होती। यह नौ तरह का होता है:—

[१] धर्मद्रव्य के प्रदेशों का कायात्मक बंध।
[२] धर्मद्रव्य के प्रदेशों का देशात्मक बंध।
[३] धर्मद्रव्य के प्रदेशों का प्रदेशात्मक बंध।
[४] अधर्मद्रव्य के प्रदेशों का कायात्मक बंध।
[५] अधर्मद्रव्य के प्रदेशों का देशात्मक बंध।
[६] अधर्मद्रव्य के प्रदेशों का प्रदेशात्मक बंध।
[७] आकाशद्रव्य के प्रदेशों का कायात्मक बंध।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

[८] आकाशद्रव्यके प्रदेशोंका देशात्मक बंध।

[९] आकाश द्रव्य के प्रदेशों का प्रदेशात्मक बंध।

[कायात्मक बंध] से प्रयोजन ऐसे बंध से है जिसमें लम्बाई चौड़ाई के साथ ही साथ मोटाई भी हो।

[देशात्मक बंध] उस बंध का नाम है जिसमें मोटाई न हो मात्र लम्बाई चौड़ाई हो।

प्रदेशात्मक बंध में मात्र लम्बाई ही रहती है।

सूत्र — नौगरुडहस्तिमकरकरभखड्गिसिंहाश्वशिविका नागकुमारस्य सेना ॥३३॥

अर्थ—नागकुमार की नौ तरह की सेना होती है। नाम उनके ये हैं :—

नौसेना, गरुडसेना, हस्तिसेना, मकरसेना, करभसेना, खंगिसेना, सिंहसेना, अश्वसेना, शिविकासेना।

सूत्र—विद्युतकुमारस्य ॥३४॥

अर्थ—विद्युतकुमारों की भी नागकुमारों के समान नौ तरह की सेना होती है। नाम उनके इस प्रकार हैं:—

नौसेना, गरुडसेना, हस्तिसेना, मकर [मगर] सेना, करभ [ऊंट] सेना, खड्गि [तलवारधारी] सेना, सिंह [शेर] सेना, अश्व [घोड़ा] सेना, शिविका [पालकी] सेना।

सूत्र—सुपर्णकुमारस्य ॥३५॥

अर्थ—सुपर्णकुमारों की भी सेना नौ तरह की होती

Version 1

है। नाम उनके ये हैं :—

(१) नौसेना (नावों की सेना) (२) गरुड सेना (३ हस्तिसेना (हाथियों की सेना) (४) मकर (मगर) सेना (५) करभ (ऊंट) सेना (६) खड्ग (तलवारधारी) सेना (७) सिंह (शेर) सेना (८) अश्व (घोड़ा) सेना (९) शिविका (पालकी) सेना।

सूत्र —सिद्धनिषधहरिवर्षपूर्वविदेहहरिधृतिसीतोदाऽपरविदेह रुचका निषधकूटाः ॥३६॥

अर्थ—निषध नामक पर्वत पर नौ कूट पाये जाते हैं जो कि सामान्यतया निषधकूट कहलाते हैं। उनके पृथक २ नाम ये हैं :—

(१) सिद्ध निषधकूट (२) निषधनिषधकूट (३) हरिवर्ष निषधकूट (४) पूर्वविदेह निषधकूट (५) हरिनिषधकूट (६) धृतिनिषधकूट (७) सीतोदा निषधकूट (८) अपरविदेह निषधकूट (९) रुचक निषधकूट।

सूत्र — सिद्धनीलपूर्वविदेहसीताकीर्तिनरकान्तापरविदेह रम्यकापदर्शनाह्वा नीलकूटाः ॥३७॥

अर्थ—नील पर्वत पर भी नौ कूट हैं, नाम उनके ये हैं :-

(१) सिद्धनीलकूट (२) नीलनीलकूट (३) पूर्वविदेह नीलकूट (४) सीता नीलकूट (५) कीर्तिनीलकूट (६) नर-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

कान्ता नीलकूट (७) अपरविदेहनीलकूट (८) रम्यक नील-कूट (९) अपदर्शन नीलकूट ।

सूत्र- सिद्धदक्षिणार्धभरतखण्डप्रपातपूर्णभद्रविजयार्ध-कुमार मणिभद्रतमिश्रगुहोत्तारभरतवैश्रवणाह्वा भरतस्यविज-यार्धकूटाः ॥३८॥

अर्थ—भरतक्षेत्र संबंधीविजयार्धपर्वत पर नौ कूट पाये जाते हैं। नाम उनके ये हैं:-

(१) सिद्ध नामक कूट (२) दक्षिणार्धभरत नामक कूट (३) खण्डप्रपात नामक कूट (४) पूर्णभद्र नामक कूट (५) विजयार्धकुमार नामक कूट (६) मणिभद्र नामक कूट (७) तामिश्रगुह नामक कूट (८) उत्तारभरत नामक कूट (९) वैश्रवण नामक कूट ।

सूत्र- सिद्धोत्तरैरावततमिश्रगुहमणिभद्रविजयार्धकुमार पूर्णभद्रखण्डप्रपातदक्षिणैरावतवैश्रवणाह्वा ऐरावतस्थविजयार्ध कूटाः ॥३९॥

अर्थ—(१) सिद्ध नामक कूट (२) उत्तरार्धैरावत नामक कूट (३) तमिश्रगुह नामक कूट (४) मणिभद्र नामक कूट (५) विजयार्धकुमार नामक कूट (६) पूर्णभद्र नामक कूट (७) खंडप्रपात नामक कूट (८) दक्षिणैरावतार्ध नामक कूट (९) वैश्रवण नामक कूट ।

उपरिलिखित नौ कूट ऐरावतक्षेत्र में पाये जाने वाले

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

विजयार्ध पर्वत के हैं।

सूत्र—सिद्धमाल्यवदुत्तरकौरवकच्छसागररजतपूर्णभद्र-सीताहरिसहाईशानविदिकस्थमाल्यवद्गजदन्तकूटाः ॥४०॥

अर्थ—ईशान नामकविदिशामें स्थित माल्यवान गजदन्त पर नौ कूट पाये जाते हैं। उनके पृथक पृथक नाम इस प्रकार हैं :—

सिद्धकूट, माल्यवान कूट, उत्तरकौरव कूट, कच्छकूट, सागरकूट, रजतकूट, पूर्णभद्रकूट, सीताकूट, हरिसहा-कूट।

सूत्र— सिद्धविद्युत्प्रभदेवकुरुद्धनपतनस्वस्तिकशतज्वाल सीतोदाहरयोविद्युत्प्रभकूटाः ॥४१॥

अर्थ—विद्युत्प्रभ नामक गजदन्त पर नौ कूट अवस्थित हैं। उनके नाम ये हैं:—

सिद्धकूट, विद्युत्प्रभकूट, देवकुरुकूट, पद्मकूट, तपन कूट, स्वस्तिक कूट, शतज्वाल कूट, सीतोदाकूट, हरिकूट।

सूत्र—ऋतुयोग्यपुष्पमालादि भाजनायुधाभरणगृहवस्त्र धनधान्यरत्नानि नवनिधिकार्याणि ॥४२॥

अर्थ—पूर्व सूत्र (२५) में चक्रवर्ती की नवनिधियों का नामोल्लेख किया जा चुका है। इस सूत्र उन निधियों से होने वाले कार्यों को बताया जा रहा है।

(१) ऋतुओं के योग्य कुसुममालादि की प्राप्ति काल

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

नामक निधि से होती है। कुसुममालादिकी प्राप्ति काल निधि का कार्य है।

(२) अनेक प्रकार के भाजन की प्राप्ति महाकाल निधि का कार्य है।

(२) नाना प्रकार के आयुधों (हथ्यारों) की प्राप्ति माणवक निधि का कार्य है।

(४) आभरणों की प्राप्ति पिंगल निधि का कार्य है।

(५) नाना आकृति वाले प्रासादादिकों की प्राप्ति नैसर्प निधि से होती है। नैसर्पनिधि का कार्य गेह प्राप्ति है।

(६) पहनने ओढ़ने आदि के काम में आने वाले वस्त्रों की प्राप्ति पद्मनिधि से होती है।

(७) विविध धान्यों की प्राप्ति पाण्डु निधि से होती है। धान्य प्राप्तिपाण्डुनिधि का कार्य है।

(८) नाना प्रकार के वाद्य यन्त्रों की प्राप्ति शंख निधि से होती है। शंखनिधि का कार्य विविध वाद्यों को देना है।

(९) बहुमूल्य बहुप्रकार के रत्नों की प्राप्ति नानारत्न नामक निधि से होती है।

सूत्र—चन्द्रमहाचन्द्रचन्द्रधरहरिचन्द्रसिंहचन्द्रवरचन्द्र पूर्णचन्द्रशुभचन्द्रश्रीचन्द्रा भाव्युत्सर्पिणी बलदेवाः ॥४३॥

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अर्थ—आगामी काल में होने वाली उत्सर्पिणी संबंधी नौ बलदेव हैं। उनके नाम ये हैं:-

(१) चन्द्र नामक बल्देव (२) महाचन्द्र नामक बल्देव (३) चन्द्रधर नामक बल्देव (४) हरिचन्द्र नामक बल्देव (५) सिंहचन्द्र नामक बल्देव (६) वरचन्द्र नामक बल्देव (७) पूर्णचन्द्र नामक बल्देव (८) शुभचन्द्र नामक बल्देव (९) श्रीचन्द्र नामक बल्देव।

सूत्र— नन्दिनन्दिमित्रनन्दिषेणनन्दिभूतिचाचलमहाबलातिबलत्रिपृष्टद्विपृष्टा नारायणाः ॥४४॥

अर्थ—आगे आने वाले उत्सर्पिणी काल सम्बन्धी भी नौ नारायण हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) नन्दि नामक नारायण (२) नन्दिमित्र नामक नारायण (३) नन्दिसेन या नन्दिषेण नामक नारायण (४) नन्दिभूति नामक नारायण (५) चाचल नामक नारायण (६) महाबल नामक नारायण (७) अतिबल नामक नारायण (८) त्रिपृष्ट नामक नारायण (९) द्विपृष्ट नामक नारायण।

सूत्र—श्रीहरिनीलाश्व सुशिखिकंठा अश्वहयमयूरग्रीवाः प्रति नारायणाः ॥४५॥

अर्थ—उत्सर्पिणी काल सम्बन्धी नौ प्रति नारायण भी होते हैं। ये आगे उत्पन्न होंगे। नाम उनके ये हैं:—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(१) श्रीकण्ठ प्रतिनारायण (२) हरिकण्ठ प्रतिनारायण (३) नीलकण्ठ प्रतिनारायण (४) अश्वकण्ठ प्रतिनारायण (५) सुकण्ठ प्रतिनारायण (६) शिखिकण्ठ प्रतिनारायण (७) अश्वग्रीव प्रतिनारायण (८) हयग्रीव प्रतिनारायण (९) मयूरग्रीव प्रतिनारायण ।

ये नौ (९) प्रतिनारायण नारायणों के साक्षात्कार के पूर्व तीन खण्ड के स्वामी हुआ करते हैं। ये पराक्रमी तेजस्वी और चक्र के अधिपति होते हैं। नारायण के समक्ष इनका पुण्य हीन हो जाता है और उनके द्वारा ये मारे जाते हैं।

सूत्र–भाव्युत्सर्पिणिकालेनारदाः–प्रमदसंमदहरषप्रकामदभवहरिमनोभवमारकामागजाः ॥४६॥

अर्थ—उत्सर्पिणी काल में जो कि आगे आने वाला है, नारायणों के साथ ही साथ (तत्समकालीन) नौ नारद भी होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

प्रमद नारद, समद नारद, हरष नारद, प्रकाम नारद, कामद नारद, भवहरि नारद, मनोमार नारद, भवमार नारद, कामांगज नारद।

सूत्र– अनन्तानुबन्धिक्रोधमानमायालोभैकद्वित्रिचतुरीन्द्रिय स्थावराः सासादने उदयव्युच्छिन्नाः प्रकृतयः ॥४७॥

अर्थ—सासादन नामक दूसरे गुणस्थान में उदयव्यु-

च्छिन्न–सासादन से आगे के गुणस्थानोंमें उदय नहीं आने योग्य-कर्मप्रकृतियाँ ना होती हैं। उनके नाम ये हैं :—

(१) अनन्तानुबंधि क्रोध (२) अनन्तानुबंधिमान (३) अनन्तानुबंधि माया (४) अनन्तानुबंधि लोभ (५) एकेन्द्रिय (६) द्वीन्द्रिय (७) त्रीन्द्रिय (८) चतुरिन्द्रिय (९) स्थावर।

सूत्र–दशनवाष्टसप्तषट्पञ्चचतुर्द्व्येकानि मोहनीयोदयस्थानानि ॥४८॥

अर्थ–मोहनीय कर्म की प्रकृतियों के नौ उदय-स्थान होते हैं। उन उदयस्थानों की संख्या इस प्रकार हैं :—

(१) दश प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(२) नव प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(३) अष्ट प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(४) सात प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(५) छः प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(६) पांच प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(७) चार प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(८) दो प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।
(९) एक प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका उदयस्थान।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१) दश प्रकृतिक उदयस्थान की प्रकृतियाँ ये हैं:—

(१) मिथ्यात्व गुणस्थान में मिथ्यात्व प्रकृति का मिश्रगुणस्थान में सम्यङ्मिथ्यात्व का तथा चौथे से लेकर सातवें गुणस्थान तक सम्यक्त्व प्रकृति का उदय होता है। (२–३–४–५) चार कषायों में से कोई एक कषाय जाति (६) तीन वेदों में से एक वेद (७–८) हास्यरति, अरतिशोक दो युगलों में।

(२) नव प्रकृतिक उदयस्थान की यह छः तरह से बनता है जिसका विस्तार से वर्णन कर्मकाण्ड ग्रन्थ में है। यहाँ मिथ्यात्व नामक प्रथम गुणस्थान को ध्यान में रख नौ प्रकृतियों वाला उदयस्थान यह है।

(३) अष्ट प्रकृतिक उदयस्थान ग्यारह प्रकार से बनता है।

(४) सप्त प्रकृतिक उदयस्थान ग्यारह प्रकार से बनता है।

(५) षड् प्रकृतिक उदयस्थान की प्रकृतियाँ ग्यारह प्रकार से लिखी जा सकती हैं।

(६) पञ्च प्रकृतिक उदयस्थान नौ प्रकार से बनता है।

(७) चतुः प्रकृतिक उदयस्थान की प्रकृतियां तीन तरह से लिखी जा सकती हैं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(८) द्वि प्रकृतिक उदयस्थान की प्रकृतियां ये हैं:—
नवमें गुणस्थान में तीन वेदों में से कोई एक वेद, संज्वलन की चार कषायों में।

(९) एक प्रकृतिक उदयस्थान—दशवें गुणस्थान में से कोई एक होता है।

सूत्र—अप्रत्याख्यानावरणक्रोधमानमायालोभत्रसाविरत्यौदारिकमिश्रवैक्रयिकवैक्रयिकमिश्रकार्मणिकाययोगा अविरतसम्यक्त्वे व्युच्छिन्ना आश्रवाः ॥५०॥

अर्थ—अविरतसम्यक्त्व नामक चतुर्थगुणस्थान में जिनका आश्रव व्युच्छिन्न हो जाया करता है ऐसी कर्म प्रकृतियां नौ हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध (२) अप्रत्याख्यानावरणमान (३) अप्रत्याख्यानावरण माया (४) अप्रत्याख्यानावरण लोभ (५) त्रसाविरति प्रकृति (६) औदारिक मिश्रकायायोग (७) वैक्रयिक काययोग (८) वैक्रयिकमिश्रकायायोग (९) कार्मणिकाययोग।

सूत्र—पृथ्व्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायद्वित्रिचतुःपंचेन्द्रियाजीवसमासाः ॥५१॥

अर्थ—जीवसमास नौ होते हैं। नाम इस प्रकार हैं उनके:—

(१) पृथ्वीकाय जीवसमास (२) अपकाय जीवसमास

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(३) तेजकाय जीवसमास (४) वायुकाय जीवसमास (५) वनस्पतिकाय जीवसमास (६) द्वीन्द्रिय जीवसमास (७) त्रीन्द्रिय जीवसमास (८) चतुरिन्द्रिय जीवसमास (९) पंचेन्द्रिय जीवसमास ।

सूत्र—एकेन्द्रियविकलेन्द्रियसकलेन्द्रियपर्याप्तनिर्वृत्यपर्याप्तलब्ध्यपर्याप्ताश्च ॥५२॥

अर्थ—उपरिलिखित तरीके के अलावा, अन्य प्रकार से भी जीवसमास के नौ भेद बन सकते हैं। दूसरे तरीके के नौ भेद ये हैं:—

[१] एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास [२] एकेन्द्रिय-निर्वृत्य पर्याप्त जीवसमास [३] एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवसमास [४] विकलेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास [५] विकलेन्द्रिय निर्वृत्य जीवसमास [६] विकलेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवसमास [७] सकलेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास [८] सकलेन्द्रिय निर्वृत्य पर्याप्त जीवसमास [९] सकलेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त जीवसमास ।

सूत्र—संज्वलनक्रोधमानमायालोभभयजुगुप्साहास्यरतिपुंवेदैसह प्रमत्तमोहनीयनवकबंधस्थानप्रकृतयः ॥५३॥

अर्थ—प्रमत्तविरत नामके छटवें गुणस्थानमें मोहनीयकर्मके नौ प्रकृति वाले बंधस्थान की नौ प्रकृतियां इस प्रकार से हैं:—

Version 1

संज्वलनक्रोध, संज्वलनमान, संज्वलनमाया, संज्वलन लोभ, भय प्रकृति, जुगुप्सा प्रकृति, हास्य प्रकृति, रति प्रकृति, पुंवेद प्रकृति ।

सूत्र—अरतिशोकपुंवेदैः सह च ॥५३॥

अर्थ—प्रमत्तविरत नामक गुणस्थान में मोहनीयकर्म के नौ प्रकृति वाले बंधस्थान की नौ प्रकृतियां इस प्रकार से भी हो सकती हैं। तात्पर्य यह है कि पहले की नौ में से हास्य रति के स्थान पर अरति शोक को जोड़ सातवे ही बनी रहे। अलग अलग इस प्रकार से उन्हें रक्खा जा सकता है:—

संज्वलन क्रोध, संज्वलनमान, संज्वलनमाया संज्वलन लोभ, भयप्रकृति, जुगुप्सा प्रकृति, अरति प्रकृति, शोक प्रकृति, पुंवेद प्रकृति ।

सूत्र—हास्यरति पुंवेदै, सदैव चः ॥५४॥

अर्थ—मोहनीयकर्म के नौ प्रकृति वाले बंधस्थान की नौ प्रकृतियां छटे गुणस्थान में ये हैं:—

संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान, संज्वलन माया, संज्वलन लोभ, भयप्रकृति, जुगुप्सा प्रकृति, हास्य प्रकृति, रतिप्रकृति, पुंवेद प्रकृति ।

सूत्र—मिथ्यात्वमप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणसंज्वलन-संबंधिषुक्रोधमानमायालोभेष्वेकत्रिकम् हास्यरत्यरतिशोक-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

योरेकयुग्मम् भयजुगुप्सेत्रिवेदेष्वेकोमोहनीयनवकबंधस्थान-प्रकृतयः ॥५५॥

अर्थ—प्रमत्तगुणस्थान का प्रकरण तो चल ही रहा अतः उसमें मोहनीयकर्म के नौ प्रकृतिवाले बंधस्थान की नौ प्रकृतियां आगे लिखी जाने वाली प्रकृतियां भी हो सकती हैं:—

(१) मिथ्यात्व प्रकृति (२–३–४) अप्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, प्रत्याख्यानावरण-सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ संज्वलनसम्बन्धी क्रोधमान-मायालोभ में से एक एक करके कोई सदृश तीन (५–६) हास्य रति, अरति शोक, इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) भयप्रकृति (८) जुगुप्सा प्रकृति (९) तीन वेदों में से कोई एक वेद।

सूत्र—मिथ्यात्वमनन्तानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्याना-वरणसंज्वलनसंबंधिक्रोधमानमायालोभेष्वेकचतुष्कम् हास्य-रत्यरतिशोकयुग्मयोरेकयुग्मम् त्रिवेदेष्वेकोभयेन सह च ॥५६॥

अर्थ—गुणस्थान तो छटवां ही हो, उसमें मोहनीय कर्म के नौ प्रकृतिबाले बंधस्थान की नौ कृतियां ऐसे भी हो सकती हैं:—

[१] मिथ्यात्व [२–३–४–५] अनन्तानुबंधि संबंधी

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

क्रोध मान माया लोभ, अप्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोध मानमायालोभ, प्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमानमाया लोभ, संज्वलन सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ में से एक एक करके कोई सदृस चार प्रकृति [६-७] हास्यरति अरतिशोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल [८] तीन वेदों में से कोई एक वेद [९] भय प्रकृति।

सूत्र—जुगुप्सया सह च ॥५७॥

अर्थ—सिलसिला मोहनीयकर्म के नौ प्रकृतिवाले बंधस्थान की नौ प्रकृतियों का है। सूत्र में बताया जा रहा है कि जो पूर्व सूत्र में नौ प्रकृतियां बतलाई गईं हैं उनमें से अन्तिम भय प्रकृति की जगह जुगुप्सा रख देने या जोड़ देने से भी वे बन सकती हैं। पृथक पृथक रूप से उनके नाम यों रक्खे जा सकते हैं :-

[१] मिथ्यात्व प्रकृति [२-३-४-५] अनन्तानुबंधी क्रोधमानमायालोभ, अप्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमान-मायालोभ, प्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ में से एक एक करके कोई एक सदृस चार प्रकृति [६ ७] हास्यरति अरति शोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल [८] तीन वेदों में से कोई एक वेद [९] जुगुप्सा प्रकृति।

सूत्र—अनन्तानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणसंज्व-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

लनसंबन्धिषु क्रोधमानमायालोभेष्वेकचतुष्कम् हास्यरत्यरति शोकयोरेकयुग्ममम् भयजुगुप्सेत्रिवेदेष्वेको वा ॥५८॥

अर्थ—नौ प्रकृतिवाले बंधस्थान, जो कि मोहनीयकर्म का होता है, की नौ प्रकृतियां इस प्रकार भी हो सकती हैं, नाम पृथक पृथक ये हैं:—

(१–२–३–४) अनन्तानुबंधी क्रोधमानमायालोभ अप्रत्याख्यानावरण सम्बन्थी क्रोधमानमायालोभ, प्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन संबंधी क्रोधमानमायालोभ में से एक एक करके कोई सदस चार प्रकृतियाँ (५–६) हास्य रति अरतिशोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) भयप्रकृति (८) जुगुप्सा प्रकृति (६) तीन वेदों में से कोई एक वेद।

सूत्र—सम्यङ्मिथ्यात्वमप्रत्याख्यानप्रऽयाख्यानावरण संज्वलनसम्बन्धिषुक्रोधमानमायालोभेष्वेकत्रिकम् हास्यरत्य रतिशोकयोरेकयुग्ममम् भयजुगुप्सेत्रिष्वेदेवेको वा ।५६॥

अर्थ—प्रमत्तगुणस्थान में मोहनीयकर्म के नौ प्रकृति वाले बंधस्थान की नौ प्रकृतियां आगे लिखे जाने वाले तरीके से भी हो सकती हैं :—

(१) सम्यङ्मिथ्यात्व प्रकृति (२–३-४) अप्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, प्रत्याख्यानावरण सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलन सम्बन्धी

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

क्रोधमानमायालोभ में से एक एक करके कोई सदृश तीन प्रकृतियाँ (५-६) हास्यरति अरतिशोक इन दो युगलों में कोई एक युगल (७) भय प्रकृति (८) जुगुप्सा प्रकृति (९) तीन वेदों में से कोई एक वेद।

सूत्र— सम्यक्प्रकृत्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरण-संज्वलनसम्बन्धिषु क्रोधमानमायालोभेष्वेकत्रिकम् हास्य-रत्यरतिशोकयोरेकयुग्मम् भयजुगुप्सेत्रिवेदेको वा ॥६०॥

अर्थ—(१) सम्यक्त्व प्रकृति २-३-४) अप्रत्याख्या नावरण सम्बन्धी क्रोधमानमायालोभ, प्रत्याख्यानावरण संबंधी क्रोधमानमायालोभ, संज्वलनसंबंधी क्रोधमान-मायालोभ में से एक एक करके कोई सदृश तीन प्रकृतियां (५-६) हास्यरति अरतिशोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल (७) भय प्रकृति (८) जुगुप्सा प्रकृति (९) तीन वेदों में से कोई एक वेद।

ये नौ प्रकृतियाँ भी मोहनीयकर्म के नौ प्रकृतिवाले बंधस्थान की हो सकती हैं। छटवें गुणस्थान से इनका संबंध है।

सूत्र— मनुष्यगतिपञ्चेन्द्रियजातिमनुष्यगत्यानुपूर्व्य सुभगत्रसबादरपर्याप्तादेय यशःकीर्तयो नामकर्मनवप्रकृतिक सत्वस्थानप्रकृतयः ॥६१॥

अर्थ—नामकर्म के नौं प्रकृतिवाले सत्वस्थान की नौ

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

प्रकृतियों के नाम इस प्रकार से गिनाये जाते हैं :—

(१) मनुष्यगति प्रकृति (२) पञ्चेन्द्रियजाति (३) मनुष्यगत्यानुपूर्व्य (४) सुभग प्रकृति (५) त्रस प्रकृति (६) बादर प्रकृति (७) पर्याप्त प्रकृति (८) आदेय प्रकृति (९) यशःकीर्ति प्रकृति।

सूत्र—द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्र शब्दसमभिरूढैवंभूतानयाः ॥६२॥

अर्थ—वस्तु के एक देश को जानने वाले नय कहलाते हैं। उनकी संख्या नौ है, नाम अलग अलग इस प्रकार से हैं।

(१) द्रव्यार्थिकनय (२) पर्यायार्थिकनय (३) नैगमनय (४) संग्रहनय (५) व्यवहारनय (६) ऋजुसूत्रनय (७) शब्दनय (८) समभिरूढनय (९) एवंभूतनय।

(१) द्रव्यार्थिकनय–ऐसा नय जो मुख्य रूप से द्रव्य को विषय करे या जाने उसे द्रव्यार्थिक नय कहते हैं।

(२) पर्यायार्थिक नय—जो मुख्य रूप से पर्याय को विषय करे या जाने सो पर्यायार्थिक नय है।

(३) नैगम नय—जो अभी तक नहीं बना है ऐसे अर्थ के संकल्प को ग्रहण करने वाला नय हैं सो नैगम नय है।

(४) संग्रह नय–अपनी जाति का विरोध न करते हुये

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

जो एकपने से समस्त पदार्थों का ग्रहण करना ।

(५) व्यवहार नयः—संग्रह नय के द्वारा विषय बनाये गये पदार्थों को जो नय विधिपूर्वक भेद करता है। उसे व्यवहार नय कहते हैं ।

(६) ऋजुसूत्र नय—जो मात्र वर्तमान काल के पदार्थों को ग्रहण करता है। उसे ऋजुसूत्र नय कहते हैं ।

(७) शब्द नय—ऐसा ज्ञान जो लिंग संख्या कारक आदि के व्यभिचार को दूर करता है सो वह शब्द नय है ।

(८) समभिरूढ़ नय—जो नय नाना अर्थों को उल्लंघन कर एक अर्थ को रूढ़ि से ग्रहण करना है उसे समभिरूढ़ नय कहते हैं ।

(९) एवंभूत नय—जिस शब्द का जिस क्रिया रूप अर्थ है उसी क्रिया रूप परिणमते हुये पदार्थ को जो नय ग्रहण करता है या विषय बताता है उसे एवंभूत नय कहते हैं ।

सूत्र — भूमिसमरूंद्रलघुसरलनिष्कपदेहप्रमाणनिश्छिद्रास्फुटितकोमलताः स्वपक्ककाष्टपट्टसस्तरयोग्यताः ॥६३॥

अर्थ—सामाधिमरण के लिये तत्पर हुये प्राणी के काष्टपट्ट रूप संस्तर (बीछोना) में नौ योग्यता होना चाहिये । उन योग्यताओं के नाम ये हैं :—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१) भूमिसम योग्यता (२) समरुन्द्र योग्यता (३) लघुरूप योग्यता (४) सरल योग्यता (५) निष्कंप योग्यता (६) देहप्रमाण योग्यता (७) निःश्छिद्र योग्यता (८) अस्फुटित योग्यता (९) कोमलता योग्यता। इन नौ बातों से युक्त काष्ट पदसंस्तर को होना चाहिये।

(१) भूमिसम से प्रयोजन लकड़ी के पाटे के ऊपरी भाग की सतह एक सी होनी चाहिये।

(२) समरुन्द्र—दोपटियों के बीच में पड़ी रहने वाली दराजों को बिलकुल मिला हुआ होना चाहिये।

(३) लघु योग्यता—पट्टे को हल्का होना चाहिये।

(४) सरल योग्यता—पट्टे को आड़ा बांका तिरछा न होते हुये सीधा सरल होना चाहिये।

(५) निष्कम्प योग्यता—पट्टे के पाये आदि बराबर होने चाहिये जिससे वह डिगमगाये या कंपै नहीं।

(६) देहप्रमाण योग्यता— पाटे की लम्बाई चौड़ाई ज्यादा न होते हुये शरीर के प्रमाण बराबर होना चाहिये।

(७) निश्छिद्र योग्यता—पाटे में कोई छेद वगैरह नहीं होना चाहिये।

(८) अस्फुटित योग्यता—पाटे के संस्तर को स्फुटित नहीं होना चाहिये। अस्फुटित होने पर ही वह पद के योग्य होता है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) कोमलता योग्यताः—पाटे के लिये यह भी आवश्यक है कि वह कोमल हो।

सूत्र — उन्मार्गिगुणोन्मार्गोपदेशविषयसेवनकषायदुःश्रुतिदुष्टसंग दुष्टाश्रयदुष्टसेवनोत्कटाचरणान्यशुभोपयोगाः ॥६४॥

अर्थ–प्राणी को पतन के गहरे गर्त में गिरा देने वाले अशुभोपयोग हुआ करते हैं। इनकी संख्या नौ है और नाम इस प्रकार हैं :—

(१) उन्मार्गि अशुभोपयोग (२) गुणोन्मार्गोपदेश अशुभोपयोग (३) विषयसेवन अशुभोपयोग (४) कषाय अशुउपयोग (५) दुःश्रुति अशुभोपयोग (६) दुष्टसंग अशुभोपयोग (७) दुष्टाश्रय अशुभोपयोग (८) दुष्टसेवन अशुभोपयोग (९) उत्कटाचरणाशुभोपयोग।

(१) उन्मार्गि अशुभोपयोग—जो सभ्य एवं कुलीन पुरुषों के द्वारा मार्ग त्याज्य है उस मार्ग को अंगीकार करना या उस ओर अपनी चित्तवृत्ति को लगाना।

(२) गुणोन्मार्गोपदेश अशुभोपयोग–जो भलाई एवं गुणकारी मार्ग है उसके उल्लंघन को पुष्ट करने वाले उपदेश में चित्तवृत्ति को लगाना।

(३) विषयसेवन अशुभोपयोग—इन्द्रियों के भोगों को सेवन में मन की प्रवृत्ति को लगाये रखना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(४) कषाय अशुभोपयोग—आत्माके गुणोंका विघात करने वाले क्रोधमानमायालोभादि परिणामों में मन को लगाये रखना।

(५) दुःश्रुति अशुभोपयोग-खोटेशास्त्रोंमें, जो कि रागवर्धक होते हैं। मनको लगाना सतत उस ओर अपनी प्रवृत्ति रखना।

(६) दुःष्टसंग अशुभोपयोग- जिन पुरुषों की प्रवृत्ति और आचरण लोकगर्हित हैं उनकी सोहबत या सङ्गति कैसे हो जाये इसके लिए मन को लगाये रखना।

(७) दुष्टाश्रय अशुभोपयोग- दुष्ट पुरुषों के आश्रय प्राप्त करलूं इसके लिए हमेशा मन को लगाए रखना।

(८) दुष्टसेवन अशुभोपयोग—दुष्ट पुरुषोंके सेवन के लिए सतत चिन्तनशील बने रहना।

(९) उत्कटाचरणाशुभोपयोग—बहुत ज्यादा नीच और बुरे आचरण की ओर मन को हमेशा लगाये रखना।

सूत्र—यथेच्छमार्गविरुद्धाहारविहारवेषापदेशशयनासन लुञ्चत्यागग्रहणानि स्वच्छन्दलक्षणानि ॥६५॥

अर्थ—मनमाने तरीके और बिना किसी अंकुशके मार्गके विरुद्ध प्रवृत्ति करना स्वच्छन्दता है। इससे प्राणी उच्छृंखल होने के साथ ही साथ अपना अहित कर बैठता। यह स्वच्छन्दता नौ प्रकार की बातों के सम्बन्ध

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

से नौ प्रकार की होती हैं :-

[१] आहार स्वच्छन्दता [२] विहार स्वच्छन्दता [३] वेश स्वच्छन्दता [४] उपदेश स्वच्छन्दता [५] शयन-स्वच्छन्दता [६] आसन स्वच्छन्दता [७] लुञ्चस्वच्छन्दता [८] त्याग स्वच्छन्दता [९] ग्रहण स्वच्छन्दता।

(१) आहार स्वच्छन्दता—मनमाने रूपसे, मार्ग के विरुद्ध कुल के द्वारा त्याज्य वस्तुओंको खाना पीना।

(२) विहार स्वच्छन्दता—अपने मनचाहे रूप में, अनुकरणीय मार्गके विरुद्ध निषिद्धस्थानोंमें गमन करना, घूमना, टहलना, चक्कर काटना आदि।

(३) वेश स्वच्छन्दता—लोकनिंदा, पदप्रतिष्ठा, के विरुद्ध वेशभूषा को धारण करना, पहिनना आदि।

(४) उपदेश स्वच्छन्दता—अवसर के अनुकूल, मन-माने रूप में भ्रष्ट और निंद्य भाषा का प्रयोग करते हुये मार्ग के खिलाफ व्याख्यान आदि देना।

(५) शयन स्वच्छन्दता-जहां शयनादि क्रिया निषिद्ध हों वहां अनुचित रूप व मनमाने ढङ्ग से सोना।

(६) आसन स्वच्छन्दता—मार्ग के खिलाफ मनमाने ढङ्ग से क्षेत्र काल की परवाह न करते हुये उठना बैठना।

(७) लुञ्च स्वच्छन्दता—जहां के बाल नहीं कटवाना चाहिये अथवा जिस ढंग के बाल नहीं कटवाना चाहिये

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

उनको मनमाने ढंग से लोंच कराना।

(८) त्याग स्वच्छन्दता—जिनका सज्जन पुरुष त्याग नहीं करते ऐसी बातों का मनमाने ढंग से छोड़ देना।

(९) ग्रहण स्वच्छन्दता—जो बातें कुलीन पुरुषों के द्वारा अपनाने योग्य नहीं है उनका मनमाने ढंग ग्रहण करना।

सूत्र—सत्यासत्योभयानुभयमनोयोगसत्यासत्योभयानुभयवचनयोगौदारिककाययोगा उपशान्तमोहे आश्रवाः ॥६६॥

अर्थ—उपशान्तमोह नामक ग्यारहवें गुणस्थान में, नीचे जिनके नाम लिखे जा रहे हैं। ऐसी नौ प्रकृतियों का आश्रव होता हैः—

(१) सत्यमनोयोग (२) असत्यमनोयोग (३) उभयमनोयोग (४) अनुभयमनोयोग (५) सत्यमनोयोग (६) असत्यवचनयोग (७) उभयवचनयोग (८) अनुभयवचनयोग (९) औदारिककाययोग।

सूत्र—क्षीणमोहे च ॥६७॥

अर्थ—उपरिलिखित प्रकृतियों का आश्रय न केवल उपशान्तमोह गुणस्थानमें अपितु क्षीणमोहगुणस्थानमें भी होता है। ज्यादा स्पष्ट रूप से उनके नाम पृथक पृथक ये हैंः—

(१) सत्यमनोयोग (२) असत्यमनोयोग (३) उभय-

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

मनोयोग (४) अनुभयमनोयोग (५) सत्यवचनयोग (६) असत्यवचनयोग (७) उभयवचनयोग (८) अनुभय-वचनयोग (९) कार्माणकाययोग ।

सूत्र—अग्निकुमारस्य ॥६८॥

अर्थ—भवनवासी देवों के दशभेदों में एक भेद का नाम अग्निकुमार है। इनकी भी नागकुमार की सेना के समान नौ प्रकार की सेना होती है। सेनाओं के नाम ये हैं:—

नौसेना, गरुडसेना, हस्ति (हाथी) सेना, मकर (मगर) सेना, करभ (ऊंट) सेना) खड्गि सेना, सिंह सेना, अश्व सेना, शिबिका सेना।

सूत्र—वातकुमारस्य ॥६९॥

अर्थ–यह भी भवनवासी देवों के भेदों में से एक भेद का नाम है। इनकी भी नौ प्रकार की सेना होती है। नाम अग्निकुमार की सेना जैसे ही हैं किन्तु सम्बन्ध कृत अन्तर है। नाम इस प्रकार हैं:–

नौसेना, गरुडसेना, हस्तिसेना, मकरसेना, करभसेना, खड्गिसेना, सिंहसेना, अश्वसेना, शिबिकासेना, ।

सूत्र—स्तनितकुमारस्य ॥७०॥

अर्थ—स्तनितकुमार नामक भवनवासी देवों के भी नौ प्रकार की सेना पाई जाती है। नाम उनके ये हैं:—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

नौसेना, गरुडसेना, हस्तिसेना, मकरसेना, करभसेना, खड्गिसेना, सिंहसेना, अश्वसेना, शिविकासेना।

सूत्र—उदधिकुमारस्य ॥७१॥

अर्थ—उदधिकुमार नामक भवनवासी देवों के नौ प्रकार की सेना पाई जाती हैं। नाम सेना के ये हैं:—

नौसेना, गरुडसेना, हस्तिसेना, करभसेना, मकरसेना, खड्गिसेना, सिंहसेना, अश्वसेना, शिविकासेना।

सूत्र—द्वीपकुमारस्य ॥७२॥

अर्थ—द्वीपकुमार नामक भवनवासी देवों के भी नौ प्रकार की सेना होती है। नाम सेनाओं के ये हैं:—

नौसेना, गरुडसेना, हस्तिसेना, मकरसेना, करभसेना, खड्गिसेना, सिंहसेना, अश्वसेना, शिविकासेना।

सूत्र—दिक्कुमारस्य ॥७३॥

अर्थ–दिक्कुमार नामक भवनवासी देवों के नौ प्रकार की सेना पाई जाती है। नाम पहिले जैसे ही हैं किन्तु स्वामिकृत विशेषता पाई जाती है। अलग अलग नाम ये हैं:—

नौसेना, गरुडसेना, हस्तिसेना, मकरसेना, मकरसेना, खड्गिसेना, सिंहसेना, अश्वसेना, शिविकासेना।

सूत्र–'णमो लोए सव्वसाहूणं' इतिनवाक्षरमंत्रवर्णाः ॥७४॥

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अर्थ—ण मो लो ए स व्व सा हू णं ऐसे नौ अक्षर वाले मंत्र के वे नौ अक्षर हैं।

सूत्र—ॐ ह्रींअर्हत्सिद्धेभ्यो नमः ॥७५॥

अर्थ—नौ अक्षर वाले मन्त्रों में से यह भी एक मंत्र है। इसके अलग अलग अक्षर इस प्रकार से हैं:—

ॐ ह्रीं अ र्हं त्सि द्धे भ्यो न मः

सूत्र—ॐ सम्यग्दर्शनाय नमः ॥७६॥

अर्थ-नौ अक्षर वाले इस मन्त्र के अलग अलग नौ अक्षर ये होंगे :—

ॐ स म्य ग्द र्श ना य न मः

सूत्र—ॐ सम्यक्चारित्रायनमः ॥७७॥

अर्थ—नौ अक्षर वाला यह मंत्र है। अक्षर इसके अलग २ ये हैं:-

ॐ स म्य क्चा रि त्रा य न मः

सूत्र-'ॐ अर्हं णमो बड्ढमाणं' इति शत्रुवशीकरण शस्त्रनिष्फलीकरण निमित्तः ॥७८॥

अर्थ—नौ अक्षर वाला यह मंत्र शत्रुओं के वशमें (अपने आधीन) करने में तथा दूसरों के द्वारा प्रयुक्त हुए शस्त्रों (हथियारों) को व्यर्थ करने में निमित्त या सहायक कारण होता है। अलग २ अक्षर मन्त्र के ये हैं:—

ॐ अ र्हं ण मो व ड्ढ मा णं ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

सूत्र–स्थितजितपरिजितवाचनोपगतसूत्रसमार्थसमग्रन्थ-समनामसमघोषसमा आगमद्रव्यकृत्यधिकाराः ॥७९॥

अर्थ—आगम द्रव्य के नौ कृति अधिकार हैं। नामावली उन अधिकारों की यह हैं:-

(१) स्थितजित कृति अधिकार (२) परिजित कृति अधिकार (३) वाचक कृति अधिकार (४) उपगत कृति अधिकार (५) सूत्रसम कृति अधिकार (६) अर्थसम कृति अधिकार (७) ग्रंथसम कृति अधिकार (८) नामसम कृति अधिकार (९) घोषसमकृति अधिकार।

सूत्र–ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्यकृतयश्च ॥८०॥

अर्थ—ज्ञायकशरीरनोआगमद्रव्य की भी कृतियाँ होती हैं। पूर्वकृति भेदों के नाम की समानता होते हुये भी सम्बन्ध कृत विशेषता तो पाई ही जाती है। कृतियों के नाम ये हैं:-

(१) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी स्थितजित कृति।

(२) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी परिजित कृति।

(३) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी वाचन कृति।

(४) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी उपगत

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

कृति ।

(५) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी सत्रसम कृति ।

(६) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी अर्थसम कृति ।

(७) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी ग्रन्थसम कृति ।

(८) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी नामसम कृति ।

(९) ज्ञायकशरीरनोआगम द्रव्यसम्बन्धी घोषसम कृति ।

सूत्र —याचनज्ञापनपृच्छनासंचनसंशयाह्वानेच्छानुकूल प्रत्याख्यानानक्षरवचनान्यनुभयवचनानि ॥८१॥

अर्थ—अनुभय वचन नौ प्रकार के होते हैं । नाम उनके इस प्रकार से हैं:- (अनुभय वचन का अर्थ है ऐसा वचन जिससे सुनने वाले को व्यक्त और अव्यक्त दोनों ही अंशों का ज्ञान हो ।

(१) याचन अनुभयवचन (२) ज्ञापन अनुभयवचन (३) पृच्छना अनुभयवचन (४) सूचना अनुभयवचन (५) संशय अनुभयवचन (६) आह्वानेच्छा अनुभयवचन (७) अनुकूलवचन (८) प्रत्याख्यानअनुभयवचन

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) अनक्षरवचनरूप अनुभयवचन।

[१] याचनानुभयवचन—यह मुझको दो इस प्रकार के प्रार्थनावचनों को याचनानुभयवचन कहते हैं।

[२] ज्ञापनानुभयवचन—'यह काम करो' इस तरह के आदेश वाले वचनों को ज्ञापनानुभयवचन कहते हैं।

[३] पृच्छनानुभयवचन—'यह क्या है ? इस प्रकार के प्रश्नवचनों को पृच्छनानुभयवचन कहते हैं।

[४] असूचनानुभयवचन—'मैं क्या करू' इस प्रकार के सूचना वाक्यवाले वचन सूचनानुभयवचन कोटि में गर्भित होते हैं।

[५] संशयानुभयवचन—आकाश में उड़ रही यह बलाका है अथवा पताका है ऐसे संदिग्ध वचनों को संशयानुभयवचन कहते हैं।

[६]आह्वानानुभयवचन- से प्रयोजन उन वचनों से है जो "हे राम ! यहां आओ आदि रूप बुलाने वाले वचन आह्वानानुभयवचन कहलाते हैं।

[७] इच्छानुकूलानुभयवचन-"मुझे भी अमुक जैसा होना चाहिये" ऐसे इच्छा को प्रगट करने वाले वचनों को इच्छानुकूलानुभयवचन कहते हैं।

[८] प्रत्याख्यानानुभयवचन—"मैं इसे छोड़ता या दूर करता हूं" इस प्रकार के छोड़ने वाले वचनों को

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

प्रत्याख्यानानुभयवचन कहते हैं।

[६] अनत्तरवचनानुभयवचन–द्वीन्द्रिय से लेकर असंज्ञीपचेन्द्रिय जीवों के वचन अनत्तरवचनानुभयवचन कहलाते हैं।

सूत्र–अभ्युत्थानोचितवितरणोच्चासनाद्युज्झनानुव्रज्या-पीठाद्युपनयविधिकालयोग्यकृत्याचारभावयोग्यकृत्याचारा-ङ्गयोग्यकृत्याचार प्रणामाः कायिकविनयाः ॥८२॥

अर्थ—कायसम्बन्धी नौ प्रकार की विनय हुआ करती हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) अभ्युत्थान कायिकविनय (२) उचितवितरण कायिकविनय (३) उच्चासनादि उज्झन कायिकविनय (४) अनुव्रज्या कायिकविनय (५) पीठाद्युपनयविधि कायिकविनय (६) कालयोग्य कृत्याचार कायिकविनय (७) भावयोग्यकृत्याचार कायिकविनय (८) अंगयोग्य-कृत्याचार कायिकविनय (९) प्रणामकायिकविनय।

[१] अभ्युत्थान कायिकविनय—आदरपात्र व्यक्ति को आता हुआ देखकर हर्ष और नम्रतापूर्वक उठना।

[२] उचितवितरण कायिकविनय–समागत व्यक्ति को योग्य आसन की ओर आने के लिए हस्त आदिक के द्वारा संकेत करना।

[३] उच्चासनाद्युज्झन कायिकविनय– सम्मानीय

Report any errors at vikasnd@gmail.com

सज्जन के कुछ समीप आने पर स्वयं आसन से उठकर अगवानी के लिये बढ़ना ।

[४] अनुव्रज्या कायिकविनय—आगे जाकर आदर से लाए गए सज्जन के पीछे पीछे चलना ।

[५] पीठाद्युपनयविधि कायिकविनय-बैठने योग्य कुर्सी, चौकी आदि आसन को इस ढंग से उठाकर बैठने के लिए लाना जिसमें नम्रता की झलक हो ।

[६] कालयोग्य कृत्याचार कायिकविनय-गर्मी सर्दी आदि समय के अनुसार सुविधा पहुँचाने की गरज से पंखे कम्बल आदि को प्रदान करना ।

[७] भावयोग्यकृत्याचार कायिकविनय—जिस प्रकार की बाह्यविनय व्यक्त की जा रही तदनुकूल अपने अपने अन्तरंग भावों की भी क्रिया करना ।

[८] अंगयोग्यकृत्याचार कायिकविनय-ऐसी अपनी क्रियाएं करना जिससे समागत सज्जनके आंगोपांगों को सुख सुविधा प्राप्त हो ।

[९] प्रणाम कयिकविनय—अन्त में समागत आदर पात्र व्यक्ति को प्रणाम करना ।

———

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

॥ दशमोऽध्यायः ॥

सूत्र– उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागा-किञ्चन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥१॥

अर्थ–आत्मा को उसके वास्तविक स्वरूप की ओर उन्मुख करने वाली प्रवृत्तियों को धर्म कहते हैं। ऐसी प्रवृत्तियां दश प्रकार की होती हैं। वे प्रवृत्तियाँ स्वयं इतनी व्यापक और परस्पर में इतनी ज्यादा घुली मिली हैं कि एक के धारण करने या अपनाने में दूसरी प्रवृत्तियां विकास को प्राप्त करने लग जाती हैं और अन्त में परम पद की पूर्ण प्राप्ति हो जाती है। अतः इनको स्वतन्त्र रूप से धर्म कहते हैं। प्रतिवर्ष भाद्रपदमास में इन्हीं दशधर्मों का आलम्बन ले पर्यूषण पर्व का समारोह रूप आत्मोद्बोधन मनाया जाता है। धर्मों के पृथक पृथक नाम इस प्रकार रखे जा सकते हैं :—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१) उत्तमक्षमाधर्म (२) उत्तममार्दवधर्म (३) उत्तम-आर्जवधर्म (४) उत्तमशौचधर्म (५) उत्तमसत्यधर्म (६) उत्तमसंयमधर्म (७) उत्तमतपधर्म (८) उत्तमत्यागधर्म (९) उत्तम आकिञ्चन्यधर्म (१०) उत्तमब्रह्मचर्यधर्म।

(१) उत्तम क्षमाधर्म—क्रोध के कारण उपस्थित होने पर भी क्रोध न करना। यह उत्तम धर्म और आगे कहे जाने वाले धर्म पूर्णरूप से उत्तम पुरुषों-मुनियों के द्वारा धारण किये जाते हैं।

(२) उतम मार्दव धर्म—जो घमण्ड करता है। वह अवश्य गिरता है ऐसा सोच उत्तम कुल, विद्या, शक्ति, तप, रूपादि का गर्व न करना।

(३) उत्तम आर्जव धर्म–मन, वचन और काय की सरलता रखते हुए मायाचार (छल कपट) का त्याग कर देना।

(४) उत्तमचौचधर्म –लोभ, जो कि पाप को जन्म-दाता या मूलकारण है, का त्यागकर आत्मा को पवित्र बनाना।

(५) उत्तमसत्यधर्म–राग द्वेषपूर्वक असत्य वचनों को छोड़कर हित, मित प्रिय वचनों को बोलना।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) उत्तमसंयमधर्म-पांच इन्द्रिय तथा मन की प्रवृत्ति पर नियन्त्रण रखते हुये षटकाय के जीवों की रक्षा करना।

(७) उत्तमत्याग धर्म–कीर्ति और प्रत्युपकार की वाञ्छा का परित्याग करते हुये चार प्रकार के दान का देना।

(८) उत्तमतपधर्म– शरीर से ममत्व करते हुये वैराग्य भाव की वृद्धि के लिये छः प्रकार के अन्तरङ्ग और छः प्रकार के बाह्य तपों को तपना।

(९) उत्तम आकिञ्चन्य धर्म पदार्थों से ममत्व रूप परिणामों को हटाते हुये अपने को बिल्कुल शुद्ध स्वरूप की ओर लगाये रखना।

(१०) उत्तम ब्रह्मचर्यधर्म–स्त्रीमात्र का शील की सुरक्षा बनाये रखने की दृष्टि से, त्याग करके आत्मा के शुद्ध स्वरूप में लवलीन हो जाना।

सूत्र– आज्ञामार्गोपदेशबीजसूत्रसंक्षेपविस्तारार्थोद्भवावगाढपरमावगाढाह्वानिसम्यक्त्वानि ॥२॥

अर्थ–सम्यक्त्व दश प्रकार का होता है, नाम उनके ये हैं:–

(१) आज्ञा सम्यक्त्व (२) मार्ग सम्यक्त्व (३) उपदेश सम्यक्त्व (३) बीज सम्यक्त्व (५) सूत्र सम्यक्त्व

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) संक्षेप सम्यक्त्व (७) विस्तार सम्यक्त्व (८) अर्थोद्भव सम्यक्त्व (९) अवगाढ़ सम्यक्त्व (१०) परमावगाढ़ सम्यक्त्व ।

१) आज्ञा सम्यक्त्व—केवल वीतराग देव की आज्ञा मानकर तत्वों पर श्रद्धान करना ।

(२) मार्ग सम्यक्त्व—सम्यक्त्व का घात करने वाले मोहनीयकर्म की शान्ति होने से, अन्तरङ्ग एवं बहिरंग परिग्रह से रहित, कल्याणकारी मोक्षमार्ग को अच्छा समझने लगना ।

(३) उपदेश सम्यक्त्व–उस सम्यक्त्व का नाम उपदेश सम्यक्त्व है जो तीर्थंकर आदि श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्र श्रवण से होता है ।

(४) बीजसम्यक्त्व–मोहनीयकर्म की सातिशय उपशान्ति होने से करणानुयोग के गहन एवं मुश्किल से समझ में आने वाले पदार्थों को भी जिसने समझकर जो तत्व रुचिका (सम्यक्त्व का) प्राप्त होना है उसका नाम बीज सम्यक्त्व है ।

(५) सूत्र सम्यक्त्व—मुनियों की चरित्र विधि को बताने वाले आचार सूत्र का नाम सूत्र है । उसे सुनकर जो श्रद्धान होना ।

(६) संक्षेप सम्यक्त्व—उस सम्यग्दर्शन का नाम

Version 1

संक्षेप है जो पदार्थ का थोड़ा ही संक्षेप रूप में ज्ञान होने पर तत्वों में यथार्थ रुचि उत्पन्न करने वाला हो।

(७) विस्तार सम्यक्त्व—सर्व द्वादशांग को सुनकर जो किसी ने रुचि उत्पन्न की हो उसका नाम विस्तार सम्यक्त्व है।

(८) अर्थोद्भव सम्यक्त्व—किसी पदार्थ के देखने रूप अनुभवनसे तथा किसी दृष्टान्तादि के अनुभवनसे जो सम्यक्त्व का उत्पन्न होना।

(९) अवगाढ़ सम्यक्त्व—श्रुतकेवल्यावस्था सम्पन्न जीव को जो पदार्थों में श्रद्धान का उत्पन्न होना।

(१०) परमावगाढ़ सम्यक्त्व—केवलज्ञान के द्वारा जाने हुये पदार्थों में जो अत्यन्त दृढ़ श्रद्धान उत्पन्न होना।

सूत्र—तेषांस्वामिनोदर्शनार्याः ॥३॥

अर्थ—जो पूर्व उपरिलिखित सूत्र में सम्यक्त्व के दश भेद बतलाये गये हैं, उनके स्वामित्व के भेद से दश प्रकार के दर्शनार्य होते हैं। नाम उनके अलग अलग रूप से इस तरह रक्खे जा सकते हैं:—

(१) आज्ञादर्शनार्य (२) मार्गदर्शनार्य (३) उपदेश-दर्शनार्य (४) बीजदर्शनार्य (५) सूत्रदर्शनार्य (६) संक्षेप दर्शनार्य (७) विस्तारदर्शनार्य (८) अर्थोद्भवदर्शनार्य

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) अवगाढ़दर्शनार्य (१०) परमावगाढ़दर्शनार्य ।

(१) आज्ञादर्शनार्य—आज्ञा नामक सम्यक्त्व का स्वामित्व जिसके हो उसे आज्ञादर्शनार्य कहते हैं ।

(२) मार्गदर्शनार्य—मार्ग नामक जो सम्यक्त्व, उसके स्वामी को मार्गदर्शनार्य कहते हैं ।

(३) उपदेशदर्शनार्य—उपदेश नामक सम्यक्त्व के स्वामी को उपदेशदर्शनार्य कहते हैं ।

(४) बीजदर्शनार्य—बीज नामक सम्यक्त्व का जिनके आधिपत्य पाया जाता है उन्हें बीजदर्शनार्य कहते हैं ।

(५) सूत्रदर्शनार्य—सूत्रसम्यक्त्व का स्वामित्व जिनके पाया जाता है वे बीजदर्शनार्य संज्ञा वाले होते हैं ।

(६) संक्षेपदर्शनार्य—संक्षेप सम्यक्त्व के स्वामी संक्षेपदर्शनार्य कहलाते हैं ।

(७) विस्तारदर्शनार्य—विस्तार सम्यक्त्व का स्वामित्व जिनके पाया जाता है उन्हें विस्तार दर्शनार्य कहते हैं ।

(८) अर्थोद्भव दर्शनार्य— अर्थोद्भव सम्यक्त्व का स्वामित्व जिनके पाया जाता है उन्हें अर्थोद्भव दर्शनार्य कहते हैं ।

(९) अवगाढ़ सम्यक्त्वार्य—अवगाढ़ नामक सम्यक्त्व के स्वामी अवगाढ़ दर्शनार्य कहलाते हैं ।

(१०) परमावगाढ़ दर्शनार्य—परमावगाढ़ नामक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सम्यक्त्व के अधिपति परमावगाढ़ दर्शनार्य कहलाते हैं।

सूत्र—मिथ्यात्वसासादनमिश्राविरतेसम्यक्त्वदेशसंयमप्रमत्तविरताप्रमत्तविरतापूर्वनिवृत्तिकरणसूक्ष्मसाम्परायाः सकषायगुणस्थानानि ॥४॥

अर्थ—ऐसे गुणस्थान जिनमें कषाय पाई जाती है अथवा जो कषाय सहित गुणस्थान हैं, उनकी संख्या दश है, नाम ये हैं:—

(१) मिथ्यात्वनामक सकषायगुणस्थान (२) सासादन नामक सकषायगुणस्थान (३) मिश्र नामक सकषायगुणस्थान (४) अविरतसम्यक्त्व नामक सकषायगुणस्थान (५) देशसंयम नामक सकषायगुणस्थान (६) प्रमत्तविरत नामक सकषायगुणस्थान (७) अप्रमत्तविरत नामक सकषायगुणस्थान (८) अपूर्वकरण नामक सकषायगुणस्थान (६) अनिवृत्तिकरण नामक सकषायगुणस्थान (१) सूक्ष्मसाम्पराय नामक सकषायगुणस्थान।

सूत्र— स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रेन्द्रियमनोवाक्कायबलायुरुच्छ्वासाद्रव्यप्राणाः ॥५॥

अर्थ—जिनके रहने पर जीव में जीवितपने और अभाव या वियोग होने पर मरण पने का व्यवहार हो उन्हें प्राण कहते हैं। ऐसे द्रव्य प्राणों की संख्या दश है। अर्थात् द्रव्यप्राण दश होते है। उनके नाम ये हैं:—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, मनोबल, वचनबल, कायबल, आयु, श्वासोच्छ्वास।

सूत्र—ते पर्याप्तसंज्ञिनाम् ॥६॥

अर्थ-उपरिलिखित दश प्राण पर्याप्ति संज्ञी पंचेन्द्रिय प्राणियों के पाये जाते है, दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि संज्ञी पर्याप्त पञ्चेन्द्रिय जीव के दश प्राण होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) स्पर्शनइन्द्रिय (२) रसनाइन्द्रिय (३) घ्राणइन्द्रिय (४) चक्षुःइन्द्रिय (५) श्रोत्रइन्द्रिय (६) मनोबल (७) वचन बल (८) कायबल (९) आयु (१०) श्वासोच्छ्वास।

सूत्र— आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां वैयावृत्याः ॥७॥

अर्थ—वैयावृत्य दश प्रकार के उत्तमपात्रों की करने से वह भी दश प्रकार की मानी जाती है। अलग अलग नाम इस प्रकार हैं :—

(१) आचार्य वैयावृत्य (२) उपाध्याय वैयावृत्य (३) तपस्विवैयावृत्य (४) शैक्ष्यवैयावृत्य (५) ग्लान वैयावृत्या (६) गणवैयावृत्य (७) कुलवैयावृत्य (८) संघवैयावृत्य (९) साधु वैयावृत्य (१०) मनोज्ञवैयावृत्य।

[१] आचार्य वैयावृत्य—उन मुनियों की जो स्वयं

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

पांच प्रकार के आचरणों का आचरण करते हैं और दूसरों को आचरण कराते हैं, सेवा टहल आदि करना आचार्य वैयावृत्य है।

[२] उपाध्याय वैयावृत्य—उन मुनियों की सेवा टहल आदि करना जो शास्त्रों के अध्ययन में सतत लगे रहते हैं और संघस्थ पात्रों को अध्यापन को कराते हैं उपाध्याय वैयावृत्य है।

[३] तपस्वी वैयावृत्य—ऐसे साधु जो महान उपवास आदि दुद्धर तप का आचरण करते हैं तपस्वी कहलाते हैं, उनकी सेवा टहल करना।

[४] शैक्ष्य वैयावृत्य—शैक्ष्य से प्रयोजन ऐसे साधु समूह से है जो सर्वदा अध्ययन में तत्पर रहता हो। उस की सेवा पगचंपी आदि करना।

[५] ग्लान वैयावृत्य— रोग पीड़ित मुनि ग्लान कहलाते हैं उनकी सेवा टहल आदि करना।

[६] गण वैयावृत्य—वृद्ध मुनियों के अनुसार चलने वाले मुनियों के समूह को गण कहते हैं। उनकी सेवा टहल आदि करना गणवैयावृत्य है।

[७] कुलवैयावृत्य—दीक्षा देने वाले आचार्य के शिष्यों का समूह कुल कहलाता है। उसकी सेवा टहल में लगा रहना कुल वैयावृत्य है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(८) संघ वैयावृत्य—संघ से प्रयोजन ऋषि, यति मुनि अनगार रूप चार प्रकार के साधुओंके समूहसे है, उसकी सेवा टहल आदि करना।

(९) साधु वैयावृत्य—बहुत काल से दीक्षित मुनि साधु कहलाते हैं, उनकी सेवा टहल पंगचंपी आदि करना।

(१०) मनोज्ञ वैयावृत्य—लोक में जिनकी प्रशंसा दिन प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त हो रही हो वे मनोज्ञ कहलाते है। उनकी सेवा टहल आदि करना मनोज्ञ वैयावृत्य है।

सूत्र— अपायोपायजीवाजीवविपाकविरागभवसंस्थानाज्ञाहेतुविचयाः धर्मध्यानानि ॥८॥

अर्थ—ध्यान के चार मुख्य भेदों में से धर्म ध्यान एक है। उसके दश भेद हैं, नाय जुदे जुदे ये हैं:—

(१) अपायविचयधर्मध्यान (२) उपायविचयधर्मध्यान (३) जीवविचयधर्मध्यान (४) अजीवविचयधर्मध्यान (५) विपाकविचयधर्मध्यान (६) विरागविचयधर्मध्यान (७) भवविचयधर्मध्यान (८) संस्थानविचयधर्मध्यान (९) आज्ञाविचयधर्मध्यान (१०) हेतुविचयधर्मध्यान।

सूत्र—वादित्रपात्रभूषणपानभोजनपुष्पज्योतिर्गृहवस्त्रदीपांगाः कल्पवृक्षा ॥९॥

अर्थ—मन में जिन वस्तुओं की प्राप्ति के लिये

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

कल्पना या कामना की नहीं कि उनकी प्राप्ति जिन वृक्षों से हो जाये ऐसे वृक्षो का नाम कल्पवृक्ष है वे दश प्रकार के होते हैं। नाम उनके ये हैंः—

(१) वादित्रांग कल्पवृक्ष (२) पात्रांग कल्पवृक्ष (३) भूषण कल्पवृक्ष (४) पात्रांग कल्पवृक्ष (५) भोजनाङ्ग कल्पवृक्ष (६) पुष्पांग कल्पवृक्ष (७) ज्योतिरांग कल्पवृक्ष (८) गृहाङ्ग कल्पवृक्ष (९) वस्त्रांग कल्पवृक्ष (१०) दीप्तांग कल्पवृक्ष।

[१] वादित्रांग कल्पवृक्ष—ऐसे वृक्ष विशेष जिनसे इच्छित वाद्य यन्त्रों की प्राप्ति हो सके।

[२] पात्रांग कल्पवृक्ष—मनचाहे बर्तनोंकी प्राप्ति जिनसे हो सके उनवृक्ष विशेषों को पात्रांग कल्पवृक्ष कहते हैं।

[३] भूषणांग कल्पवृक्ष—नाना प्रकार के मुक्ता मणि स्वर्णादिक के मनचाहे गहने अलङ्कारादि की प्राप्ति जिन वृक्षविशेषोंसे होवे भूषणाङ्ग कल्पवृक्ष हैं।

[४] पात्रांग कल्पवृक्ष—इच्छित सुस्वादुमिष्ट मनोहर पेय (पीने योग्य) पदार्थों की प्राप्ति जिनसे होती है उन वृक्षों को पानाङ्ग कल्पवृक्ष कहते हैं।

[५] भोजनाङ्ग कल्पवृक्ष—षट्रस युक्त छप्पन प्रकार के इच्छित भोजनों की प्राप्ति जिनसे होती है उनवृक्षों को

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

भोजनाङ्ग कल्पवृक्ष कहते हैं।

[६] पुष्पांगकल्पवृक्ष—मनको प्रसन्न करनेवाले भीनी भीनी महकसे युक्त विविध पुष्पोंकी प्राप्ति जिनसे हो उनवृक्षों का नाम पुष्पांगकल्पवृक्ष है।

[७] ज्योतिरांग कल्पवृक्ष—जगमग जगमग ज्योति जिनसे प्राप्त हो उन वृक्षोंको ज्योतिराङ्ग कल्पवृक्ष कहते हैं।

[८] गृहांग (हर्म्यांग) कल्पवृक्ष—सुखसुविधा सम्पन्न सुन्दर २ प्रासादादि की प्राप्ति जिन वृक्षों से होती है उन वृक्षों का नाम गृहांगकल्पवृक्ष है।

[९] वस्त्रांग कल्पवृक्ष—नित नूतन नाना प्रकार के पहिनने ओढ़नेके वस्त्रोंकी प्राप्ति जिनसे हो उनवृक्षों का नाम वस्त्रांग है।

[१०] दीपांग कल्पवृक्ष—नाना प्रकार के आकार वाले कलायुक्त विविध दीपमालकी जिनसे प्राप्ति हो उन वृक्षों को दीपांग कल्पवृक्ष कहते हैं।

सूत्र—सुरूपसुगन्धकायास्वेदानिहारप्रियहितवचनातुल्य-बलश्वेतरुधिराष्टाधिकसहस्रलक्षणसमचतुरस्रसंस्थानवज्रर्षभ-नाराचसंहननानि तीर्थकृज्जन्मातिशयाः ॥१०॥

अर्थ—अतिशय से प्रयोजन उन अद्भुत बातों से है जो सर्व साधारण प्राणियों या मनुष्योंमें न पाई जायें।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

तीर्थंकरोंके जन्मके साथ ही दश अतिशय हुआ करते हैं। नाम उनके ये हैं :—

(१) सुरूपकायातिशय (२) सुगन्धकायातिशय (३) अस्वेदातिशय (४) अनिहारातिशय (५) प्रियहित-वचनातिशय (६) अतुल्यबलातिशय (७) श्वेतरुधिरातिशय (८) अष्टाधिकसहस्रलक्षणातिशय (९) समचतुरसंस्थाना-तिशय (१०) वज्रवृषभनाराचसंहननातिशय :

[१] सुरूपकायातिशय—बहुत ही अच्छी सुन्दर मनोहारि शरीराकृति तीर्थंकरों की हुआ करती है अतः वह जन्मसम्बन्धी अतिशयोंमें एक माना गया है।

[२] सुगन्धकायोतिशय—इससे तीर्थंकरों का शरीर मन-मोदकारी महक (सुगन्ध) से युक्त होता है।

[३] अस्वेदातिशय—इसके कारण तीर्थंकर का शरीर ऐसा होता कि उसमें पसीने आदि की बाधा नहीं होती।

[४] अनिहारातिशय—इसमे तीर्थंकरों का शरीर मल मूत्रादि की बाधा से रहित होता है।

[५] हितमितप्रियवचनातिशय- तीर्थंकर, जीवके हितकरने वाले प्रियवचनोंको बोलते हैं इस अतिशय के प्रभाव से।

[६] अतुल्यबलातिशय—तीर्थंकरों का शरीर जन्म के साथ ही ऐसा बलशाली होता है कि उसकी बराबरी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

कोई नहीं कर सकता।

[७] श्वेतरुधिरातिशय–तीर्थंकरोंके शरीरमें दूधके समान सफेद खून (रूधिर) पाया जाता है। यह भी जन्म सम्बन्धी अतिशय है।

[८] अष्टाधिकसहस्रलक्षणातिशय – तीर्थंकरोंका शरीर एक हजार आठ लक्षणों से युक्त होता है।

[९] समचतुरस्रसंस्थानातिशय—तीर्थंकरों का शरीर ऊपर नीचे और बीच में समान भाग रूप होता हुआ सुडौल होता है।

[१०] वज्रवृषभनाराचसंहननातिशय — तीर्थंकरोंका शरीर वज्र के वृषभ (वेष्टन) वज्रके नाराच (कील) और वज्रके संहनन (हड्डियों के बन्धन) से युक्त होता है। ये दश बातें तीर्थंकरों के जन्म से ही होती हैं अतः इन्हें तीर्थंकृत् जन्मातिशय कहते हैं।

सूत्र–योजनशतसुभिक्षनभोयानचतुर्मुखदर्शनादयाऽभावानुपसर्गाकवलाहारसर्वविद्येश्वरत्वानखकेशावृद्ध्यनिमेषनेत्रनिश्छायाः केवलज्ञानातिशयाः ॥११॥

अर्थ—अरहन्तभगवान के केवलज्ञानादशासम्पन्न होते ही दश अतिशय प्रगट होते हैं। अतिशयों के नाम ये हैं :–

(१) शतयोजनसुभिक्षातिशय (२) नभोयानातिशय

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(३) चतुर्मुखदर्शनातिशय (४) अदयाऽभावातिशय (५) अनुसर्गातिशय (६) अकवलाहारातिशय (७) सर्वविद्येश्वरतातिशय (८) नखकेशअवृद्ध्यातिशय (९) अनिमेषनेत्रातिशय (१०) निश्छायातिशय ।

(१) शतयोजनसुभिक्षातिशय—जब भगवान को केवलज्ञान होता है तो उस समय जहाँ वे रहते हैं (स्थान के) चारों ओर सौ सौ योजन तक सुभिक्ष और सुकाल होता है। इसी का नाम शतयोजनसुभिक्षातिशय है।

(२) नभोयानातिशय–भगवान पृथ्वी तल का स्पर्श न करते हुये आकाश में गमन करते हैं।

(३) चतुर्मुखदर्शनातिशय–भगवान का मुंह चारों ओर देखने वालों को दिखलाई देता है।

(४) अदयाऽभावातिशय–क्रूर एवं हिंसारूप परिणामों का अभाव हो जाता है उस स्थान में जहां केवलज्ञानी रहते हैं। इतना ही नहीं उनके शरीर से किसी भी जीव का घात नहीं होता तात्पर्य यह है कि उनके शरीरसे जीव की हिंसा का अभाव हो जाता है।

(५) अकवलाहारातिशय–केवलज्ञान प्राप्तिके बाद उन पर कोई उपसर्ग या उपद्रव नहीं कर सकता।

(६) अकवलाहारातिशय–केवलज्ञानी अरहन्तदेव आहार ग्रहण नहीं करते ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(७) सर्वविद्येश्वरतातिशय—सम्पूर्ण विद्याओं एवं शास्त्रों का पूर्ण ज्ञातृत्व अरहन्तदेव को केवलज्ञान की प्राप्ति के साथ प्राप्त हो जाता है।

(८) नखकेशावृद्धयातिशय—केवलज्ञानी अरहन्तदेव के न तो नाखून बढ़ते और न बाल ही वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

(९) अनिमेषनेत्रातिशय—अरहन्तदेव के नेत्रों की पलकें झपकती नहीं। यह केवलज्ञान कृत अतिशय है।

(१०) निश्छायातिशय—केवलज्ञान की प्राप्ति के साथ ही उनके शरीरकी परछाई पड़ना बन्द हो जाती है।

सूत्र— सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तक्षपकक्षीणमोहजिनासंख्येयगुणनिर्जरा--श्रयाः ॥१२॥

अर्थ—असंख्यातगुणी निर्जरा के आश्रय दश हैं अर्थात् आगे जिनके नाम लिखे जा रहे हैं उनके परिणामों की विशुद्धता से प्रतिसमय असंख्यातगुण निर्जरा (कर्मों का झड़ना) होती है। दस के नाम ये हैं:—

(१) सम्यग्दृष्टि (२) श्रावक (३) विरत (४) अनन्त वियोजक (५) दर्शनमोहक्षपक (६) उपशमक (७) उपशांत मोह (८) क्षपक (९) क्षीणमोह (१०) जिन।

(१) सम्यग्दृष्टि—किसी प्रकारके व्रत नियमादि

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

का आचरण न करते हुये स्वात्मोन्मुखी दृष्टि से सम्पन्न व संसार में रहते हुये 'जल में भिन्न कमल है' जैसे रहने वाला।

(२) श्रावक—देशसंयमको पालन करने वाला पञ्चम गुणस्थानवर्ती प्राणी।

(३) विरत—अन्तरंग एवं बाह्य परिग्रह को त्याग जो सांसारिक विषय वासनाओं से विमुख हो गया हो ऐसा मुनि।

४) अनन्त वियोजक—अनन्तानुबन्धी क्रोधमान-मायालोभ रूप कषायकी विसंयोजना करने वाला।

(५) दर्शनमोहक्षपक—दर्शनमोहनीय नामक कर्म प्रकृतिका क्षय करनेवाला।

(६) उपशमक —चारित्रमोहका उपशम करने वाला।

(७) उपशान्तमोह–ऐसा मुनि जिसका मोह उपशान्त हो गया हो।

(८) क्षपक–क्षपक श्रेणि मांडने या चढ़ने वाला।

(९) क्षीणमोह—बारहवें गुणस्थानवर्ती मुनि जो नियम से अब केवलज्ञान का धनी होगा।

(१०) जिन—अन्तरंग शत्रुओं के प्रमुख प्रणेता [मोहनीय] पर परुष प्रहार कर उसे छिन्न भिन्न जिसने कर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

दिया हो, जो अनन्तचतुष्टय से युक्त हो प्राणियों को जय के मार्गोपदेश को देता हो और इस तरह प्रेरणा कर रहा हो जिन बनने की।

इनके क्रम से असंख्यातगुणी निर्जरा होती है या असंख्यातगुणी निर्जरा के ये दस आश्रय हैं।

सूत्र— क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्य-भाण्डाः बाह्यपरिग्रहाः ॥१३॥

अर्थ—परिग्रह से प्रयोजन ममत्व बुद्धि से है। जो वस्तुतः बहुत ज्यादा जुदे हैं ऐसे महलमकानादि में और अन्तरङ्ग में पाये जाने वाले क्रोधादि कषायों में 'ये मेरे हैं' ऐसी भावना या बुद्धि करना परिग्रह है। बाह्य परिग्रह दश भेद वाला है। नाम उनके ये हैं:—

(१) क्षेत्र परिग्रह (२) वास्तुपरिग्रह (३) हिरण्य-परिग्रह (४) सुवर्णपरिग्रह (५) धनपरिग्रह (६) धान्यपरिग्रह (७) दासीपरिग्रह (८) दासपरिग्रह (९) कुप्यपरिग्रह (१०) भाण्डपरिग्रह।

(१) क्षेत्रपरिग्रह—खेत आदि खुली भूमि में ममत्व बुद्धि रखना।

(२) वास्तुपरिग्रह—रहने के घरों में ममता कर अपना समझना।

(३) हिरण्यपरिग्रह—चांदी के बटोरने में लगे

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

पुरोहितादि के स्थानापन्न हों। इनकी संख्या तेतीस ही रहती है।

(४) पारिषदपद—राजदरबार के दरबारियों के समान जो इन्द्र की सभा में बैठने वाले सभासद हों।

(५) आत्मरक्षपद—जैसे राजाओं के अङ्गरक्षक रहते हैं वैसे ही इन्द्र के दरबार में जो अंगरक्षक के रूप में रहते हैं।

(६) लोकपालपद—ऐसे देव जो कोतवाल के समान तत्रत्य लोक का पालन करते हैं। वे लोकपालपदारूढ़ होते हैं।

(७) अनीकपद—देव जो पदाति आदि सात प्रकार की सेनाओं में विभक्त हो इन्द्र की ऐश्वर्यवृद्धि करते हैं।

(८) प्रकीर्णकपद–नगर में नगरवासी जैसे होते हैं वैसे ही देवलोक में नागरिकों के रूपमें जो रहते हों।

(९) आभियोग्यपद—ऐसे देव जो दासों के समान सवारी आदि के काममें आवे।

(१०) किल्विषिकपद–चाण्डालादिक के समान जो नीच काम करने वाले देव हों देवलोक में वे किल्विषिक कहलाते हैं।

सूत्र—ऐशानपूर्वाग्रे यदक्षिणनैऋत्यपश्चिमवायव्योत्त-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

रोर्ध्वाधाः सर्वदिशः ॥१६॥

अर्थ—सम्पूर्ण दिशाओं की संख्या दस है। उन दश के नाम ये हैं। ऐशान दिशा से गिनने का प्रारम्भ होता है।

ईशानदिशा, पूर्वदिशा, आग्नेय, दक्षिणदिशा, नैऋत्यदिशा, पश्चिमदिशा, वायव्यदिशा, उत्तरदिश, उर्ध्व-दिशा, अधोदिशा।

(१) ऐशानदिशा–उत्तर पूर्व के कोण के मध्य की दिशा का यह नाम है।

(२) पूर्वदिशा- जिस तरफ से भी दिशा में सूर्य ऊगता है।

(३) आग्नेयदिशा—पूर्व और दक्षिण के मध्य में यह स्थित है।

(४) दक्षिणदिशा_सूर्य की ओर मुंह करके खड़े होने पर दाये हाथ की ओर यह दिशा स्थित है।

(५) नैऋत्यदिशा–दक्षिण और पश्चिम के मध्य में यह दिशा स्थित है।

(६) पश्चिमदिशा—सूर्य जिस ओर अस्त होता है उस दिशा का नाम यह है।

(७) वायव्यदिशा_पश्चिम और उत्तर के मध्य में यह दिशा पाई जाती है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सूत्र— रत्नस्त्रीनगरासनशय्यासैन्यभोजनपात्रनाट्यशालावाहनानिचक्रिभोगाः ॥१८॥

अर्थ—चक्रवर्ती के दश प्रकार के भोग होते हैं। उन भोगों के नाम ये हैं:–

रत्न, स्त्री, नगर, आसन, शय्या, सैन्य, भोजन, पात्र, नाट्य शाला, वाहन।

सूत्र—अतिबालविद्याकुलविद्यावर्णोत्तमपात्रसृष्टयधिकारव्यवहारदेश्यवध्यादन्ड्यमानाहिताप्रजासम्बन्धान्तराण्युपासकाध्ययनाधिकारवस्तूनि ॥१९॥

अर्थ—उपासकाध्ययन नामक सातवें अंग के दस अधिकार वस्तु हैं। नाम उनके इस प्रकार हैं:–

(१) अतिबाल नामक अधिकारवस्तु (२) विद्याकुल-नामक अधिकारवस्तु (३) विद्यावर्ण नामक अधिकारवस्तु (४) उत्तमपात्र नामक अधिकारवस्तु (५) सृष्टयधिकार नामक अधिकारवस्तु (६) व्यवहारदेशि नामक अधिकार-वस्तु (७) अवध्यमानहिता नामक अधिकारवस्तु (८) अदण्डयमानाहिता नामक अधिकारवस्तु (९) प्रजासम्बन्ध नामक अधिकारवस्तु १०) अन्तर नामक अधिकार-वस्तु।

सूत्र—आकंपितानुमापितदृष्टबादरसूक्ष्मप्रच्छन्नशब्दाकुलितबहुजनाव्यक्ततत्सेविन आलोचनादोषाः ॥२०॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

अर्थ—आलोचनासम्बन्धी दस दोष होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) आंकपित आलोचनादोष (२) अनुमापित आलोचनादोष (३) दृष्ट (यद्दृष्ट) आलोचनादोष (४) बादर आलोचनादोष (५) सूक्ष्म आलोचनादोष (६) छन्न आलोचनादोष (७) शब्दाकुल आलोचनादोष (८) बहुजनदोष (९) अव्यक्त आलोचनादोष (१०) तत्सेवित आलोचनादोष।

(१) आकंपित आलोचनादोष—गुरू महान प्रायश्चित, अपराध का देगें ऐसी आशंका कर उन्हें संयम के उपकरणादि का दान देकर अल्प प्रायश्चित प्रदान करने के लिये अनुकूल बना लेना आकंपित आलोचनादोष है।

(२) अनुमापित आलोचनादोष— तप की चर्चा में, उत्कृष्ट कठोर तप के आचरण करने वाले वे वीर पुरुष धन्य हैं लेकिन मैं बड़ा अभागी और सामर्थ्य हीन हूँ जो ऐसे तप का आचरण नहीं करपाता ऐसा वार्तालाप, गुरु से, इस दृष्टि से करना कि मुझे अल्प प्रायश्चित प्रदान कर मुझ पर अनुग्रह कर देगें, करना।

(३) यद्दृष्ट आलोचना—अपने दोषों को ढांककर दूसरे के दोषों को गुरु के समक्ष प्रकाशित करना और

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

उसके अनुसार दण्डादि को ग्रहण कर लेना यदृष्ट दोष है।

(४) बादर आलोचनादोष—गुरुके समक्ष, सूक्ष्म दोषोंको छुपाते हुये, मात्र स्थूल दोषों का प्रकाशन करना।

(५) सूक्ष्माख्य आलोचनादोष—स्थूल दोषोंका उल्लेख न करते हुये, उन्हें छुपाते हुये, मात्र सूक्ष्म दोषों को गुरु के समक्ष प्रकाशित करना।

(६) छन्नाख्य आलोचना–अपने दोषों का उल्लेख न करते हुये, छुपे ढंग से कि गुरुदेव ? यदि ऐसा अपराध बन जाये तो किसप्रकार का प्रायश्चित्त करना चाहिये इस ढंगसे पूंछकर बतलाये हुये प्रायश्चितका स्वयं आचरण कर लेना, छन्न नामक आलोचना दोष के अन्तर्गत आता है।

(७) शब्दाकुलाख्य आलोचनादोष—जबकि गुरु जी के आस पास बहुत ज्यादा हो हल्ला हो रहा हो उस समय प्रायश्चित्त के लिये गुरुजी के समीप जा अपने अपराध को कहना।

(८) बहुजनाख्य आलोचनादोष—पहिले आचार्य के द्वारा प्रदत्त पश्चात् प्रायश्चित्त कुशलों के द्वारा चर्चित जो प्रायश्चित्त उसका अपराध बनने पर अनुष्ठान करना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

(९) अव्यक्त आलोचनादोष-ज्ञान और संयम से हीन व्यक्ति से प्रायश्चित्त ग्रहण करना अव्यक्त दोष है।

(१०) तत्सेवित आलोचनादोष—आत्मसदृश अपराध करने वाले को प्रायश्चित्त प्रदान करनेवालेने जो प्रायश्चित्त दिया है उसको स्वयं आचरण करने लगजाना, गुरुको अपना दोष नहीं बतलाना।

सूत्र— देशसम्मतस्थापनानामरूपप्रतीत्यव्यवहारसंभावनाभावोपमावचनानि सत्यवचनानि ॥२१॥

अर्थ—सत्य अर्थ के वाचक वचन सत्यवचन कहलाते हैं, उनके दश भेद हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) देश (जनपद) सत्यवचन (२) सम्मत सत्यवचन (३) स्थापना सत्यवचन (४) नाम सत्यवचन (५) रूप सत्यवचन (६) प्रतीत्य सत्यवचन (७) व्यवहार सत्यवचन (८) संभावना सत्यवचन (९) भाव सत्यवचन (१०) उपमा सत्यवचन।

(१) देश (जनपद) सत्यवचन—तत् तत् देशमें रहने वाले मनुष्योंके व्यवहारमें जो शब्द रूढ़ होरहा है उसे जनपद सत्य कहते हैं। जैसे भक्त, भात, कुलु।

(२) सम्मति सत्यवचन—बहुतसे मनुष्योंकी सम्मति या राय से जो सर्वसाधारणमें रूढ़ हो उसे सम्मति या

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सम्मत सत्य कहते हैं। जैसे साधारण स्त्री को भी देवी कहना।

(३) स्थापना सत्यवचन—भिन्न वस्तु में भिन्न वस्तु के समारोप करने वाले वचन का नाम स्थापना सत्य है जैसे मूर्ति को पार्श्वनाथ कहना।

(४) नाम सत्यवचन—गुणों की ओर दृष्टि न रखते हुये मात्र व्यवहार के लिये जो किसी का संज्ञा कर्म करना, नाम सत्यवचन हैं। जिनदत्त यह इसका उदाहरण है।

(५) रूप सत्यवचन—पुद्गल में पाये जाने वाले अनेक गुणोंमेंसे रूप की प्रधानता से जो वचन कहा जाये। जैसे मनुष्य में पाये जाने वाले रस आदि को गौण कर श्वेत कहना।

(६) प्रतीत्य सत्यवचन-किसी विवक्षित पदार्थ की अपेक्षा दूसरे पदार्थ के स्वरूप का कथन करना प्रतीत्य या आपेक्षिक सत्य है। "अमुक लम्बा है या स्थूल है" यह इस सत्यवचन का उदाहरण है।

(७) व्यवहार सत्यवचन—नैगमादिनयों की प्रधानता से जो वचन बोला जाये उसको व्यवहार सत्य कहते हैं।

(८) संभावना सत्यवचन—असंभावना को दूर करते हुये वस्तु के किसी धर्म के निरूपण करने में तत्पर वचन संभावना सत्यवचन कहलाता है। जैसे इन्द्र जम्बूद्वीप के

Report any errors at vikasnd@gmail.com

लौटा सकता है।

(९) भाव सत्यवचन—आगमोक्त विधिनिषेध के अनुसार अतीन्द्रिय पदार्थों में संकल्पित परिणामों को भाव कहते हैं व उसके आश्रितवचन को सत्यवचन कहते हैं। जैसे शुष्क तप्त पक्व फल प्रासुक होता है।

(१०) उपमा सत्यवचन–दूसरे प्रसिद्ध सदृश पदार्थ को उपमा कहते हैं। इसके आश्रय से जो वचन बोला जाये उसको उपमा सत्य कहते हैं, जैसे पल्य प्रमाण

सूत्र–तद्विपरीमान्यसत्यवचनानि ॥२२॥

अर्थ—ऊपर जो सत्यवचन के दश भेद बतलाये हैं उनसे विपरीत (उल्टे) लक्षण वाले असत्यवचन होते हैं, इसके भी दश भेद हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) अजनपद असत्यवचन (२) असम्मत या असम्मति असत्यवचन (३) अस्थापना असत्यवचन (४) अनाम असत्यवचन (५) अरूप असत्यवचन (६) अप्रतीत्य असत्यवचन (७) अव्यवहार असत्यवचन (८) असंभावना असत्यवचन (९) अभाव असत्यवचन (१०) अनुपमा असत्यवचन।

इससे ठीक पहिले के सूत्र में दश सत्यवचनों के स्वरूप का दिग्दर्शनमय उनके उदाहरण देकर दिया गया है। उससे ठीक २ उल्टा स्वरूप प्रत्येक असत्यवचन का

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

है अतः यहां विशेष नहीं लिखा जा रहा है उदाहरण के लिये अजनपद असत्यवचन का स्वरूप यहां दिखाया जा रहा है, अन्य सत्यवचनों का भी ऐसा स्वरूप समझ लेना चाहिये।

अजनपद असत्यवचन— तत् तत् देश में रहने वाले मनुष्यों या जनों के व्यवहार में जिस अर्थ में बोला जा रहा हो उस अर्थ में रूढ़ न हो फिर उसे उस अर्थ में रूढ़ कहना अजनपद असत्यवचन है।

सूत्र—अनागतातिक्रान्तकोटिसहितनिखण्डितसाकारानाकारपरिणामगतापरिशेषाध्वगतसहेतुकानि प्रत्याख्यानानि ॥२३॥

अर्थ—अपने जो शुभ और अशुभ परिणाम हैं उनके निमित्त से होने वाले भावी कर्मों के बंध को निरोध करना प्रत्याख्यान कहलाता है। उसके दश भेद हैं। नाम उन भेदों के ये हैं:-

(१) अनागत नामक प्रत्याख्यान (२) अतिक्रान्त नामक प्रत्याख्यान (३) कोटि सहित प्रत्याख्यान (४) निखण्डित नामक प्रत्याख्यान (५) साकार नामक प्रत्याख्यान (६) अनाकार नामक प्रत्याख्यान (७) परिमाणगत नामक प्रत्याख्यान (८) अपरिशेष नामक प्रत्याख्यान (९) अध्वगत नामक प्रत्याख्यान (१) सहेतुक नामक

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

प्रत्याख्यान।

[१] अनागत नामक प्रत्याख्यान—जिसे चतुर्दशी आदि आगामी काल में करना ऐसे उपवास को त्रयोदशी आदि तिथि को कर लेना अनागत नामक प्रत्याख्यान हैं।

[२] अतिक्रान्त नामक प्रत्याख्यान-जिसका समय बीत चुका हो ऐसे उपवासादि को करना सो अतिक्रान्त प्रत्याख्यान है। जिसे चौदस नामक तिथि को कर लेना चाहिये या उस उपवासादि क्रिया को प्रतिपदा आदि तिथियों में करना अतिक्रान्त प्रत्याख्यान में गर्भित है।

[३] कोटिसहित प्रत्याख्यान—यदि कल स्वाध्याय की वेला के व्यतीत हो जाने पर शक्ति होगी तो उपवास करूंगा अन्यथा नहीं इस प्रकार सशर्त जो सङ्कल्प है उसे कोटि सहित प्रत्याख्यान कहा गया है।

[४] निखण्डित नामक प्रत्याख्यान-पक्ष आदि में अवश्य ही की जाने योग्य जो उपवासादि क्रियायें उन का करना निखण्डित प्रतिक्रमण है।

[५] साकार नामक प्रत्याख्यान—सर्वतोभद्र, कनकावली आदि उपवासविधि का करना साकार प्रत्याख्यान है।

[६] अनाकार नामक प्रत्याख्यान-अपनी इच्छा से

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

बिना किसी नक्षत्रादि के भेद से उपवासादि क्रियाओं को करते रहना अनाकार प्रत्याख्यान है।

[७] परिमाणगत नामक प्रत्याख्यान—छः, आठ, दस बारह, पक्ष, अर्धपक्ष, मास आदि का प्रमाण कर उपवासादि क्रियाओं का करना परिमाणगत प्रत्याख्यान है।

[८] अपरिशेष नामक प्रत्याख्यान—जब तक जीवन शेष है तब तक के लिये चार प्रकार के आहारों का त्याग कर देना अपरिशेष नामक प्रत्याख्यान है।

[९] अध्वगत नामक प्रत्याख्यान—मार्गगत नदी, अटवी के पार करने के निमित्त से उपवासादि करना अध्वगत प्रत्याख्यान है।

[१०] सहेतुक नामक प्रत्याख्यान—उपसर्ग आदि निमित्त को लेकर कि 'जब तक दूर नहीं होगा मेरा उपवास है' उपवास करना सहेतुक प्रत्याख्यान है।

सूत्र—स्त्रीविषयाभिलाषवस्तिविमोक्षवृष्याहारसंसक्तद्रव्य सेवतेन्द्रियावलोकनसत्कारसंस्कारातीतभोगस्मरणानागताभि-लाषेष्टविषयसेवनान्यब्रह्माणि ॥२४॥

अर्थ—अब्रह्म से प्रयोजन मैथुन का है। ब्रह्मचर्य व महाव्रत के पालन में तत्पर मुनिराजों को चाहिये कि मैथुन रूप परिणामों का पूर्णरूप से परित्याग करदें। मैथुन के

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

दशभेद हैं, नाम उनके ये हैं:—
(१) स्त्रभिलाष (२) विषयाभिलाष (३) बस्तिमोक्ष या बस्तिविमोक्ष (४) वृष्याहारसंसक्तद्रव्यसेवन (५) इन्द्रियावलोकन (६) सत्कार (७) संस्कार (८) अतीतभोगस्मरण (९) अनागताभिलाष (१०) विषयसेवन।

[१] स्त्र्यभिलाष—कमनीय काय विशिष्ट कामनी के प्रति रमण करने की इच्छा करना।

[२] विषयाभिलाष—इन्द्रियोंसे रूप रस गंधादि विषयोंके भोगनेकी इच्छाकरना।

[३] बस्तिविमोक्ष—काम सेवन के अंगभूत लिंग में विकार को करना।

[४] वृष्याहारसंसक्तद्रव्यसेवन-शरीरकी शुक्रादि धातुओं की वृद्धि करने वाले खीर पूड़ी आदि रूप गरिष्ठ आहार का सेवन करना।

[५] इन्द्रियावलोकन—स्त्री संबंधी काम के गुह्यांगो को देखने के लिये चेष्टा करना।

[६] सत्कार—स्त्रियों को सन्मान प्रदान करना।

[७] संस्कार—स्त्रियोंको सुन्दरवस्त्रों एवं माला आदि आभूषणोंसे सजाना।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

[८] अतीतभोगस्मरण—पूर्वमें स्त्रियोंके साथ मैंने अमुक अमुक भोग भोगे, उनके साथ ये ये क्रीड़ायें की इस प्रकार अनुभूत भोगों का स्मरण करना, उनका ख्याल करना।

[६] अनागताभिलाष—'आगे मैं स्त्रियों के साथ इस प्रकार के भोग भोगूंगा इस प्रकार भावी विषयोंके प्रति इच्छा करना।

(१०) विषयसेवन–रूपादिक विषयों का, जिनके प्रति अभिलाषा की, सेवन करने लग जाना।

सूत्र—शंकितपिहितम्रक्षितनिक्षिप्तसंव्यवहरणदायेको न्मिश्रापरिणतलिप्तव्यक्ता अशनदोषाः ॥२५॥

अर्थ—दोष रहित एषणा समिति के परिपालन के लिये जहां अन्य दोषों के परित्याग की आवश्यकता है वहीं मुनि को चाहिये कि वह भोज्य दोषों का भी परिहार करे। अशन या भोज्य दोष दस हैं। नाम उनके इस प्रकार से हैं:-

(१) शंकित अशनदोष (२) पिहित अशनदोष (३) म्रक्षित अशनदोष (४) निक्षिप्त अशनदोष (५) संव्यवहरण अशनदोष (६) दायक अशनदोष (७) उन्मिश्र (विमिश्र) अशनदोष (८) अपरिणतदोष (६) लिप्त अशन दोष (१०) व्यक्त अशनदोष।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१) शंकित अशनदोष-जिनागममें इस द्रव्यको जो कि भोज्य रूपमें दी जा रही है। ग्राह्य बतलाया है या नहीं, इस प्रकार का संदेह होना शंकित अशनदोष है।

(२) पिहित अशनदोष—हरे, अप्रासुक, सचित्त द्रव्यसे अथवा भारी प्रासुकद्रव्यसे ढकेहुये भोज्य द्रव्य पिहितदोषसमन्वित कहलाते हैं।

(३) म्रक्षित अशनदोष- घी तेल आदि से स्निग्ध हाथ, बर्तन या कड़छीसे संयत पुरुष (मुनि) को भोज्य पदार्थ देना।

(४) निक्षिप्त अशनदोष-जो भोज्य पदार्थ सचित्त भूमि, जल, अग्नि, प्ररोहण शक्ति से युक्त गेहूं पर रखे हुये हों, अम्लानावस्था को प्राप्त त्रसों से युक्त हरे हरे पत्ते तृणादि पर रक्खे हुये हों वे सब निक्षिप्त दोष युक्त हैं।

(५) संव्यवहरण अशनदोष—पात्र को दान देने के लिये, बिना कुछ विचार किये, जल्दी, संभ्रम पूर्वक चेल (वस्त्र) भाजन (पात्र) आदि को धरना, उठाना, खींचना तथा तद्गत आहार वस्तु को लेना संव्यवहरणदोष है।

(६) दायक अशनदोष- वह भोज्यपदार्थ दायक दोष से युक्त होता हैं जो रजस्वला, गर्भिणी आदि अपवित्र स्त्रियोंके द्वारा तथा नपुंसक, मरे को श्मशान

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

भेजकर आये हुये, मृतक के पातक व सूतक से युक्त पुरुष के द्वारा दिया गया हो।

(७) उन्मिश्र अशनदोष—वह अन्न जो संयत पुरुष को सचित्त पृथ्वी, जल, बीज तथा हरे पत्रफलपुष्प से मिला कर दिया जाता है वह उन्मिश्रदोष युक्त होता है।

(८) अपरिणत अशनदोष—तुष (धान) का जल, चने का जल, तण्डुल का जल और उष्ण जल यदि अपने वर्ण गन्ध रस का परित्याग नहीं करते वैसे ही बने रहते हैं ऐसे जल अपरिणत कहे जाते हैं और वे मुनियों के द्वारा उपयोग नहीं आने योग्य हैं, त्याज्य हैं।

(९) लिप्त अशनदोष—गैरिक आदि खड्डे पतले पदार्थ से सने हुये कच्चे चांवल आटे की पिट्ठी में भरे हुये अथवा अप्रासुक जल से गीले हाथों से देने योग्य पदार्थों को संयत पुरुष के लिये दिया जाता है वह अशन लिप्तदोष से युक्त होता है।

(१०) व्यक्त अशनदोष—बिना भलीप्रकारसे विचारणा किये, संभ्रम (क्षोभ, भय या आदर) से, अन्नादि भोज्य को औषधि आदि को वस्त्र, चटाई, पात्रादि के द्वारा खींचकर यदि दिया जाये तो वह अशन व्यक्तदोष से युक्त है और संयत द्वारा त्याज्य है।

सूत्र-चमरभूतानन्दवेणुपूर्णजलप्रभघोषहरिषेणाभितग-

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

त्यग्निशिखिप्रलम्बाभवनवासिदक्षिणेन्द्राः ॥२६॥

अर्थ—भवनवासियों के दक्षिण दिशा सम्बन्धी दस इन्द्र होते हैं, नाम उनके ये हैं:—

(१) चमर दक्षिणेन्द्र (२) भूतानन्द दक्षिणेन्द्र (३) वेणु दक्षिणेन्द्र (४) वेणुपूर्ण दक्षिणेन्द्र (५) जलप्रभ दक्षिणेन्द्र (६) घोष दक्षिणेन्द्र (७) हरिषेण दक्षिणेन्द्र (८) अमितगति दक्षिणेन्द्र (९) अग्निशिखी दक्षिणेन्द्र (१०) प्रलम्ब दक्षिणेन्द्र।

सूत्र— वैरोचनधरणानन्दवेणुधारिविशिष्टजलकान्तमहाघोष हरिकान्तामितवाहनाग्निवाहनप्रभंजना भवनवास्युत्तरेन्द्राः ॥२७॥

अर्थ—भवनवासियों के उत्तर दिशा सम्बन्धी दश इन्द्र होते है। नाम उनके इस प्रकार हैं।

(१) वैरोचन उत्तरेन्द्र (२) धरणानन्द उत्तरेन्द्र (३) वेणुधारी उत्तरेन्द्र (४) वेणुविशिष्ट उत्तरेन्द्र (५) जलकान्त उत्तरेन्द्र (६) महाघोष उत्तरेन्द्र (७) हरिकान्त उत्तरेन्द्र (८) अमित्तवाहन उत्तरेन्द्र (९) अग्निवाहन उत्तरेन्द्र (१०) प्रभंजन उत्तरेन्द्र।

सूत्र—इच्छामिथ्यातथाकाराशिकानिषेधिकाऽऽपृच्छाप्रतिपृच्छाछन्दननिमन्त्रणोपसंपद औधिकसमाचाराः ॥२८॥

अर्थ—समाचार शब्द से निरतिचार रूपसे अट्ठाईस

http://sahjanandvarnishastra.org/

मूलगुणोंके परिपालनकावोध होता है। समीचीन अवबोध अथवा निर्दोष (छयालीस दोष रहित) आहार ग्रहणको भी समाचारमें गर्भित करलिया जाताहै। समाचारके दो भेद हैं, एक औघिक समाचार दूसरा पद विभागिकसमाचार। इस सूत्र में औघिक समाचार के दश भेदोंको गिनाया गया है, नाम उनके ये हैं:—

(१) इच्छाकार नामक औघिक समाचार (२) मिथ्या कार नामक औघिक समाचार (३) तथाकार नामक औघिक समाचार (४) आसिक नामक औघिक समाचार (५) नि-घका नामक औघिकसमाचार (६) आपृच्छ नामक औघिकसमाचार (७) प्रतिपृच्छ नामक औघिकसमाचार (८) छन्दन नामक औघिकसमाचार (९) निमन्त्रण नामक औघिकसमाचार (१०) उपसम्पद् नामक औघिक समाचार।

[१] इच्छाकार नामक औघिक समाचार—सम्यग्द-र्शनादिशुभपरिणामों को स्वीकार करने में स्वेच्छया प्रवृत्ति करना इच्छाकार औघिक समाचार है।

[२] मिथ्याकार नामक औघिक समा चार—व्रतादिकों में अतीचारादि रूप अशुभपरिणाम होने पर काय मन क प्रवृत्ति उस ओरसे हटाना। वह मिथ्या हो ऐसा सोचना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

[३] तथाकार नामक औधिकसमाचार— सूत्रार्थ समझते समय "जैसा आपने प्रतिपादित किया है वह वैसा ही है अन्यथा नहीं" इस प्रकार का अनुराग करना।

[४] आसिका नामक औधिक समाचार—पाप क्रियाओंसे मनको हटाना अथवा देव, गृहस्थ आदि को पूंछ कर जाना।

[५] निषेधिका नामक औधिक समाचार-पूज्य स्थान में पूंछ कर अन्दर आना अथवा सम्यग्दर्शनादिको में स्थिरता लाना।

[६] आपृच्छ नामक औधिक समाचार—पठन गमन आदि अपने कार्य के आरम्भ में, गुरु आदिकों को वन्दना करके उनके अभिप्राय जानने के लिये प्रश्न करना।

[७] प्रतिपृच्छ नामक औधिक समाचार—निषिद्ध अथवा अनिषद्ध वस्तु की प्राप्ति के पुनः विनय सहित प्रश्न करना।

[८] छन्दन नामक औधिक समाचार-जिसकी जो वस्तु जिस अभिप्राय से ली उसको उसरूप में उपयोगमें लेना।

[९] निमन्त्रण नामक औधिक समाचार—विनय या सत्कारपूर्वक कार्य समाप्त होने पर वस्तु को मांग

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

लेना ।

[१०] उपसम्पद् नामक औधिक समाचार—अपने आपको मैं आपका हूं इस तरह गुरु के पादमूल छोड़ देना ।

सूत्र—शृङ्गारपुष्टरससेवनगीतश्रवणस्त्रीसंगतिवाञ्छामनोहरांगनिरीक्षणदर्शनावाञ्छापूर्वभोगस्मरणागामिकामेच्छावीर्यपातमैथुनदोषाः ॥२६॥

अर्थ—मैथुनसे प्रयोजन स्त्रीपुरुषको आपस में एक दूसरे के साथ रमण या कामसेवन की इच्छा करने से है । इसके दस दोष हैं । नाम उनदोषों के ये हैं:—

(१) शृङ्गार मैथुनदोष (२) पुष्ट रससेवन (३) गीत श्रवण करने की वाञ्छा (४) स्त्री संगतिवांछा (५) स्त्री मनोहरांग निरीक्षण (६) दर्शन (७) वाञ्छा (८) पूर्वभोग स्मरण (६) आगामिक इच्छा (१०) वीर्यपात ।

(१) शृङ्गार मैथुन दोष—अपने शरीर को कामुकता को बढ़ाने वाले पदार्थों से सजाना ।

(२) पुष्टरससेवन मैथुनदोष-शरीरस्थित शुक्रादि धातुओं की वृद्धि करने वाले गरिष्ठ पदार्थों (खीर पूड़ी हलवा आदि) का सेवन करना ।

(३) गीतश्रवण मैथुनदोष—कामोद्दीपक कानों को अच्छे लगने वाले कामनियों के गाने सुनना ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(४) स्त्रीसंगतिः—काम की भावना से स्त्रियों की समाज में उठना बैठना।

(५) स्त्रीवाञ्छा मैथुनदोषः—जिस स्त्रीसमाजमें उठते बैठते हैं उसमें से किसी स्त्री विशेषकी प्राप्तिकी अभिलाषा करना।

(६) मनोहरांगनिरीक्षण मैथुनदोषः—जिस स्त्री की प्राप्ति के लिये अभिलाषा की उसके या अन्य स्त्रियों के कुचों नेत्रों आदि अंगोंको देखना।

(७) दर्शनवाञ्छा मैथुनदोषः—जिस स्त्री के प्रति वाञ्छा की है। जिसके मनोहर अंगोंको देखा है उसके दर्शनों के लिये तड़फड़ाना विव्हल होना।

(८) पूर्वभोगस्मरणः—व्रत लेनेके पहिले जिन विषयभोगोंका उपभोग किया है उनका स्मरण करना।

(९) आगामिकामेच्छा मैथुनदोषः—मुझे भविष्यमें इस इस प्रकारके भोगों की प्राप्ति हो' ऐसी भावी विषयों के प्रति अभिलाषा करना।

(१०) वीर्यपात मैथुनदोषः—अति कामुकता के परिणामों के कारण स्खलित हो वीर्य पात हो जाना।

सूत्रः—स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रेन्द्रिय वचन हस्त-पादमनः कायमुण्डा दशमुण्डाः ॥२०॥

Version 1

अर्थः—दश मुण्ड होते हैं। नाम उनके ये हैं:—
(१) स्पर्शनइन्द्रिय (२) रसनाइन्द्रिय (३) घ्राणइन्द्रिय (४) चक्षुरिन्द्रिय (५) श्रोत्रइन्द्रिय (६) वचनमुण्ड (७) हस्तमुण्ड (८) पादमुण्ड (९) मनोमुण्ड (१०) कायमुण्ड

सूत्रः—अआइईउऊऋॠऌॡकाराः समानसंज्ञक वर्णाः ॥३०॥

अर्थः—समान संज्ञा वाले दस अक्षर हैं। पृथक पृथक वे ये हैं:—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ —

सूत्रः—आचेलक्यानौद्देशिकशय्यागृहराजपिण्डत्याग कृतिकर्मव्रतप्रतिक्रमणज्येष्ठविनयमासविशेषवंदनपर्याः श्रमणकल्पाः ॥३२॥

सूत्रः— औदारिकतैजसौदारिककार्मणौदारिकतैजसकार्मणवैक्रियिकतैजसवैक्रयिककार्मणवैक्रयिकतैजसकार्मणाहारकतैजसाहारककार्मणाहारकतैजसकार्मणतैजसकार्मणानिसंयोगिशरीराणि ॥३३॥

अर्थः—संयोगिशरीर दस होते हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) औदारिकतैजस संयोगिशरीर (२) औदारिककार्मणसंयोगिशरीर (३) औदारिकतैजसकार्मणसंयोगि

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

शरीर (४) वैक्रयिकतैजससंयोगिशरीर (५) वैक्रयिक कार्मणसंयोगिशरीर (५) वैक्रयिककार्मणसंयोगिशरीर (६) वैक्रयिकतैजसकार्मणसंयोगिशरीर (७) आहारकतैजससंयोगि शरीर [८] आहारककार्मणसंयोगि शरीर [९] आहारकतैजसकार्मणसंयोगि शरीर (१०) तैजसकार्मणसंयोगि शरीर ।

सूत्रः—पिण्डानङ्कितस्थानालापभगांग्कसंख्याप्रस्तारपरिवर्तननष्टोद्दिष्टाभेद्भंगप्रक्रियोपयोगिनः ॥३४॥

सूत्रः—चेतनाचेतनमूर्तामूर्तैकानेकप्रदेशविभावशुद्धअशुद्धोपचरितस्वभावा द्रव्यविशेषस्वभावाः ॥३५॥

अर्थः—द्रव्योंके विशेषस्वभाव दशप्रकार के हैं नाम उनके ये हैं:—

(१) चेतनस्वभाव (२) अचेतन स्वभाव (३) मूर्त स्वभाव (४) अमूर्तस्वभाव (५) एकप्रदेशस्वभाव (६) अनेकप्रदेशस्वभाव (७) विभाव स्वभाव (८) शुद्धस्वभाव (९) अशुद्धस्वभाव (१०) उपचरित स्वभाव ।

(१) चेतन स्वभाव—जानने देखने, समझने बूझने की शक्ति या स्वभाव ।

(२) अचेतनस्वभाव—चेतनासेरहित जड़ता विशिष्टस्वभाव ।

(३) मूर्तस्वभाव—- रूपरसगंधस्पर्श गुणविशिष्ट

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

होना।

[४] अमूर्तस्वभाव—रूपरसगंधस्पर्शसे रहित जो स्वभाव सो अमूर्त स्वभाव कहलाता है।

[५] एक प्रदेश स्वभाव—अणु स्वरूप होने का स्वभाव।

[६] अनेक प्रदेश स्वभाव—स्कंध रूप होने का स्वभाव।

[७] विभाव स्वभाव—सदैव पररूपापन्नस्वभाव का होना।

[८] शुद्ध स्वभाव—

[९] अशुद्ध स्वभाव—

[१०] उपचरितस्वभाव—

सूत्र—चूड़ामणि फणिगरुडगजमकरवर्धमानक वज्रहरि कलशाश्वाभवनवासिमुकुटचिन्हानि ॥३६॥

अर्थः—भवनवासी दशप्रकारके देवोंके मुकुटोंमें दश प्रकार के चिन्ह पाये जाते हैं। चिन्हों के नाम ये हैं।

(१) चूड़ामणि (२) फणि (सर्प) (३) गरुड़ (४) गज (५) मकर (६) वर्धमानक (७) वज्र (८) हरि (९) कलश (१०) अश्व।

सूत्र—अश्वत्थसप्तच्छदशाल्मलिजम्बूवेतस कदम्बप्रि

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

गुशिरीषपलाशराजद्रुमा भवनवासिचैत्यवृक्षाः ।३७।

अर्थ—चैत्यवृक्षसे उन वृक्षोंका ग्रहण किया गया है जिनके कि मूलभागमें पद्मासन सम्पन्नजिनबिंब प्रत्येक दिशामें विराजमान हैं। भवनवासियोंके ऐसे दश चैत्य वृक्ष हैं। चैत्यवृक्षों के नाम ये हैं:—
(१) अश्वत्थ चैत्यवृक्ष (२) सप्तच्छद चैत्यवृक्ष (३) शाल्मलि चैत्यवृक्ष (४) जम्बू [जामुन]चैत्यवृक्ष (५) वेतस(बेंत) चैत्य वृक्ष (६) कदंब चैत्यवृक्ष (७) प्रियंगुचैत्यवृक्ष (८) शिरीष चैत्यवृक्ष (९) पलाश [ढाँक] चैत्यवृक्ष [१०] राजद्रुम चैत्य वृक्ष।

इन दश चैत्य वृक्षों के मूलभागमें प्रत्येक दिशा में पर्यंकासन्न सम्पन्न पांच पांच जिन प्रतिमा विराजमान हैं जिनके कि पूजने के लिये स्वर्ग में रहने वाले देवता लोग आते रहते हैं।

सूत्र — किंपुरुषकिन्नरहृदयङ्गमरूपमालिकिंनरकिन्नरानिन्द्रतमनोरमकिन्नरोत्तमरतिप्रिय ज्येष्ठाःकिन्नराः ।३८।

अर्थ—व्यंतरोंमें के आठ भेदोंमेंसे एकभेदका नाम किन्नर है। इस किन्नर जातिकेव्यन्तर देवोंके दश अवान्तर भेद हैं। नाम इनके ये हैं:—
(१) किंपुरुष किन्नर (२) किन्नर नामक किन्नर (३) हृदयङ्गम किन्नर (४) रूपमाली या रूपपाली किन्नर

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) किन्नरकिन्नर नामक किन्नर (७) अनिंदित किन्नर (८) मनोरमकिन्नर (६) रतिज्येष्ठकिन्नर (१०) प्रिय-ज्येष्ठ किन्नर।

सूत्र—पुरुषपुरुषोत्तमसत्पुरुषमहापुरुषपुरुषप्रभातिपुरुष-मरुमरुदेवमरुत्प्रभ यशस्वन्तः किंपुरुषाः।३६।

अर्थ—किंपुरुष नामक व्यन्तरों के दश भेद हैं, नाम उनके इस प्रकार हैं:—

(१) पुरुष किंपुरुष (२) पुरुषोत्तमकिंपुरुष (३) सत्पुरुष किंपुरुष (४) महापुरुष किंपुरुष (५) पुरुषप्रभकिंपुरुष (६) अतिपुरुष किंपुरुष (७) मरु किम्पुरुष (८) मरुदेव किंपुरुष (६) मरुत्प्रभ किंपुरुष (१०) यशस्वन्त किंपुरुष।

सूत्र भुजगभुजगशालि महाकायातिकायस्कंधशालि मनोहराशनिजवमहैश्वर्यगंभीरप्रिय दर्शिनो महो-रगाः।४०।

अर्थः—महोरग नामक व्यन्तरों के भी दशभेद हैं, नाम उनभेदों के ये हैं:—

(१) भुजग महोरग (२) भुजँगशाली महोरग (३) महा-काय महोरग (४) अतिकाय महोरग (५) स्कन्धशाली महोरग (६) मनोहर महोरग (७) अशनिजव महोरग (८) महैश्वर्य महोरग (६) गम्भीर महोरग (१०) प्रिय-दर्शी महोरग।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

सूत्र—हाहाहूहूनारदतुम्बरुककदम्बवासवमहास्वरगीत-रति गीतयशोदैवताःगंधर्वाः ।४१।

व्यन्तरों का एक भेद गन्धर्व है। उस गन्धर्व भेद के दश अ ान्तर भेद हैं। उन भेदों के नाम ये हैं —
(१) हाहा गन्धर्व (२) हूहू गन्धर्व (३) नारद गन्धर्व (४) तुम्बरुक गन्धर्व (५) कदम्ब गन्धर्व (६) वासव गंधर्व (७) महास्वर गन्धर्व (८) गीतरति गन्धर्व (९) गीतयश गन्धर्व (१०) दैवतगन्धर्व।

सूत्र—जंघाश्रेणिफलजलतंतुपुष्पबीजांकुराग्न्याकाशगा-मित्वानि क्रियद्ध्यः ।४२।

अर्थ—दश प्रकार की क्रिया-ऋद्धियां होती हैं। नाम उनके ये हैं:—
[१] जंघाख्य क्रियाऋद्धि [२] श्रेण्याख्य क्रियाऋद्धि (३)फलाख्य क्रियाऋद्धि [४]जलाख्य क्रियाऋद्धि[५] तंत्वाख्य क्रियाऋद्धि [६] पुष्पाख्य क्रिय ऋद्धि [७] बीजाख्य क्रिया ऋद्धि [८] अंकुराख्य क्रियाऋद्धि [९] अग्न्याख्य क्रियाऋद्धि [१०] आकाशगामित्व क्रियाऋद्धि।

सूत्र— अप्रत्याख्यानावरणक्रोधमानलोभवज्रर्षनाराच संहननौदारिकद्विकमनुष्यद्विकमनुष्यायूष्यवि तसम्यक्त्वेबोध-व्युच्छिन्ना प्रकृतयः ।४३।

अर्थ—अविरत सम्यक्त्व नामक चौथे गुणस्थान में

Version 1

आगे लिखी जाने वाली दश प्रकृतियों का आगे के पाचवे छटवें आदि गुणस्थानों में बंध नहीं होता। दश प्रकृतियों के नाम ये हैं:—

(१) अप्रत्याख्याना वरण क्रोध (२) अप्रत्याख्यानावरण मान (३) अप्रत्याख्यानावरण माया (४) अप्रत्याख्यानावरण लोभ (५) वज्रवृष भनाराच संहनन (६) औदारिक काययोग (७) औदारिकमिश्रकाय योग (८) मनुष्य गति (९) मनुष्यगत्यानुपूर्व्यी (१०) मनुष्यायु।

सूत्र — स्थावरसूक्ष्मापर्याप्तिसाधारणशुभदुर्भग-दुस्वरास्थिरानादेयायशःकीर्तयः स्थावरदशकम् ४४।

अर्थ—स्थावर को आदि से दश प्रकृतियों को स्थावर दशक कहते हैं। नाम उन प्रकृतियों के ये हैं:-

[१] स्थावर प्रकृति [२] सूक्ष्म प्रकृति (३) अपर्याप्ति प्रकृति (४) साधारण प्रकृति (५) अशुभ प्रकृति (६) दुर्भग प्रकृति (७) दुःस्वर प्रकृति (८) अस्थिर प्रकृति ९ अनादेय प्रकृति (१०) अयशःकीर्ति प्रकृति।

[१] स्थावर प्रकृतिः—जिसके उदय से एकेन्द्रिय जीवों में जन्म हो।

[२] सूक्ष्म प्रकृतिः—जिस कर्मके उदयसे ऐसा शरीर प्राप्त हो जो किसीसे न तो रुके और न दूसरों को रोके।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(३) अपर्याप्ति प्रकृतिः—जिसके उदयसे अपने योग्य एक भी पर्याप्तकी पूर्णता प्राप्त न हो ।

(४) साधारण प्रकृतिः—जिसके उदयसे एक शरीर के अनेक जीव स्वामी हों । इसका उदय निगोदिया वनस्पतिकायिक जीवोंके होता है ।

(५) अशुभ प्रकृतिः—जिसके उदयसे शरीरके अवयव देखनेमें मनोहर न लगे ।

(६) दुर्भग प्रकृतिः—यद्यपि रूप आदिक गुण पाये जाते हैं फिर भी जिसके उदयसे दूसरेजीवों को अप्रीति उत्पन्न होती है उसे दुर्भग प्रकृति कहते हैं ।

(७) दुःस्वर प्रकृतिः—जिसके उदय से खराब स्वर हो ।

(८) अस्थिर प्रकृतिः—शरीरकी धातु उपधातुएं जिसके उदयसे अपने अपने स्थान पर स्थिर न रहें ।

(९) अनादेय प्रकृतिः—जिस कर्मके उदयसे शरीर में कांति या प्रभा न हो ।

(१०) अयशः कीर्ति प्रकृतिः— इस जीव की संसार में निन्दा जिस कर्म के उदय से हो उसका नाम अयशः कीर्ति प्रकृति है ।

सूत्रः— त्रसबादरपर्याप्तिप्रत्येकसुभगसुस्वरशुभ स्थिरादेययशःकीर्तयस्त्रस दशकम ॥४५॥

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अर्थः—त्रसको आदि लेकर दश प्रकृतियोंके समूहका नाम त्रसदशक है। त्रसदशक सम्बन्धी प्रकृतियों के नाम ये हैं:—

(१) त्रस प्रकृति (२) बादर प्रकृति (३) पर्याप्ति प्रकृति (४) प्रत्येक प्रकृति (५) सुभग प्रकृति (६) सुस्वर प्रकृति (६) शुभप्रकृति (८) स्थिरप्रकृति (६) आदेय प्रकृति (१०) यशःकीर्तिप्रकृति।

(१) त्रस प्रकृतिः—जिस कर्म के उदय द्वीन्द्रियादक जीवों में उत्पत्ति हो।

(२) बादर प्रकृतिः—जिस कर्म के उदय ऐसे शरीर की प्राप्ति हो जो दूसरों से रुके और दूसरों को रोके।

(३) पर्याप्त प्रकृतिः—जिस कर्म के उदय से अपने अपने योग्य पर्याप्त पूर्ण हो उसे पर्याप्ति प्रकृति कहते वह जीव जिसकी शरीर पर्याप्त पूर्ण हो जाती है वह पर्याप्त कहा जाता है।

(४) प्रत्येक प्रकृति—जिसके उदय से एक शरीर का एक ही जीव स्वामी हो।

(५) सुभग प्रकृतिः—जिसके उदय से दूसरे जीवों को अपने से प्रीति उत्पन्न हो।

(६) सुस्वर प्रकृतिः—जिसके उदय से अच्छा लगने वाला उत्तम स्वर (आवाज) हो।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(७) शुभ प्रकृति--जिसके उदयसे शरीरके अवयव सुन्दर हों।

(८) स्थिरप्रकृति--शरीरकी धातु उपधातुएं, जिसके उदय से अपने अपने स्थान पर स्थिर रहें।

(९) आदेयप्रकृतिः प्रभासहित शरीर जिस कर्म प्रकृति के उदय से होता है उस प्रकृति का नाम आदेय प्रकृति है।

(१०) यशःकीर्तिप्रकृतिः—जिसके उदय से संसार में जीव की प्रशंसा या तारीफ हो।

सूत्र— द्वाविंशत्येकविंशतिसप्तदशत्रयोदशनवपञ्चचतुस्त्रिद्विकैकानि मोहनीयबंधस्थानानि ॥४६॥

अर्थ मोहनीय कर्म प्रकृति के बंधस्थान दस हैं उनके नाम ये हैं:—

(१) बाईस प्रकृति वाला मोहनीय कर्म का बंधस्थान
(२) इक्कीस प्रकृति वाला मोहनीय कर्म का बंधस्थान
(३) सत्रह प्रकृति वाला मोहनीय कर्म का बंधस्थान
(४) तेरह प्रकृति वाला मोहनीयकर्मका बंधस्थान
(५) नौं प्रकृति वाला मोहनीयकर्मका बंधस्थान
(६) पांच प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका बंधस्थान
(७) चार प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका बंधस्थान
(८) तीन प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका बंधस्थान

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

(६) दो प्रकृतिवाला मोहनीयकर्मका बंधस्थान

(१०) एक प्रकृतिवाला मोहनीयकर्म का बंधस्थान

(१) बाईस प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थानकी बाईस प्रकृतियां ये हैं:—

(१) मिथ्यात्व प्रकृति (२) अनान्तानुबंधी क्रोध (३) अनन्तानुबंधी मान (४) अनन्तानुबंधी माया (५) अनंतानुबंधी लोभ (६) अप्रत्याख्यानावरणी क्रोध (७) अप्रत्याख्यानावरणी मान (८) अप्रत्याख्यानावरणी माया (९) अप्रत्याख्यानवरणी लोभ (१०) प्रत्याख्यानावरणी क्रोध (११) प्रत्याख्यानावरणी मान (१२) प्रत्याख्यानावरणी माया (१३) प्रत्याख्यानावरणीलोभ (१४) संज्वलन क्रोध (१५) संज्वलन मान (१६) संज्वलन माया (१७) संज्वलन लोभ (१८) भयप्रकृति (१९) जुगुप्साप्रकृति (२०) तीन वेदों में से कोई एक वेद (२१-२२) हास्य-रति (२) अरति शोक, इन दो युगलों में से कोई एक युगल इक्कीस प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की इक्कीस प्रकृतियों के नाम ये हैं:—

(१) अनन्तानुबंधी क्रोध (२) अन्तानुबंधी मान (३) अनन्तानुबंधी माया (४) अनंतानुबंधी लोभ (५) अप्रत्याख्यानावारणी क्रोध (६) अप्रत्याख्यानावरणी मान (७) अप्रत्याख्यानावरणी माया (८) अप्रत्याख्यानावरणी लोभ

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) प्रत्याख्यानावरणीक्रोध (१०) प्रत्याख्यानावरणीमान (११) प्रत्याख्यानावरणी माया (१२) प्रत्याख्यानावरणी लोभ (१३) संज्वलनसंबधी क्रोध (१४) संज्वलन संबंधी मान (१५) संज्वलनसंबन्धी माया (१६) संज्वलन संबंधी लोभ (१७) भयप्रकृति (१८) जुगुप्सा प्रकृति (१६) तीन (३) सत्रह प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की सत्रह प्रकृतियों के नाम अलग अलग ये हैं:—

(१) अप्रत्याख्यानावरणी क्रोध (२) अप्रत्याख्यानावरणी मान (३) अप्रत्याख्याना वरणी माया (४) अप्रत्याख्याना वरणी लोभ (५) प्रत्याख्यानावरणी क्रोध (६) प्रत्याख्यानावरणीमान (७) प्रत्याख्यानावरणी माया (८) प्रत्याख्यानावरणी लोभ (६) संज्वलन क्रोध (१०) संज्वलन मान (११) संज्वलन माया (१२) संज्वलन लोभ (१३) भय प्रकृति (१४) जुगुप्सा प्रकृति (१५) पुंवेद प्रकृति (१६-१७) हास्य-रति, अरति-शोक, इन दो वेदों में से कोई एक वेद (२०-२१) हास्य रति, अरति शोक, इन दो युगलों में कोई एक युगल (४) तेरह प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की तेरह प्रकृतियों के नाम इस प्रकार से हैं:—

(१) प्रत्याख्यानावरणी क्रोध (२) प्रत्याख्यानावरणी मान (३) प्रत्याख्यानावरणी माया (४) प्रत्याख्यानावरणी (४) प्रत्याख्यानावरणी लोभ (५) संज्वलन कषाय

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सम्बन्धी क्रोध (६) संज्वलन कषाय सम्बन्धी मान युगलों में से कोई एक युगल (७) संज्वलन संबंधी माया (८) संज्वलन संबंधी लोभ (९) भय प्रकृति (१०) जुगुप्सा प्रकृति (११) पुंवेद प्रकृति (१२) हास्य-रति, अरति शोक, इन दो युगलों में से कोई एक युगल।

(५) नौ प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की नौ प्रकृतियों के अलग अलग नाम ये हैं:—

(१) संज्वलन संबंधी क्रोध (२) संज्वलन संबंधी मान (३) संज्वलन सम्बन्धी माया (४) संज्वलन सम्बन्धी लोभ (५) भय प्रकृति (६) जुगुप्सा प्रकृति (७) पुंवेद प्रकृति (८) हास्य प्रकृति (९) रति प्रकृति।

पाँच प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की पांच प्रकृतियां ये हैं:—

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान के पहिले भाग में (१) संज्वलन कषाय सम्बन्धी क्रोध (२) संज्वलन कषाय संबन्धी मान (३) संज्वलन कषाय सम्बन्धी माया (४) संज्वलन कषाय सम्बन्धी लोभ (५) पुंवेद प्रकृति बँध को प्राप्त होती हैं:—

चार प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की चार प्रकृतियां ये हैं:—

अनिवृत्ति करणगुणस्थानके दूसरे भाग में (१)

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

संज्वलन कषाय सम्बन्धी क्रोध (२) संज्वलन कषाय सम्बन्धी मान (३) संज्वलन कषाय सम्बन्धी माया (४) संज्वलन कषाय सम्बन्धी लोभ प्रकृति बांधती हैं।

तीन प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की तीन प्रकृतियां ये हैं:—

(१) संज्वलनकषाय सम्बन्धी माया प्रकृति (२) संज्वलन कषाय सम्बन्धी लोभ प्रकृति। अनिवृत्ति करण गुणस्थान के तीसरे भाग में होती हैं।

दो प्रकृतिक मोहनीय बंधस्थान की दो प्रकृतियां ये हैं:—

(१) संज्वलन कषाय सम्बन्धी लोभ एक प्रकृतिक बंधस्थान की प्रकृति:— संज्वलन लोभ प्रकृति

सूत्र—पृथ्व्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायद्वित्रिचतुरिन्द्रिय-संज्ञ्यसंज्ञिपंचेन्द्रिया जीवसमासाः ।४७।

अर्थ—समस्त संसारी जीवोंका समावेश जिनमें किया जा सके ऐसे दस जीवसमास हैं। उन जीव-समासोंके पृथक् पृथक् नाम ये हैं :—

(१) पृथ्वीकाय जीवसमास (२) अप्काय जीवसमास (३) तेजकाय जीवसमास (४) वायुकाय जीवसमास (५) वनस्पतिकाय जीवसमास (६) द्वीन्द्रिय जीवसमास (७) त्रीन्द्रिय जीवसमास (८) चतुरिन्द्रिय जीवसमास (९)

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास (१०) असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास।

सूत्र—एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्ताश्च ।४७।

अर्थ—ऊपर जो दश भेद जीवसमासके गिनाये हैं वे दस भेद नीचे लिखे प्रकार से भी बन सकते हैं। दस भेद ये हैं :—

(१) एकेन्द्रियपर्याप्त जीवसमास (२) एकेन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास (३) द्वीन्द्रियपर्याप्त जीवसमास (४) द्वीन्द्रियअपर्याप्त जीवसमास (५) त्रीन्द्रियपर्याप्त जीवसमास (६) त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास (७) चतु-रिन्द्रियपर्याप्त जीवसमास (८) चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास (९) पञ्चेन्द्रियपर्याप्त जीवसमास (१०) पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास।

सूत्र—मिथ्यात्वमनंतानुबंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्याना वरणसंज्वलन सम्बन्धिषुक्रोधमानामायालोभेष्वेकचतुष्कम् हास्यरत्यरतिशोकयोरेकयुग्मम् भयजुगुप्सेत्रिवेदेष्वेको मोहनीय दशकोदयस्थानप्रकृतयः ।४८।

अर्थ—मोहनीय कर्मके दशप्रकृति वाले उदय स्थान की दश प्रकृतियों के नाम इस प्रकार हैं :—

(१) मिथ्यात्व प्रकृति (२–३–४–५) अनंतानुबंधी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

कषाय संबंधी क्रोध मान माया लोभ में से, अप्रत्याख्यानावरण कषाय सम्बन्धी क्रोध माना माया लोभ में से, प्रत्याख्यानावरण कषाय सम्बन्धी क्रोध मान माया लोभ में से, संज्वलन कषाय सम्बन्धी क्रोध मान माया लोभ में से एक एक करके कोई सदृश चार प्रकृति (६-७) हास्य रति, अरति शोक इन दो युगलों में से कोई एक युगल प्रकृति (८) भय (९) जुगुप्सा प्रकृति (१०) तीन वेदों में से कोई एक वेद।

सूत्र—मनुष्यगतिपञ्चेन्द्रियजातिसुभगत्रसबादरपर्याप्त मनुष्यगत्यानुपूर्व्यादेययशः कीर्तितीर्थंकरत्वानि नाम कर्मा-दशकसत्वस्थानप्रकृतयः ।५०।

अर्थ—नामकर्मके दशप्रकृति वाले उदयस्थान की दश प्रकृतियां होती हैं। नाम उन प्रकृतियों के ये हैं :—

(१) मनुष्यगति-नामकर्म प्रकृति (२) पञ्चेन्द्रिय नाम कर्म प्रकृति (३) सुभग नामकर्म प्रकृति (४) त्रस नाक कर्म प्रकृति (५) बादर नामकर्म प्रकृति (६) पर्याप्ति नाम कर्म प्रकृति (७) मनुष्यगत्यानुपूर्व्य नामकर्म प्रकृति (८) आदेय नाम कर्म प्रकृति (९) यशःकीर्ति नाम कर्म प्रकृति (१०) तीर्थंकरत्व नाक कर्म प्रकृति

सूत्रः—अस्तित्ववस्तुत्वद्रव्यत्व प्रमेयत्वागुरुलघुत्व प्रदेशत्व चेतनत्वाचेतनत्वमूर्तत्वामूर्तत्वानि द्रव्यस्यसामान्य

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

गुणाः ।५१।

अर्थ—द्रव्यके सामान्य गुण दश हैं। उन गुणोंके अलग अलग नाम ये हैं :—

[१] अस्तित्व सामान्यगुण [२] वस्तुत्व सामान्य गुण [३] द्रव्यत्व सामान्यगुण [४] प्रमेयत्व सामान्यगुण [५] अगुरुलघुत्व सामान्यगुण [६] प्रदेशत्व सामान्यगुण [७] चेतनत्व सामान्यगुण [८] अचेतनत्व सामान्यगुण [९] मूर्तत्व सामान्यगुण [१०] अमूर्तत्व सामान्यगुण द्रव्य के दश सामान्यगुणों का स्वरूप यह है :—

सूत्र— उपाधिनिरपेक्षशुद्धोत्पादव्ययगौणशुद्धसत्ता-ग्राहकभेदकल्पनानिरपेक्षशुद्धोपाधि सापेक्षाशुद्धोत्पादव्यय सापेक्षाशुद्धभेदकल्पनासापेक्षाशुद्धान्वयस्वद्रव्यादि ग्राहक परद्रव्यादिग्राहकपरमभावग्राहक द्रव्यार्थिका द्रव्यार्थिक-नयाः ।५२।

अर्थ—द्रव्यको ही मनुष्य रूपसे विषय करने वाला द्रव्यार्थिकनय दश प्रकारका है। उन भेदोंके पृथक् पृथक् नाम ये हैं :—

(१) उपाधिनिरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिकनय (२) उत्पा-दव्ययगौण शुद्धसत्ताग्राहक द्रव्यार्थिकनय (३) भेदकल्पना-निरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिकनय (४) उपाधिसापेक्षा शुद्ध द्रव्यार्थिकनय (५) उत्पादव्ययसापेक्षाशुद्ध द्रव्यार्थिकनय

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(६) कल्पनासापेक्षाशुद्ध द्रव्यार्थिकनय (७) अन्वय द्रव्यार्थिकनय (८) स्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय (९) परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनय (१०) परमभावग्राहक-द्रव्यार्थिकनय।

(१) उपाधिनिरपेक्ष शुद्धद्रव्यार्थिकनय—किसी उपाधि को लक्ष्य में न देते हुए शुद्धद्रव्यको विषय करनेवाला नय इस कोटिमें गर्भित होता है।

(२) उत्पादव्ययगौण शुद्ध सत्ताग्राहक द्रव्यार्थिकनय—उत्पादव्ययको गौण कर शुद्धसत्ता को ग्रहण करनेवाला नय यह है।

(३) भेदकल्पनानिरपेक्ष शुद्ध द्रव्यार्थिकनय—गुणी में गुणकृत भेद की कल्पना न करते हुए शुद्ध द्रव्यको विषय करनेवाला यह नय है।

(४) उपाधिसापेक्षाशुद्ध द्रव्यार्थिकनय—उपाधि की अपेक्षा रखने से अशुद्ध द्रव्य को विषय करनेवाला नय।

(५) ये उत्पादव्ययसापेक्षा शुद्ध द्रव्यार्थिकनय—उत्पादव्यय की अपेक्षा रखने के कारण अशुद्ध द्रव्यको विषय करनेवाला नय।

(६) कल्पनासापेक्षाशुद्ध द्रव्यार्थिकनय—गुणी में गुणकृत भेद की कल्पना करने से अशुद्ध द्रव्यको विषय करने वाला नय कल्पना सापेक्षाशुद्ध द्रव्यार्थिक नय

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

[७] अन्वयद्रव्यार्थिक नयः— पर्यायोंमें गुणोंका गुणों में द्रव्य का संम्बन्ध अन्वय बतलाने वाला नय।

[८] स्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिकनय —अपने द्रव्य क्षेत्र का भाव की अपेक्षासे पदार्थ का भावात्मक बतलाने वाला नय।

[९] परद्रव्यादि ग्राहक द्रव्यार्थिकनयः—परद्रव्य क्षेत्रकाय भावकी अपेक्षासे पदार्थको अभावात्मक बतलाने वाला नय।

[१०] परमभाव ग्राहक द्रव्यार्थिकः—शुद्ध, अशुद्ध और उपचार से रहित स्वभावमात्र को विषय करने वाला नय।

सूत्र— आर्द्रचर्मास्थिपलचतुरंगुलरुधिरधारामदिरा-मलजीवहिंसाराधदीर्घमृतकपंचेन्द्रियमूत्राणि व्रतश्रावका-णां दर्शनान्तरायाः ।५३।

अर्थ—देश संयमको पालन करनेवाले व्रती श्रावकों को निम्नलिखित वस्तुओं का दर्शन अन्तराय का कारण होता है। अर्थात् व्रती श्रावकों को आर्द्रचर्मादि वस्तुओं के देखने से भोजन में अन्तराय हो जाता है। वस्तुओंके नाम ये हैं:—

(१) आर्द्रचर्म (२) अस्थि (३) मांस (४) चार अंगुल लंबी खून की धार (५) शराब (६) टट्टी आदि

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

गन्दी वस्तु (७) जीव की हिंसा (८) पीप (९) मरा हुआ कोई पंचेन्द्रिय जीव (१०) किसी पंचेन्द्रिय जीवका पेशाब।

सूत्र— आज्ञाकोपकठोरवचनकलहपरितापननिर्भयता स्नेहपरितोषनकारुण्यध्यानविघ्नासमाधयः सन्यासा व सराचार्थिवसंघनिवासदोषाः ।५४।

सूत्र— अघर्षसमाच्छिद्रातिशुचिनिर्विलनिर्जंत्वस्निग्ध दृढगुप्तोद्योतरूपताःक्षपकभूमिशय्यायोग्यताः ।५५।

अर्थ—क्षपक का अर्थ मुनि से है। उसकी भूमि-शय्या की दस योग्यतायें हैं। वही भूमि-शय्या मुनि के उपयोग योग्य है जिसमें आगे लिखी जाने वाली दस बातें पाई जाती हैं। दस बातें ये हैं:—

(१) अघर्षरूपता (२) समरूपता (३) अच्छिद्ररूपता (४) अतिशुचिरूपता (५) निर्विलरूपता (६) निर्जंतुरूपता (७) अस्निग्धरूपता (८) दृढरूपता (९) गुप्तरूपता (१०) उद्योतरूपता।

(१) अघर्षरूपताः—शयन योग्य भूमिको घर्षण रहित होना चाहिये।

(२) समरूपता—शय्या योग्यभूमिको सम (एक सी तह Level वाली) होना चाहिये।

(३) अछिद्ररूपताः—भूमि, जोकि शय्यारूप उपयोग

Version 1

में आनेवाली है, को छिद्ररहित होना चाहिये।

(३) अछिद्ररूपता:—जोकि शय्यारूप उपयोगमें आने वाली है, को छिद्र रहित होना चाहिये।

(४) अतिशुचिरूपता:— शय्या के लिये उपयोगी भूमि को उपरिलिखित बातों के साथ ही पवित्र होना चाहिये।

(५) निर्बलत्व—वह भूमि जोकि शय्या के लिए काम में ली जाने वाली है, उसे बिल रहित होना चाहिये।

निर्जंतुरूपता—शय्योपयोगी भूमिको जीव-जन्तु रहित होना भी आवश्यक है।

अस्निग्धता—भूमिको अच्छी चिकनी सपाट नहीं होना चाहिये, मुनिकी परिषहजय वृत्ति में अन्तर आने की संभावना रहती है।

दृढ़रूपता—ज़मीन जो शयनके लिए निर्धारित है उसे पोची न होते हुए ठोस और मज़बूत होना चाहिये।

गुप्तरूपता—शय्या के लिए नियत भूमि को गुप्त रहना चाहिये। साधारणजन का आना जाना समुचित नहीं।

उद्योतरूपता:—वह भूमि ऐसी होना चाहिये जहां प्रकाश सहज में ही पहुँच सके।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

सूत्र— कर्कशकटुकपरुषनिष्ठुरपरकोपिनिमध्यकृषा-ऽभिमानिनिन्द्यनयंकरीछेदंकरीभूतवधकरीवाचोमहानिन्द्य-भाषणा ।

अर्थ—इस प्रकार के महान् निंद्य भाषण या वाणी हैं। दस के क्रमशः नाम ये हैं:—

(१) कर्कशावाणी (२) कटुकवाणी (३) परुषवाणी (४) निष्ठुरवाणी (५) परकोपिनी वाणी (६) मध्यकृषा (७) अभिमानीवाणी (८) निंद्यनयंकरीवाणी (९) निंद्य-छेदकरी वाणी (१०) भूतवधकरी वाणी।

कर्कशा वाणीः—जैसे पत्थरों की किरकिराहट होती है वैसी ही बुरी लगने वाली तथा संताप पैदा करने वाली वचनावली का प्रयोग करना। जैसे तुम मूर्ख हो, बैल हो, तुम कुछ भी नहीं जानते आदि वाक्य कर्कशा वाणीको व्यक्त करते हैं।

(२) कटुकावाणीः—ऐसी वाणी जो उद्वेग पैदा कर देवे सो कटुका वाणी कहलाती है।

(३) परुषावाणीः—ऐसे वचनों का प्रयोग करना जो मर्मको भेद देवे परुषावाणी कहलाती है। 'जैसे अरे तू अनेक दोषों से दुष्ट है।

(४) निष्ठुरवाणी—'तुझको मार डालूंगा' तेरा तो शिर ही काटकर फेंक दूंगा' आदि वाक्य निष्ठुर वाणी

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

के हैं।

(५) परकोपिनी वाणी—"तप, तप बड़ा तप लिये फिरते हो, क्या है तुम्हारा तप 'निर्लज्ज कहीं के' आदि परकोपिनी वाणी के वाक्य हैं।

(६) मध्यकृशावाणी—ऐसी निष्ठुर वाणी (वचन) बोलना मध्यको भी कृश कर देवे।

(७) अभिमानी वाणी 'अपने महत्वको बतलाने वाले तथा दूसरों की निन्दाकारक वचनों को बोलना।

(८) निन्द्यनर्यंकरवाणी—सप्त शीलों का खंडन करनेवाले वचनों को बोलना, आपस में विद्वेष को पैदा करने वाले वचनों को बोलना।

(९) निन्द्यछेदकरी वाणी—वीर्यशील आदि गुणों का समूल विनाश करनेवाली, अथवा जो दोष नहीं है उनको दोषरूप से कहने वाली।

(१०) भूतवधकरी वाणी—प्राणियों के प्राणों का भी जिससे वियोग हो जाय ऐसे वचन बोलना भूतवधकरी वाणी है।

सूत्र—शोकदर्शनेच्छानिश्वास ज्वराशदाहभोजनारूचि मूर्च्छोन्मिनाज्ञानमरणानि कामवेगाः ।५७।

अर्थ—कामी पुरुषकी कामजन्य दशायें कामवेग कहलाते हैं। इनकी संख्या दस है। नाम अलग अलग

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

इस प्रकार हैं:—

(१) शोक कामवेग (२) दर्शनेच्छा कामवेग (३) निश्वास कामवेग (४) ज्वरांश कामवेग (५) दाह कामवेग (६) भोजनारुचि कामवेग (७) उन्मत्तता कामवेग (८) मूर्च्छा कामवेग (९) अज्ञान कामवेग (१०) मरण कामवेग।

(१) शोक कामवेगः—कामातुर व्यक्ति चाही हुई कान्ता की प्राप्ति न होनेसे शोक या रंज करता है। इसी दशाको कामवेग कहते हैं।

(२) दर्शनेच्छा कामवेगः—जिस स्त्रीको चाहा है उसे देखनेकेलिये तड़फड़ाना, उसके दर्शनों के लिये तरसना यह दर्शनेच्छा कामवेग है।

(३) निश्वास कामवेगः—स्त्री को जिसे काम के वशीभूत हो चाहा है, प्राप्त न करने के कारण, उसके सम्मिलनके अभावमें लम्बी २ दुःखसे भरी हुई आह भरना, श्वासें लेना। यह तीसरा निश्वास कामवेग है।

(४) ज्वर कामवेगः—कामीपुरुष विरह वेदनाको सहन न करने के कारण, ज्वराक्रान्त हो जाता है। यही ज्वर कामवेग है।

(५) दाह कामवेगः—ज्वरके साथ ही साथ कामी पुरुषका शरीर दाह (जलन) के मारे बेचैन हो जाता है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

वह परिताप से संतप्त हो करवटें बदलता रहता है। इसी का नाम दाह कामवेग है।

(६) भोजनारुचि कामवेगः—इस (उपरिलिखित अवस्था के बाद कामी पुरुष, शरीर जिस पर टिका हुआ है ऐसे अन्नादिको ग्रहणकरना छोड़देता है। उसे भोजन से अरुचि हो जाती है। यही भोजनारुचि कामवेग है।

(७) मूर्च्छा कामवेगः—कामीपुरुष अशक्त हो जाता है व कभी कभी नष्टचेतनासा होता हुआ बेहोश हो जाता है। यही मूर्च्छा कामवेग है।

(८) उन्मत्तता कामवेगः-बेहोशी दूर होनेपर कामी पुरुष मनका सन्तुलन खोकर अंट संट बकने लगता है। वह पागलसा हो जाता है।

(९) अज्ञान कामवेगः—बढ़ते २ कामीपुरुषकी ऐसी दशा हो जाती है कि वह ज्ञानशक्तिको खो सा बैठता है। मोह या वैचित्य अज्ञान दशा को ही बतलाने वाले शब्द हैं।

(१०) मरण कालवेगः—कामीपुरुष उपरिलिखित नौ अवस्थाओंमेंसे गुजरता हुआ अन्त में इतना ज्यादा कमजोर विह्वल एवं ज्ञानशक्ति रहित हो जाता है कि उसका जीवन स्वयं उसे भार रूप प्रतीत होने लगता है

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

और उसका अंत या मरण हो जाता हैं। संसारी प्राणियों! कामीपुरुषोंका ऐसा अंत देख अपने आपको आत्मानुभवन में लगाओ।

सूत्र—दृढ़मित्रतात्मकार्यसम्पादनपटुत्वकार्याकार्यविवेक-सेव्यासेव्यविवेकसमदर्शितादानप्रीति दयामनोवाक्काय सरलताः शुक्ललेश्यालक्षणानि।५८।

अर्थ—दृढ़मित्रता आदि दश लक्षण शुक्ललेश्या के ये हैं। दश चिन्हों के नाम और उनके स्वरूप ये हैं:—

(१) दृढ़मित्रता लक्षण (२) आत्मकार्यसम्पादन लक्षण (३) पटुत्व लक्षण (४) कार्याकार्यविवेक लक्षण (५) सेव्यासेव्यविवेक लक्षण (६) समदर्शिता लक्षण (७) दान लक्षण (८) प्रीति लक्षण (९) दया लक्षण (१०) मनोवाक्काय सरलता लक्षण

(१) दृढ़मित्रता लक्षणः—बिना किसी स्वार्थ विशेष के सच्चे अर्थों में गहरी मित्रता मित्रों में होना।

(२) आत्मकार्यसम्पादन लक्षणः—साँसारिक धन्धों में लगे रहते हुए भी स्वात्मावलोकन रूप स्वार्थ की ओर दृष्टि रखते हुए उसे भी सम्पादित करते रहना।

(३) पटुत्व लक्षणः—संसारकी दृष्टिमें ढब्बू न कहलाना अपने आपको लोकयात्राका यात्री सिद्ध करना।

Version 1

(४) कार्याकार्यविवेक लक्षणः–जो करने योग्य कर्म हों उन्हें कार्य कहते हैं। शुक्ल लेश्या वाले व्यक्तियों में ऐसी विवेक बुद्धि पाई जाती है जिससे वह सहज ही में ज्ञात कर लेता है कि कौनसे काम करने योग्य और कौनसे नहीं करने योग्य हैं।

(५) सेव्यासेव्य विवेक लक्षणः–उसकी विवेक बुद्धि इतनी पैनी होती है कि वह सहज मेंही निर्णय कर लेता है कि कौनसे पदार्थ मेरे सेवन करने योग्य हैं और कौनसे असेवनीय हैं। साथ ही इसके वह व्यक्तियों में से भी जान लेता है कि कौन सेव्य (सेवा करने योग्य) हैं और कौन असेव्य हैं।

(६) समदर्शिता लक्षणः—वह वस्तु विशेष से न राग ही करता है और न द्वेष ही। सबको समानदृष्टिसे देखने वाला शुक्ललेश्या वाला होता है।

(७) दान लक्षणः–जिसके शुक्ल लेश्या रूप परिणाम पाये जाते हैं वह त्याग वृत्ति परायण होता है। उत्तम मध्यमादि पात्रोंको चारप्रकारका दान दे हर्ष का अनुभव करता है।

(८) प्रीति लक्षणः—गुणीपुरुषोंको देख प्रमोद एवं प्रीतिभाव से सम्पन्न शुक्ल लेश्या वाला जीव हो जाता है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(९) दया लक्षणः—रोग, वेदना आदि से व्यथित व्यक्तियों को देख दया भाव परिपूर्ण हो उठना।

(१०) मनोवाक्काय सरलता लक्षणः—शुक्ल लेश्या से युक्त जीवके मन वचन काम की सरलता पाई जाती है। इसी बात को, दूसरे शब्दोंमें यों कह सकते हैं, कि वह व्यक्ति जो मन मचन काय की सरलता वाला होता है वह प्राय शुक्ल लेश्या वाला होता है।

सूत्र—तीव्रक्रोधवैरामोचनभंडवचननिर्धर्मनिर्दयावश-विपरीत भावोपदेशग्रहणक्लेशनमारणजातयः कृष्णलेश्या-चिन्हानि।५६।

अर्थः—कृष्ण लेश्या सम्पन्न व्यक्ति के पहिचानने के लिये दस बातें होती हैं। अर्थात् आगे जिनके नाम लिखे जा रहे हैं, उन बातों से सहज में ही अनुमान कर लिया जाता है कि इस व्यक्ति के कैसे परिणाम हैं। वह कौनसी लेश्या सम्पन्न है ? इस सूत्र में कृष्ण लेश्या को बतलाने वाली बातों का उल्लेख किया गया हैं। दस चिन्ह या बातें ये हैं:—

[१] तीव्रक्रोध चिन्ह [२] वैर-अमोचन चिन्ह [३] भंडवचन चिन्ह [४] निर्धर्म चिन्ह [५] निर्दया चिन्ह [६] अवश चिन्ह [७] विपरीत भाव चिन्ह

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

[८] उपदेश-अग्रहण चिन्ह [९] क्लेशन चिन्ह [१०] मारण जाति चिन्ह।

[१] तीव्रक्रोध चिन्हः—जो बहुत ज्यादा तेज गुस्से से युक्त रहता हो समझना चाहिये कि वह कृष्ण लेश्या से युक्त हो।

[२] वैरामोचन चिन्हः— कृष्णलेश्यासे युक्त व्यक्ति जिस किसी व्यक्ति से वैर बांध लेता है उसे छोड़ता नहीं है।

[३] भंडवचन चिन्हः—गाली गलौंच से भरे युद्धोन्मुख वचन बोलने को स्वभाव वाला होना कृष्ण लेश्या की सम्पन्नता का द्योतन कराता है।

[४] निर्धर्म चिन्हः—कृष्ण लेश्या वाले के धार्मिक भाव और आचरण नहीं होते।

[५] निर्दया चिन्हः—दया रहित होते हुए क्रूर परिणाम वाला होना कृष्णलेश्याकी उपस्थिति को बतलाता है।

[६] अवश चिन्हः—किसीकी भी बात न मानने उच्छृङ्खल होना कृष्ण लेश्या सम्पन्नता को बतलाता है।

[७] विपरीतभाव चिन्हः—सत्यपरामर्श को भी उल्टे रूप में ग्रहण करने वाला कृष्ण लेश्या वाला होता है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

[८] उपदेश-अग्रहण-चिन्हः—कृष्णलेश्या वाला व्यक्ति धार्मिक उपदेशों को ग्रहण नहीं करता।

[९] क्लेशन चिन्हः—स्वयं संक्लेश मय परिणाम वाला होता हुआ पर संक्लेशोत्पादन में आनन्द मानना।

[१०] मरणजाति चिन्हः—ऐसे कुकृत्यों को, जिनसे स्वयं का या परका मरण या प्राणवियोग होजाय, करते हुए बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाता है कृष्ण लेश्या सम्पन्न जीव।

सूत्र—कौतुकभूतिकर्मप्रसेनिकाऽप्रसेनिकानिमित्ताजीवकुहनसम्मूर्च्छानाप्रपातनसेवनाकुशीलाः कुशीलमुनयः।६०।

अर्थ—मुनियों के पांच भेदों में से एक भेद का नाम कुशीलमुनि है। इनके अवान्तर भेद दश हैं जिनके कि नाम ये हैं:—

(१) कौतुकसेवन कुशीलमुनि (२) भूतिसेवन कुशीलमुनि (३) कर्मसेवन कुशीलमुनि (४) प्रसेनिकसेवन कुशीलमुनि (५) अप्रसेनिक कुशीलमुनि (६) निमित्तसेवन कुशीलमुनि (७) अजीवसेवन कुशीलमुनि (८) कुहनसेवन कुशीलमुनि (९) सम्मूर्च्छनासेवन कुशीलमुनि (१०) प्रपातनसेवन कुशीलमुनि।

सूत्र—मनोज्ञामनोज्ञस्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रविषयरागद्वेषवशार्तमरणान्यार्तरौद्रध्यानसहितवशार्तमरणानि।६१।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

अर्थः—आर्त और रौद्र ध्यान से युक्त होते हुए उनके वश से होने वाले मरण दस प्रकार के होते हैं। नाम उनके पृथक पृथक ये हैं:—

(१) मनोज्ञस्पर्शन विषय वशार्तमरण (२) अमनोज्ञ-स्पर्शन विषय वशार्तमरण (३) मनोज्ञरसन विषय वशार्त-मरण (४) अमनोज्ञरसन विषय वशार्तमरण (५) मनोज्ञ घ्राण विषय वशार्तमरण (६) अमनोज्ञ घ्राण विषय वशार्त-मरण (७) मनोज्ञचक्षु विषय वशार्तमरण (८) अमनोज्ञ चक्षु विषय वशार्तमरण (९) मनोज्ञश्रोत्र विषय वशार्त-मरण (१०) अमनोज्ञश्रोत्र विषय वशार्तमरण।

(१) मनोज्ञस्पर्श विषय वशार्तमरणः—मन को अच्छे लगने वाले स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत पदार्थों के विछोह से होने वाला दुःखी परिणामों से युक्त मरण इस कोटि में गर्भित होता है।

(२) अमनोज्ञ स्पर्शन विषय वशार्तमरणः—मनको असुन्दर प्रतीत होनेवाले स्पर्शनइन्द्रिय के विषयभूत पदार्थों के संयोगसे होनेवाले दुःखी परिणामों से युक्त मरण का होना।

ये एक इन्द्रिय (स्पर्शन) सम्बन्धी दो मरण हैं। इसी प्रकार के चार इन्द्रिय सम्बन्धी आठ मरण और समझ लेना चाहिये।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

सूत्र :—अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधुप्रतिमा·शास्त्रधर्म-प्रवचनसम्यग्दर्शनानि सम्यक्त्वविनयस्थानानि ।६२।

अर्थ—सम्यक्त्वसम्पन्न संसारी सत्वोंके विनय योग्य स्थान दस हैं। दस के अलग अलग नाम ये हैं:-

(१) अर्हत् विनयस्थान (२) सिद्ध विनयस्थान (३) आचार्य विनयस्थान (४) उपाध्याय विनयस्थान (५) साधु विनयस्थान (६) जिनप्रतिज्ञा विनयस्थान (७) जिन शास्त्र विनयस्थान (८) जिन प्रवचन विनय-स्थान (९) जिनधर्म विनयस्थान (१०) सम्यग्दर्शन विनय-स्थान।

(१) अर्हत्विनयस्थान—अर्हत्से उन वीतरागी, घातियाकर्मके क्षय करनेवाले, केवलज्ञानी जिनेन्द्र देव से प्रयोजन है जो हितोपदेष्टा हों। उनके प्रति सम्यग्दृष्टि को विनय प्रदर्शित करना चाहिये। वे आदर, श्रद्धा एवं पूजाके पात्र हैं।

(२) सिद्धविनयस्थान— सिद्धपदसे उन अष्ट कर्मजाल से मुक्त, अष्टगुणोंसे युक्त निरंजन, निराकार, अकल (शरीर) रहित परमात्मा का ग्रहण होना। वे भी सम्यग्दृष्टि के द्वारा वंदनीय, पूजनीय एवं श्रद्धेय हैं।

(३) आचार्य विनयस्थान —आचार्य शब्दके द्वारा उन संघसम्मानित, संघशासक, एवं संघनियंत्रिता

Version 1

निर्ग्रंथ साधु को ग्रहण होता है जो संघ के समग्र साधु-समाज श्रावकसमाजको शिक्षा दीक्षा देनेमें समर्थ हों। ये भी वंदनीय हैं।

[४] उपाध्याय विनयस्थान—सतत स्वाध्याय में निमग्न संघ स्थित साधु आदि जनों को अध्यापन कराने में तत्पर परम दिगम्बर साधु उपाध्याय कहलाते हैं। वे भी सम्यग्दृष्टि के पूज्य एवं बंदनीय हैं।

[५] साधु शब्द ऐसे संसारसे उदासीनपुरुषोंका बोध कराता है जो समस्तविषयभोगों की लालसा से विमुख होते हुए आत्मस्वरूप की प्राप्ति में संलग्न रहते हैं। परिग्रहोंको छोड़ वे परमदिगम्बरवेष को धारण करते हैं। ऐसे साधुओंको सम्यग्दृष्टि विनय एवं आदरका पात्र मानता है।

[६] प्रतिमा विनयस्थान—इसके द्वारा केवल ज्ञान दशा सम्पन्न जिनेद्राकृतियों को द्योतन कराने वाली धातु पाषाण रत्न आदि से निर्मित प्रतिष्ठित मूर्तियों का ग्रहण होता है। इनको सम्यग्दृष्टि अर्चना करता है।

[७] शास्त्रविनयस्थान— वीतराग सर्वज्ञ द्वारा प्रणीत, पूर्वापर विरोध रहित, सर्व सत्त्व सुखकारक आगम ही शास्त्र हैं। उनकी विनय सम्यग्दृष्टि को सतत करते रहना चाहिये।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

[८] जिनधर्म विनयस्थान–जो रागद्वेष आदि दोषों को जीतते हैं वे जिन कहलाते हैं। उनके द्वारा कहा हुआ प्राणियोंको सुख पहुंचाने वाला मार्ग या धर्म जिन धर्म है। सम्यग्दृष्टि इसके प्रति विनय भाव रखता हुआ इसके प्रति पूर्णश्रद्धालु रहता है।

[९] प्रवचन विनयस्थान—जिनप्रणीत आगमों की मार्गानुयायी आचार्यों द्वारा की गई व्याख्यायें प्रवचन के अंतर्गत आती हैं। इनके प्रति सम्यग्दृष्टि विनयालु रहता है।

[१०] सम्यग्दर्शन विनय स्थान—जीवादिक सात समीचीन प्रयोजनभूत तत्वोंका अथवा सच्चे देव, सच्चे शास्त्र, सच्चे गुरु का ठीक २ श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन कहलाता है। इसके प्रति विनय रखना सम्यक्त्व संवर्धक है।

सूत्र—नमिमातंगसोमिलरामपुत्रसुदर्शनयमवाल्मीकि-वलीक निष्कंवलपालांवष्टपुत्राःवर्द्धमानतीर्थेऽन्तःकृतः ।६३।

अर्थ—भगवान् महावीरके तीर्थकालमें दस अन्तः कृत केवली हुए हैं। नाम उन दस केवलियों के ये हैं:—

(१) नमि (२) मातंग (३) सोमिल (४) रामपुत्र (५) सुदर्शन (६) यम (७) वाल्मीकि (८) वलीक (९) निष्कंबल (१०) पालांवष्टपुत्र।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सूत्र— ऋषिदासधन्यसुनक्षत्रकार्तिकनंदनंदनशांतिभद्राभयवारिषेणचिलातिपुत्रा औपपादिकाः ।६४।

अर्थ—भगवान् वीरके तीर्थकालमें दस औपपादिक (अनुत्तर उपपाद में जन्म लेने वाले) भी हुए हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) ऋषिदास कुमार (२) धन्यकुमार (३) सुनक्षत्र कुमार (४) कार्तिक कुमार (५) नंदकुमार (६) नंदन कुमार (७) शांतिभद्र कुमार (८) अभय कुमार (९) वारिषेण (१०) चिलाति कुमार।

सूत्र— शब्दबंधसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योताःपुद्गलपर्यायाः ।६५।

अर्थ—पुद्गलसे प्रयोजन उन द्रव्यों या पदार्थों से है जो रूप रस गंध स्पर्शादिगुणोंसे युक्त हो। ऐसे पदार्थों की परिवर्तनशील दशायें या अवस्थायें पर्यायें कहलाती हैं। शब्दादि सूत्रोल्लिखित जो दस बातें हैं वे सब पुद्गल की पर्यायें हैं। नाम उनके ये हैं:—

(१) शब्द पुद्गलपर्याय (२) बंध पुद्गलपर्याय (३) सौक्ष्म्य पुद्गलपर्याय (४) स्थौल्य पुद्गलपर्याय (५) संस्थान पुद्गलपर्याय (६) भेद पुद्गलपर्याय (७) तमः पुद्गलपर्याय (८) छाया पुद्गलपर्याय (९) आतप पुद्गलपर्याय (१०) उद्योत पुद्गलपर्याय।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(१) शब्द पुद्गलपर्याय—शब्दका अर्थ जो अर्थको पुकारे, उसका विश्वास दिलावे। यह कई तरहका भेद प्रभेदयुक्त होता है।

(२) बंध पुद्गलपर्याय—एक द्रव्यके प्रदेशोंका दूसरे द्रव्योंके प्रदेशोंके साथ बिलकुल घुलमिल जाना बंध है। यहभी पुद्गलकी पर्याय है।

(३) सौक्ष्म्य पुद्गलपर्याय— सूक्ष्मपनेके भाव अथवा कर्मको सौक्ष्म्य कहते हैं। इससे युक्त पुद्गल होता है।

(४) स्थौल्य पुद्गलपर्याय—स्थूलके भाव अथवा कर्मको स्थौल्य कहते हैं। पुद्गल इससे भी युक्त होता है।

(५) संस्थान पुद्गलपर्याय— गोल त्रिकोण चतुष्कोण आदि रूप आकृतियां संस्थान शब्दद्वारा ग्रहण की जाती हैं।

(६) भेद पुद्गलपर्याय—सम्बंध विच्छेद करनेको भेद कहते हैं जैसे आरेसे लकड़ीको काटना, भेद करना आदि।

(७) तम पुद्गलपर्याय—दृष्टि रोशनी या नजरके लिये जो प्रतिबंधक वस्तु होती है उसे तम कहते हैं।

(८) छाया पुद्गलपर्याय-शरीर आदिके द्वारा जो

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

प्रकाशका आवरण, वह जिसके होनेमें निमित्त होता है उसे छाया कहते हैं।

(९) आतप पुद्गलपर्याय—सूर्यके निमित्तसे होने वाला उष्ण, प्रकाश, रूप आतय हुआ करता है।

(१०) उद्योत पुद्गलपर्याय–चंद्रमा, मणि, जुगनू आदिके निमित्तसे होनेवाला प्रकाश उद्योतमें गर्भित होता है।

सूत्र–प्रकृष्टक्रोधपरिणामातिमानितेर्ष्याव्यापारालीकाभिधायितातिसंधानपरत्वप्रवृद्धरागपरांगनागमनादरवामलोचनाभावाभिष्वंगताजातीयाःस्त्रीवेदनोकषास्याश्रवहेतवः।६६

अर्थ–जो अपने आपको असंयम अज्ञानादि दोषोंसे आच्छादित करे, दूसरे पुरुषोंको भी अब्रह्म अज्ञानादि दोषोंसे आच्छादित करे उसे स्त्री कहते हैं। तत्संबंधी जो स्त्रीवेदनामक नोकषाय है उसके आश्रवके कारणोंकी संख्या दस हैं:–

(१) प्रकृष्ट क्रोध परिणाम (२) अतिमानिता (३) ईर्ष्या व्यापार (४) अलीकाभिधायिता (५) अतिसंधानपरता (६) प्रवद्धराग (७) परांगनागमन (८) परांगनादर (९) वामलोचनता (१०) अभावाभिष्वंगता।

(१) प्रकृष्टक्रोध परिणाम–तुनक मिजाज या जरा जरासी बातपर जोरके गुस्सेके स्वभाव वाले होनेसे स्त्रीवेद

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

का आश्रय होता है।

(२) अतिमानता—बहुत ज्यादा अभिमान करनेके स्वभाव वाला होनाभी स्त्रीवेदके आश्रवका कारण है।

(३) ईर्ष्याव्यापार—दूसरेकी वृद्धि या सन्मान देख कुढ़नेके व्यापारवाला होना स्त्रीवेदके आश्रवका कारण है।

(४) अलीकाभिधायिता—स्त्रीवेद का आश्रय प्रायः झूंठ बोलनेकी आदतसे होता है।

(५) अतिसंधानपरता—गूढ़ या छुपी हुई बातोंकी अकारण ही, खोजबीन में लगे रहनेके स्वभावसे स्त्रीवेदका आश्रव होता है।

(६) प्रवृद्धराग—ऐन्द्रियिक विषयों, वासनाओं आदि के प्रति विशेष अनुराग रखनेका स्वभाव स्त्रीवेदके आश्रव में निमित्त हुआ करता है।

(७) परांगनागमन—दूसरी स्त्रियोंके पास जानेका स्वभाव होना स्त्रीवेदके कारणोंमें से एक है।

(८) परांगनादर—दूसरी स्त्रियोंके प्रति जरूरतसे ज्यादा आदर भाव व्यक्त करना स्त्रीवेदका कारण है।

(९) वामलोचनाभाव-बांकी या तिरछी चितवनसे देखने वालीको आदत स्त्रीवेदके आश्रवको कारण है।

(१०) अभिष्वंगता—विषयोंमें बहुत ज्यादा आसक्ति का होना स्त्रीवेद का कारण है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सूत्र–स्तोकक्रोधजैह्मनिवृत्यनुत्सिक्तत्वालोभत्वांगनासमवायाल्परागत्वस्वदारसंतोषेर्ष्याविशेषोपरमस्नान गंधमाल्याभरणानादरजातीय। पुंवेदस्य ।६७।

अर्थ–पुरुषवेदनामक जो नोकषाय, उसके आश्रवके कारण हैं। नाम उनके ये हैं:–

(१) स्तोकक्रोध (२) जैह्मनिवृत्ति (३) अनुत्सिक्तता (४) अलोभत्व (५) अंगनासमवाय (६) अल्परागत्व (७) स्वदारसंतोष (८) ईर्ष्याविशेषोपरम (९) स्नानादर जाति (१०) माल्याभरणानादर।

(१) स्तोकक्रोध–थोड़े पूने, यदाकदा गुस्सेका आने स्वभाव पुरुषवेदके आश्रवका कारण है।

(२) जैह्मनिवृत्ति–जिह्मका अर्थ छल कपट है। पुरुष वेदके आश्रवकेलिये छलकपटसे रहित स्वभाव कारण होता है।

(३) अनुत्सिक्तता–ऐन्द्रियिक विषयोंमें आसक्तिका कम होना पुरुषवेदके आश्रवमें निमित्त होता है।

(४) अलोभता–पुरुषवेदके आश्रवके लिये अलोभ (लोभ रहित) वृत्ति निमित्त हुआ करती है।

(५) अंगनासमवाय–सुन्दर रूप एवं अंगवाली स्त्रियों के साथ सम्बन्ध होना।

(६) अल्परागत्व–विषय वासनाओं के प्रति अनुराग

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

कम होना पुरुषवेदके आश्रवमें निमित्त होता है।

(७) स्वदार सन्तोष—अपनी स्त्रीसे ही सन्तोष करते हुए कामके वशीभूत न होना, पुरुषवेदके आश्रवका निमित्त है।

(८) ईर्ष्याविशेषोपरम—लम्बे समय तक टिके रहने वाले ईर्ष्या भावोंका उपरम (दूर) होजाना।

(९) स्नानगंधानादर—स्नान तेल फुलेल आदिसे विशेष अनुराग न रखते हुए उनके प्रति अनादर भाव रखना।

सूत्र— प्रचुरक्रोधमनमायालोभपरिणामगुह्येन्द्रियव्यय-रोपणानंगव्यसनित्वशीलव्रतगुणधारिप्रव्रज्याश्रितप्रथमपरांग-नावस्कन्दनरागतीव्रानाचारजातीयानपुंसकवेदनोकषायस्या-श्रवहेतवः।६८।

अर्थ—(१) प्रचुर क्रोधपरिणाम (२) प्रचुर मानपरिणाम (३) प्रचुर मायापरिणाम (४) प्रचुर लोभपरिणाम (५) गुह्येन्द्रिय व्यपरोपण (६) अनंगव्यसनित्व (७) शील-व्रत गुणधारि प्रवज्याश्रितप्रमथत्व (८) परांगनावस्कन्दन (९) परांगना राग (१०) तीव्र-अनाचार, ये दस नपुंसक वेदके आश्रवके कारण हैं। उपरिलिखत दसके अलग अलग स्वरूप इस प्रकार हैं:—

(१) प्रचुर क्रोधपरिणाम—साधारणसे निमित्त मिलने पर बहुत ज्यादा मात्रामें गुस्सेके परिणाम होना, नपुंसक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

वेदके आश्रवके लिये कारण है।

(२) प्रचुर मान-परिणाम—बहुत ज्यादा अभिमान परिणामवाले होते, सीधे तरहसे बात ही न करनेसे प्रचुर मान परिणामता की पुष्टि होती है जिससे कि नपुंसकवेद का आश्रव होता है।

(३) प्रचुर माया परिणाम—मन वचन कायकी सरलता न रखते हुए कुटिल परिणाम वाले होना।

(४) प्रचुर लोभपरिणाम—लालचके परिणाम बहुत तीव्र मात्रामें होना नपुंसकवेदके आश्रवका कारण है।

(५) गुह्येन्द्रिय व्यपरोपण—पशुओंकी काम सेवन की साधनभूत इन्द्रियोंको आघातसे विकृत करना नपुंसक वेदके लिये कारण होता है।

(६) अनंगव्यसनित्व-काम सेवनके लिये जिन अंगों का प्रयोग नहीं किया जाता उनसे भी कामक्रीड़ा करना नपुंसकवेदके आश्रव का निमित्त है।

(७) शीलव्रतगुणधारि प्रव्रज्याश्रितप्रमथता-सातशील के धारक व्रतीश्रावकों एवं जिन दीक्षासे दीक्षित मुनियों को उनके व्रताराधनमें तंग करनेसे नपुंसकवेदको आश्रव होता है।

(८) पराङ्गनावस्कन्दन—दूसरों की स्त्रियोंके साथ आलिङ्गनादि क्रियायें करना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

(९) पराङ्गना राग—परस्त्रियोंके प्रति कुदृष्टि रखते हुए अनुराग परिणाम रखना।

(१०) तीव्रानाचार—समाज-धर्म-देश आदिके बंधनों को तोड़ते हुए बहुत ज्यादा उच्छृङ्खलताके साथ क्रियाओं का करना नपुंसकवेद नामक नोकषायके आश्रवका कारण होता है।

सूत्र—संज्वलनलोभःसत्यासत्योभयानुभयमनोयोग-सत्यासत्योभयानुभयवचनयोगौदारिककाययोगाः शूक्ष्म-साम्परायआश्रवाः ।६९।

अर्थ—शूक्ष्म साम्पराय नामके दशवें गुणस्थानमें दस प्रकृतियोंका आश्रव होता है। उन प्रकृतियोंके अलग अलग नाम ये हैं:—

(१) संज्वलन लोभ (२) सत्य मनोयोग (३) असत्य मनोयोग (४) उभय मनोयोग (५) अनुभय मनोयोग (६) सत्यवचन योग (७) असत्यवचन योग (८) उभय-वचन योग (९) अनुभयवचन योग (१०) औदारिक कामयोग।

सूत्र–ॐणमोलोएसव्वसाहूणंइतिदशाक्षरमंत्रवर्णाः ।७९।

अर्थ—दस अक्षर वाले मंत्र के दस वर्ण अलग अलग इस प्रकार हैं:—

ॐ ण मो लो ए स व्व सा हू णं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सूत्र—अनागतातिक्रान्तकोटीयुताखण्डितसाकारनिराकारपरिमाणेतरद्वर्तनीयातसहेतुका उपवासाः ।७१।

अर्थ-[१] अनागत उपवास [२] अतिक्रान्तोपवास [३] कोटीयुतोपवास [४] अखण्डितोपवास [५] साकारोपवास [६] निराकारोपवास [७] परिमाणोपवास [८] इतरत् (अपरिमाण) उपवास [९] वर्तनीयातोपवास [१०] सहेतुकोपवास। ये दश नाम उपवासके प्रकारोंके हैं। उपवास का सामान्यका लक्षण लिख प्रत्येकका पृथक लक्षण लिखा जाता है।

उपवास से प्रयोजन चार प्रकारके आहारका परित्याग कर रागद्वेषादि रहित आत्मस्वरूप में निवास करनेसे है। इसके लिये आवश्यक है कि इन्द्रियों की प्रवृत्ति को उन उनके विषयोंसे हटाकर स्व जो आत्मा है उसका ध्यान करे।

(१) अनागत-उपवास-जिसके करनेका समय आया न हो, आनेवाला हो उसको (उपवासको) पहलेही कर लेना सो अनागतोपवास है।

(२) अतिक्रान्त-उपवास--जिसके करनेका समय व्यतीत हो चुका हो ऐसे उपवास को अगली तिथि पर कर लेना।

(३) कोटीयुतोपवास-यदि स्वाध्याय की वेलाके

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

व्यतीत होजाने पर सामर्थ्य रही तो उपवास करूंगा ऐसा शर्त सहित उपवास करना।

[४] अखण्डितोपवास—ऐसा उपवास जिसका पाक्षिक क्रियाओंमें करना आवश्यक ही हो, अखंडितोपवास कहलाता है।

[५] साकारोपवास—अमुक नक्षत्रमें सर्वतोभद्र, कनकावली आदि उपवास करना साकारोपवास है।

[६] निराकारोपवास—किसी प्रकारके भेद आदिके बिना अपनी इच्छासे उपवास करना निराकारोपवास है।

[७] परिमाणोपवास—समयकी सीमाकर, छहदिन आठदिन आदि तक उपवास करूंगा परिमाणोपवास है।

[८] अपरिमाणोपवास—परिमाणको किये बगैर जब तक जीवन शेष है तब तकके लिये उपवास करना अपरिमाणोपवास है।

[९] वर्त्तनीयातोपवास—

[१०] सहेतुकोपवास—उपसर्ग आदिको निमित्त ले जब तक टल न जाय, जब तकके आहार छोड़ना, सहेतुकोपवास है।

सूत्र—ओं ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं इति संतनि श्री सौभाग्यविजयबुद्धिलाभनिमित्तोदशाक्षरर्द्धिमंत्रः।७२।

अर्थ—दश अक्षर वाला ऋद्धि मंत्र, जोकि संतान

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

प्रदायक श्री (लक्ष्मी) संवर्धक, सौभाग्य संरक्षक, विजय प्रदायक और बुद्धि लाभदायक है, यहाँ लिखा जा रहा है। मंत्रके अक्षर अलग अलग ये हैं:—

ॐ ह्री अ र्ह ण मो चा र णा णं।

सूत्र—काष्ठचित्रपोत्तलेप्यलयन शैलगृहभित्तिदंतभेंड-कर्माणि सद्भावस्थात्यकर्माणि ।७३।

सूत्र— अतिबालविद्याकुलावधिक्रियावर्णोत्तमत्वपात्रत्व धर्मसृष्टिरक्षाव्यवहारेशिताऽवध्यत्वादंडयत्वमान्यत्वप्रजान्त-रसम्बन्धाद्विजाधिकाराः ।७४।

अर्थ—द्विज (ब्राह्मण) वर्ण विशिष्ट व्यक्तिके दश अधिकार होते हैं। नाम उन अधिकारों के अलग अलग इस प्रकार हैं:—

(१) अति बालविद्याधिकार (२) कुलावधिक्रियाधि-कार (३) वर्णोत्तमत्वाधिकार (४) पात्रत्वाधिकार (५) धर्म सृष्टिरक्षा-अधिकार (६) व्यवहारेशिताधिकार (७) अव-ध्यत्वाधिकार (८) अदण्डयत्वाधिकार (९) मान्यत्वाधि-कार (१०) प्रजान्तरसम्बन्धाधिकार। इन भेदोंके विवेचन में उस युगकी एक हल्कीसी झलक मिलती है जिसमें वर्ण व्यवस्था पूरे विकासको प्राप्त कर रही थी और द्विजों ने राजनीतिमें भी अपना विशेष स्थान बना लिया था। धर्मके साथ ही साथ राजनीति में हस्तक्षेप करनेसे द्विजों

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

ने विधान एवं शासन में अपने लिये विशेष अधिकारोंको सुरक्षित करवा लिया था। अस्तु, कुछभी स्थिति रही हो, यहाँ तो अधिकारोंका संक्षेपमें खुलासा किया जारहा है:-

(१) अतिबालविद्याधिकार—ब्राह्मणोंको ही अधिकार है कि अति छोटी अवस्थासे ही विद्याध्ययनमें लग जावें।

(२) कुलावधिक्रियाधिकार—

(३) वर्णोत्तमत्वाधिकार-ब्राह्मणोंको उल्लिखित चार वर्णों [ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र] में उत्तम माना जाना।

(४) पात्रत्वाधिकार—ब्राह्मण लोगोंको दान प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त है।

(५) धर्मसृष्टिरक्षाधिकार—

(६) व्यवहारेशिताधिकार—लोक व्यवहारमें ब्राह्मण लोगोंकी ईशिता या प्रधानत्व सर्वमान्य थी। यह उनका अधिकार था।

(७) अवध्यत्वाधिकार—जितना चाहे बड़ा और क्रूर अपराध करने परभी ब्राह्मणको मृत्यु दण्ड नहीं दिया जना चाहिये। वह अवध्य कोटिमें गर्भित किया गया है।

(८) अदंड्यत्वाधिकार- अपराध करने परभी ब्राह्मण दण्ड देने योग्य नहीं माना जाता था।

(९) मान्यत्वाधिकार—किसी अपराध के सिलसिले में दिए गये बयानों आदिमें ब्राह्मणके वचनोंको मान्यता

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

दी जाती थी।

(१०) प्रजान्तरसम्बन्धाधिकार–ब्राह्मणको अधिकार प्राप्त था कि एक राज्यके प्रजापनेको छोड़कर दूसरे राज्य की प्रजापने (Citizenship) को प्राप्त करलें।

सूत्र—कर्माङ्गतेजोरागाशाहानिध्यानादिसंयमदुःखक्षमासुखासंगब्रह्मोद्योताबाह्यतपःफलानि ।७५।

अर्थ–बाह्य तपके फल या परिणाम दश हैं। उन दशके अलग अलग नाम इस प्रकार हैंः–

(१) कर्महानि नामक बाह्यतपफल (२) कर्मअंग हानि नामक बाह्यतपफल (३) तेजहानि नामक बाह्यतपफल (४) रागहानि नामक बाह्यतपफल (५) आशाहानि नामक बाह्यतपफल (६) ध्यान नामक बाह्यतपफल (७) संयम नामक बाह्यतपफल (८) दुःखक्षमा नामक बाह्यतपफल (९) सुखासंग नामक बाह्यतपफल (१०) ब्रह्मोद्योत नामक फल।

(१) कर्महानिनामक बाह्यतपफल–अनशनादि बाह्य तपोंके आचरणसे ज्ञानावरणादि कर्मों की हानि होती है।

(२) कर्माङ्गहानिनामक बाह्यतपफल-बाह्य तपोंको धारण करनेसे साधकके कर्माङ्ग जो हिंसादिक भाव हैं उनका क्षय (नाश) होता है।

(३) तेज या अंगतेज हानिामक बाह्यतपफल–शरीर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

से निर्ममत्व रखने वाले तपस्वीको बाह्यतपोंके अनुष्ठान करनेसे शरीरकी कान्ति हानि अथवा शरीरवर्ती कामोत्तेजक शुक्र धातुकी हानि होती है।

(४) रागहानिनामक बाह्यतपफल—इन तपोंके पालने से जीवमें पाये जाने वाले रागरूप परिणामोंकी हानि होती है।

(५) आशाहानिनामक बाह्यतपफल—तपस्वी जो बाह्य तपोंका अभ्यास करता है उसके इन्द्रियविषयोंकी व भोगोप-भोग साधनोंकी प्राप्ति विषयक अभिलाषा या आगामी कालमें प्राप्त होनेकी जो इच्छा है उसकी हानि होजाती है।

(६) ध्याननामक बाह्यतपफल—किसी एक ध्येय की ओर मनका टिककर रह जाना ध्यान है। इसकी भी प्राप्ति बाह्यतपोंके परिपालनसे होती है।

(७) संयमनामक बाह्यतपफल—तपसे तपा तपस्वी सहजमें ही संयम-इन्द्रिय और मनको वशमें करना की साधनामें सफल मनोरथ होता है।

(८) दुःखक्षमानामक बाह्यतपफल—तपस्वी तपके प्रभावसे तापत्रयोंके सहन करनेमें सफल होता है। कठिन से कठिन आधिव्याधियों को वह हंसते हंसते सहन कर लेता है।

(९) सुखासंगनामक बाह्यतपफल—तपस्वीकी सांसा-

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

रिक सुखोंसे आसक्ति हट जाती है।

(१०) ब्रह्मोद्योतनामक बाह्यतपफल—आत्मतेज या निर्मल ब्रह्मचर्यकी प्राप्ति बाह्यतपोंके पालनेसे होती है।

सूत्र—अर्थग्राहकाहंप्रत्ययदूषणार्थपरोक्तविकल्पाःग्रहीतोऽगृहीतो निर्व्यापारःसव्यापारो निराकारःसाकारो भिन्नकालःसमकालः सम्बद्धोऽसम्बद्धोवा ।७६।

अर्थ—अर्थको ग्रहण करने वाला 'अहंवेद्मि' इत्याकारक आत्मज्ञान होता है किन्तु दूसरे दार्शनिक नैयायिकादि इससे सहमत न होते हुए इस विषयमें विकल्प उठाते हैं और आत्मज्ञानको दूषितज्ञान सिद्ध करनेका प्रयत्न करते हैं। विकल्प जो नैयायिकने उठाये वे इस प्रकार हैं:—

अहं प्रत्यय जो है वह (१) गृहीत है (२) अगृहीत है (३) निर्व्यापार है (४) सव्यापार है (५) निराकार है (६) साकार है (७) भिन्नकालवर्ती है (८) समकालवर्ती है (९) सम्बद्ध है अथवा (१०) असम्बद्ध है।

(अपूर्ण)

इति तृतीय स्कन्ध समस्थानसूत्र समाप्तम्

Report any errors at vikasnd@gmail.com